जाटों के जौहर....

कृषक-श्रमिकों की वीर-गाथाएँ

—आचार्य गोपाल प्रसाद 'कौशिक'

प्रकाशक
ब्रज-प्रकाशन
गोवर्धन, (मथुरा)

मुद्रक—
भगवत् प्रिंटिंग प्रेस,
मथुरा।

मूल्य
तीन रुपया

समर्पण पत्र

रण बंका वीर सैनिकों को,
सादर अर्पित यह काव्य सार।

दल दुश्मन दल की भीरों को,
बढ़ चीर व्यूह प्राचीरों को।

उन शूर शहीदो वीरों को,
उन श्रमी तपी रणधीरों को।

उन सच्चे मानव हीरों को,
दिल दिल का मिलता है दुलार।

रण बंका वीर सैनिकों को,
सादर अर्पित यह काव्य सार॥

जो बैरी की ललकारों पर,
त्रसितों की करुण पुकारो पर।

गोला गोली बौछारों पर,
कस कमर समर संहारों पर।

सेनानी की हुँकारों पर,
अड़ लड़ने मरने को तयार।

रण बंका वीर सैनिको को,
सादर अर्पित यह काव्य सार॥

वैभव विलास सुख स्वार्थ छोड़,
प्रियजन परिजन का मोह छोड़।

गुरुजन का सच्चा प्यार छोड़,
प्रेयसी प्रेम व्यापार छोड़।

प्राक्कथन

वन्द्याः कोऽपि सुधास्यन्दास्कंदी स सुकवेर्गुणाः ।
ये नायातियशः कायस्थैर्यं स्वस्य परस्य च ॥

सुकवि का अमृत धार को भी मात करने वाला वह गुण वन्दनीय है जिससे अपना और दूसरों का भी यश रूपी शरीर स्थायी हो जाता है ।

कोऽन्यं कालमतिक्रान्तं नेतुं प्रत्यक्षताक्षमः ।
कवि प्रजापतिस्त्यक्त्वा रम्य निर्माणशालिनः ॥

मनोहर रचयिता कवि सृष्टाओं के सिवाय और कौन है जो बीते हुए समय को प्रत्यक्ष बना कर दिखा सकता है ।

न पश्येत्सर्वसंवेद्यानभावान्प्रतिभया यदि ।
तदन्यदद्दिव्य दृष्टित्वे किमिव ज्ञापकं कवेः ॥

यदि कवि सर्व साधारण के वेदनागत भावों को अपनी प्रतिभा से न देखे तो कैसे प्रमाणित हो कि कवि में सच्ची अन्तर्दृष्टि है ।

कथादैर्घ्यानुरोधेन वैचित्र्योऽप्य प्रपञ्चिते ।
तदत्रकिंचिदस्त्येववस्तुयत्प्रीतये सताम् ॥

कथा लम्बी होने के कारण विविध बातों का प्रपञ्च नहीं किया जा सकता तो भी इस कृति में सहृदयों को साहित्यिक दृष्टि से खिचाव तो लगेगा ही ।

पूजार्हः श्लाघ्यस एव गुणवान रागद्वेषवहिष्कृता ।
भूतार्थं कथने यस्य स्येषस्त्येव सरस्वती ॥

वही गुणवान कवि प्रशंसनीय है जिसकी वाणी (लिखित

रचना) उनके न्यायाधीश के समान राग-द्वेष रहित होकर तथ्यों को जैसा का तैसा ही प्रगट करती है।

महाकवि कल्हण के ऊपर लिखे शब्द कवि के कौशल और कर्त्तव्य पर प्रकाश डालते हैं, मेरा विषय काव्य नहीं चिकित्सा-विज्ञान है पर यशोपरणा के कारण वंदनीय कवियों के चरण-चिन्हों पर चलने का अभिलाषी अवश्य हूँ। इसलिए जैसी भी उल्टी-सीधी तुकबन्दी बनी है पाठकों के समक्ष उपस्थित है, आशा है पाठक गण इसमें जो कुछ ग्राह्य भाग है उसे ग्रहण करेंगे। और दोषों को क्षमा करेंगे।

वीर रस ही काव्य के सब रसों में श्रेष्ठ है इसी से जीवन में दृढ़ता, विचारों में स्थिरता तथा व्यवहार में सचाई निर्भीकता और निश्छलता आती है।

वीर वही है जिसमें कष्ट सहने की क्षमता हो, जो साहस करके मान प्रतिष्ठा के लिए देश, धर्म और पीड़ित दुर्बलों की रक्षा के लिए आगे आकर शस्त्र उठावे और युद्ध क्षेत्र में जाकर दृढ़ता से अड़कर लड़े तथा उत्साह से बलिदान करे, एवम् मन में दीनता, दुःख, पराजय का भाव न आवे।

वीरता का मुख्य क्षेत्र युद्ध स्थल अवश्य है किन्तु वही एक मात्र स्थान नहीं है, वीरता के स्थान विविध हैं, जीवन के सभी क्षेत्र वीरता चाहते हैं। वीरता के बिना जीवन में सफलता कहाँ? और वास्तविक सुख भी कहाँ? क्योंकि सुख तो स्वतन्त्रता से है और स्वतन्त्रता केवल वीरता से ही प्राप्त होती है और उसकी रक्षा भी वीरता से ही होती है।

वीरों के लिए सासारिक लाभ-लोभ तो क्या अपने प्राणों का भी मोह नहीं होता है, फिर भी पृथ्वी के सुखों का उपभोग वीर ही करते हैं। 'वीर भोग्या वसुन्धरा' अर्थात् पृथ्वी का सुखोपभोग वीर ही करते हैं।

'वीर साहाय्यनिर्विघ्ना सुखलभ्याहि सिद्धय:' अर्थात् वीरों की सहायता से ही सिद्धियों का सुखोपभोग बिना विघ्न-बाधाओं के होता है। 'शूरं कृतज्ञं दृढ़ सौहृदं च लक्ष्मी स्वयं याति निवासहेतो' अर्थात् शूरवीर दूसरों के किए उपकार का आभार मानने वाले और उसका बदला चुकाने वाले, दृढ़ (मजबूत) स्नेही व्यक्तियों के घर लक्ष्मी अपने आप आकर रहती है अर्थात् वे धनवान होते हैं।

ये लोकोक्तियां वीरता का महत्व बतलाती हैं, आज भी उतनी ही सत्य और व्यवहारिक हैं जितनी प्राचीन काल में थी।

हमारी जन्मभूमि भारत वीर प्रसविनी है, भारत माता के सुपुत्रों की वीरता संसार में प्रसिद्ध है। यूरूप के दोनों महा विश्व-युद्धों में भारतीय सेनाओं के युद्ध कौशल और साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई है एवम् वर्तमान चीन युद्ध में भी भारत वीरों ने अपने पुराने असामयिक शस्त्रों से ही प्रतिकूल परिस्थिति में लड़ते हुए भी बलिदान देकर शत्रुओं पर अपनी वीरता का सिक्का बैठा दिया है।

भारत भूमि का कोई भी भाग कभी भी वीरों से शून्य नहीं रहा किन्तु पिछले दिनों राजस्थान का वीरता के क्षेत्र में विशेष रूप से स्थान रहा है, उसके प्रत्येक अंचल में वीरता का प्रदर्शन हुआ है। उसकी पावन पृथ्वी के कण-कण में वीरता की छाप है। यहाँ के क्षत्रिय राजपूतों में वीरता स्वाभाविक रूप से रही है प्रत्येक व्यक्ति वीर रहा है, राजपूतों के सभी गोत्रों में राजा-महाराजा राणा-महाराणा, सामंत सैनिक सभी के वीरता-पूर्ण युद्धों के जौहर संसार के इतिहास मे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। भारतीय साहित्य राजपूत वीरों के साहस शौर्यपूर्ण

भीषण युद्धों और बलिदानों से भरा पड़ा है, जिसका अधिकांश भाग चारण कवियों ने प्रस्तुत किया है, इनकी वीरता पर हमको अभिमान है। किन्तु औरङ्गजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य के पतन और मराठों के अभ्युदय के दिनों में राजपूतों की वीरता विलासिता के कारण मन्द पड़ गई। और अंग्रेजों की शक्ति के उत्थान के समय तो और भी अधिक शिथिलता आ गई।

जब राजपूतों की वीरता प्रचण्ड रूप में थी तब जाट वीरों का नाम इस क्षेत्र में नहीं सुनाई देता था किन्तु मुगलों के पतन और अंग्रेजों के उत्थान के दिनों में जब राजपूतों का शौर्य शिथिल सा हो गया था तब जाट वीरों का साहस शौर्य और युद्ध कौशल बहुत बढ़ गया था।

भारतीय संस्कृति की प्रथा के अनुसार वर्ण व्यवस्था में चारों वर्णों के व्यक्तियों की महानता के अलग-अलग माप हैं यथा—ब्राह्मणों में वही बड़ा है जो विद्या, बुद्धि, त्याग, तपस्या में अधिक है, क्षत्रियों में वही बड़ा है जो साहस, शौर्य, युद्ध-कौशल और बलिदान देने में अधिक है, वैश्यों में वही बड़ा है जो धन, व्यापार, वैभव में अधिक है, शूद्रों में वही बड़ा है जो आयु में बड़ा है। इस माप से इतिहास के उस काल में जिसका वर्णन प्रस्तुत काव्य में हुआ है, जाट वीरों को अपने समय में महान बना दिया क्योंकि राजस्थान का कोई भी राजा दिल्ली पर चढ़ाई नहीं कर सका और न अंग्रेजों से लड़ाई लड़ सका। दिल्ली पर चढ़ाई करने का और अंग्रेजों से लड़ाई लड़ने का श्रेय केवल भरतपुर के नेतृत्व में जाट वीरों, किसानों, श्रमिकों को ही है। प्रस्तुत काव्य में इन ही दो युद्ध घटनाओं का वर्णन है। यद्यपि इसमें जाट वीरों के साथ गाँवों के अन्य किसान मजदूर और और सिपाही-पेशा लोग भी शामिल थे किन्तु अपनी विशाल

जन-संख्या के कारण और नेतृत्व करने के कारण ही इनका उल्लेख प्रमुख रूप में हुआ है। उक्ति प्रसिद्ध है 'सर्वेपदाः हस्ति पदा निमग्ना।'

इस काव्य का नाम "जाटों के जौहर" रखने का यह भी एक कारण है वैसे काव्य में शब्द सौंदर्य की दृष्टि से ज वर्ण की पुनरावृत्ति भी कवि को प्रिय है।

काव्य की मुख्य पृष्ठ-भूमि अँग्रेजों के साथ भरतपुर के किले पर जाट वीरों का युद्ध है जो राजस्थान के राजाओं से अँग्रेजों का एकमात्र युद्ध हुआ था जिसमें अँग्रेज सेनापतियों को बराबर पराजय का मुँह देखना पड़ा और भरतपुर, की भयङ्करता, अजेयता की चर्चा भारत में ही नहीं यूरुप तक में होने लग गई थी। इस युद्ध के कारण भरतपुर की प्रशंसा, जोधपुर के राजकवि कविराज बाँकीदास चारण ने (जिनको महाराजा जोधपुर ने सवा लाख रुपये का सिरोपाव देकर सम्मानित किया था एवम् राजस्थान के अन्य राजा-महाराजा भी जिनका आदर करते थे) राजस्थानी भाषा की कविता में जयपुर, उदयपुर, जोधपुर के राजाओं की भर्त्सना करते हुए की है। वह कविता अपने स्थान पर बहुत महत्वपूर्ण है जो जाट वीरों के साहस शूरता की महानता को प्रमाणित करती है यथा—

आयो अँगरेज मुलक रै ऊपर, आहंस लीधा खैंच उरा।
धणियां मरे न दीधी धरती, धणिया ऊभां गई धरा॥
फौजां देख न कीधी फौजां, दोयण किया न खलां-ढलां।
खवां खांच चूड़ै खावंद-रै उणहि-ज चूड़े गयी यला॥
छत्रपतियां लागी नहें छाणत, गढ़पतिया धर परी गुमी।
बल नहं कियौ बापड़ां बोतां, जीतां-जीतां गई जमी॥
दुय चत्र मास वादियो दिखणी, भौम गई सौ लिखत भवेस।
पूगौ नहीं चाकरी पकड़ी, दीधौ नहीं मडैठो दैस॥

वजियौ भलो भरतपुर-वालो, गाजै गजर धजर नभ-गोम ।
पैलां सिर साहब-रो पड़ियो, भड ऊभै नह दीधी भोम ॥
महि जातां, चीचांता महलां, आ दुय मरण-तणां अवसाण ।
राखो रे कोहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुस्सलमान ।
पुर जोधाण, उदैपुर, जैपुर, पहु थांरा खूटा परियाण ।
आंकै गयी आवसी आंकै, वांकै आसल किया वखाण ॥

अँग्रेज देश पर चढ़ कर आया । उसने (उसके) क्रमों को खींच लिया । पृथ्वी के स्वामियों ने मर कर पृथ्वी को नहीं दिया । पृथ्वी तो उनके खड़े-खड़े ही, उनके जीते-जी ही (अँग्रेज के अधिकार में) चली गई ।

अँग्रेज की फौजों को देख कर किसी ने फौजें नहीं भजायीं। शत्रुओं को टूक-टूक नहीं किया । विधवा भी पूर्वपति के चूड़े को फोड़ कर दूसरे के घर जाती हैं, पर यह पृथ्वी, पूर्व-पतियों के जो पूरे चूड़े पहने हुए थी, उन्हीं चूड़ों के साथ अँग्रेज के घर गई ।

राजाओं को इसका दुःख नहीं लगा । गढ़पतियों की पृथ्वी गुम हो गई । संख्या में बहुत होते हुए भी ये दीन-निस्सहाय बने रहे, जरा भी बल नहीं दिखलाया, उनके जीते-जीते ही धरती चली गई ।

मराठा दो-चार मास लड़ा तो सही परन्तु उसकी भूमि भी चली गई । पर यह तो भावी का लेख था । पर उसने दासता तो नहीं स्वीकार की और न अपने हाथों अपना मराठा देश अँग्रेजों को सौंपा ।

भरतपुर का राजा भी अच्छा लड़ा । तोपों की गर्जना हुई जिसकी धूम आकाश और पृथ्वी में छा गई । पहले अँग्रेज का सिर कट कर गिरा फिर उसका कटा । वीर ने खड़े-खड़े, जीते-जी, अपनी भूमि नहीं दी ।

भूमि जा रही हो या कोई स्त्री संकट में चिल्ला रही हो— मरने के लिये ये दो अवसर हैं। अरे, हिन्दू अथवा मुसलमान! कोई तो मर्द बनो और राजपूती (राजवंशों के गौरव) की रक्षा करो।

हे जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के स्वामियो! तुम्हारा वंश समाप्त हुआ। भाग्य के अङ्कों (लेख) से गई हुई यह भूमि अब भाग्य के अङ्कों से ही वापिस आवेगी (तुम्हारे बल पर नहीं) आसिया बांकीदास ने यह ठीक बात कही है।

प्रस्तुत काव्य में जिस वीर रस की कथा का वर्णन है उसका क्षेत्र राजस्थान का पूर्वी भाग है जिसका कुछ भाग ब्रज-मण्डल में सम्मिलित है। उस समय जब ये युद्ध हुए अधिकांश ब्रजमण्डल इन युद्धों में सम्मिलित था, इसका केन्द्र भरतपुर रहा जो अब राजनैतिक दृष्टि से राजस्थान मे है किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से ब्रजमण्डल में है। इस सम्बन्ध में लोकोक्ति प्रसिद्ध है—"डीग भरतपुर और कुम्हेर ब्रज बाँकी भू की राजधानी" इस क्षेत्र के वीरों का वर्णन ऐतिहासिक काल में सत्रहवीं शताब्दी से पहिले नहीं मिलता है। उन दिनों दशा अच्छी नहीं थी, जागीरी सुवि-धाओं के कारण क्षत्रिय वीर विलासिता मे फँस गये थे। तब किसानों मे एक क्रान्ति हुई और जाट वीरों के नेतृत्व में सैनिक संगठन बने, इसमें शासित प्रजा विशेषतः किसान और खेतों के मजदूर शामिल थे। किसान मजदूरों के ये सङ्गठन शासन सत्ता से टक्कर लेने लगे, प्रारम्भ में इन लोगों का नेता चुना जाता था बाद मे जाट वीरों के क्षत्रिय होने के कारण क्षत्रियो की कुल रीति के अनुसार ज्येष्ठ पुत्र ही उत्तराधिकारी के रूप में राज्याधिकार पाने लगे, इस पिछड़े हुए शासित वर्ग के वीरतापूर्ण कार्यों का

वर्णन साहित्यकारों ने विशेष रूप से आधुनिक साहित्यिकों ने बहुत ही कम किया है।

प्रस्तुत काव्य में इन ही के युद्ध का वर्णन है, इस काव्य के वीर सैनिकों में सभी जातियों के किसान मजदूर और गाँवों के कारीगर वर्ग के व्यक्ति शामिल थे जिनके हृदय में क्रान्ति का उदय हुआ उन्होंने हल छोड़ कर हथियार हाथ में ले केन्द्रीय शासन-दिल्ली की मुगल सत्ता से दृढ़ता पूर्वक लोहा लिया और उसकी सेना को बार-बार परास्त कर लूट लिया—एवम् राज्य-कर देना भी बन्द कर दिया, ये क्रान्तिकारी शूरमा जाट, गूजर, अहीर मैंना, ब्राह्मण, मेव, शिया मुसलमान आदि विविध जातियों में बँटे हुए थे किन्तु इनका नेतृत्व जाट जाति के वीरों के हाथ में ही था और संख्या की दृष्टि से भी यही जाट वीर सबकी सम्मिलित संख्या से भी बहुत अधिक थे। इनमें बहुत दिनों तक वंशानुगत शासक नहीं होता था, योग्य व्यक्ति ही नेता बनता था। किन्तु पीछे योग्यता की सूची में वंशानुगत उत्तराधिकार भी शामिल हो गया, पिता के पद पर पुत्र ही अधिकारी होने लगा अन्त में तो अयोग्य और अल्पवयस्क पुत्र भी राज्याधिकारी हुए तभी शासन प्रबन्ध भी बिगड़ने लगा।

इस वीर जाति के सम्बन्ध में इलियट नामक यूरोपीय विद्वान ने 'उत्तरी-पश्चिमी सूबों की जातियाँ' नामक अपनी पुस्तक में लिखा है—

'उत्तरी-पश्चिमी सूबे और पंजाब के पूर्वी जिलों में हिन्दू जाट, जाट होते हैं और इस शब्द का उच्चारण भी जाट ही किया जाता है, मध्य पंजाब में वे अधिकतर सिक्ख हैं और जाट कहे जाते हैं परन्तु इस शब्द का उच्चारण जट किया जाता है। यह केवल भाषायी अन्तर है। पंजाबी लोग हिन्दी 'आ' को छोटा करके बोलते हैं जैसे काम को कम्म।

In the North West Provinces and the Eastern Districts of the Punjab, the Hindu Jats are Jats, pronounced Jats, in the Central Punjab they are mostly Sikhs and are called Jats, pronounced Juts. This is a mere dialectic difference. Panjabi always shortens the long A of Hindi e g. Kam which becomes Kumm —Elliott, "Race of the North West Provinces of India."

इतिहास लिखने की प्रवृत्ति भारतवर्ष में बहुत कम रही है फिर पीछे के मुसलमानी समय मे लोग लिखने भी लगे तो भी उन इतिहास लेखकों में निष्पक्ष भाव नहीं रहा है। विजयी और सत्तारूढ़ वर्ग अपनी वीरता और बड़ाई का विवरण ही लिखवाते हैं तथा लेखक भी उनके आतंक से प्रभावित होकर या उनके कृपा-पात्र बनने के लिए ऐसा लिखते हैं और जातीय पक्षपात भी उसमें रहा है। इसलिए किसी ने ठीक ही कहा है इतिहास सदैव सत्य को ही प्रगट नहीं करता अस्तु महाकवि 'दिनकर' के शब्दों में कहना पड़ता है—

'समझे क्या इतिहास बिचारा, अन्धा चका-चौंध का मारा।
साक्षी है इसकी महिमा के सूर्य, चन्द्र, भूगोल-खगोल॥

यही व्यवहार जाट वीरों के साथ हुआ है। मुसलमान तथा अँगरेज लेखकों ने अपनों की बड़ाई ही अधिक की है, इन लोगों की बिल्कुल उपेक्षा की है, इनकी विजयों का भी उल्लेख नहीं किया है। इसलिए "जाटों के जौहर" इतिहास में कम ही मिलते है। फिर भी सत्य और वास्तविकता किसी न किसी रूप में प्रगट हो ही जाती है चाहे कोई उसे कितना ही छिपावे। अतएव जाट जाति की वीरता के प्रमाण प्रकारान्तर से प्रगट हो ही गये है। जाट जाति की वीरता के सम्बन्ध में प्राचीन ऐतिहासिक-

परिचय एक अँग्रेज लेखक मेजर बिंगले ने इस प्रकार प्रगट किया है कि—

We know little or nothing of the ancient history of the Jats. As early as the 7th century the Jats of Sind were ruled over by a Brahman dynasty, and by the 11th Century they spread into Punjab Province We first hear of them in the annals of the Muhammad historians who tell us that in 1024 the Jats of Sind cut up several detachments of Mahmud's army, as he was returning across the desert to Ghazani, after the sack of Somnath in Gujrat. To punish these outrages Mahmud commenced operations against them in 1026. The principal Jat settlements were then in the tract lying between the Indus and the Sutlej Finding that the Jat country was intersected by large rivers, Mahmud on reaching Mooltan, built a number of boats, each armed with six iron spikes projecting from their prows to prevent their being boarded by the Jats who were experts in this kind of warfare. In each boat he placed a party of archers, and men armed with naptha fire balls to burn the Jat fleet. The Jats sent their wives, children and effects to Sind Sagar and launched a flotills of well armed boats to meet the Ghaznians. A terrible conflict ensued but the projecting spikes sank the Jat boats while others were set on fire. Few excaped from this scene of terror and those who did, met with the more severe fate of captivity. Many doubtless did escape, and

it is possible that the Jat communities on whose overthrow Rajput State of Bikaner was afterwards founded, were mostly established by survivors of this disastrous campaign.

The growing power of the Jats was so crippled by this disaster, that we hear nothing more of them or their military exploits until 1658, when they reappear as valuable allies of Aurangzeb in the troubled times that followed the depostion of Shah Jahan.

अर्थात् हम जाटों के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में बहुत कम या नहीं ही जानते हैं, पहिले सातवीं शताब्दी में सिंध के जाट ब्राह्मण राज-कुल से शासित थे और ग्यारहवीं शताब्दी में पंजाब में फैल गये।

अर्थात् हम सबसे पहिले मुसलमान इतिहासकारों की पुस्तकों से ही जाटों के विषय में ज्ञान प्राप्त करते हैं जिन्होंने लिखा है कि सन १०२४ ई० में सिंध के जाटों ने महमूद की सेना की कई टुकड़ियां काट डालीं जब कि वह गुजरात में सोमनाथ की लूट के पश्चात् रेगिस्तान में होकर गजनी को लौट रहा था।

इन अत्याचारों की सजा देने को महमूद ने सन १०२६ ई० में उन पर हमले किये। जाटों की मुख्य आबादियाँ उस समय सिंध और सतलज नदी के बीच में थी। यह देखकर कि जाटों के प्रदेश में बड़ी-बड़ी नदियों का जाल पुरा हुआ था, महमूद ने मुलतान पहुँच कर बहुत सी नौकायें बनवाईं और उनके सामने के हिस्से में छः छः मेखें लगवाईं ताकि जाट जो इस प्रकार के युद्ध में कुशल थे, उन पर न चढ़ सकें, प्रत्येक नौका में उसने एक समूह वाण-धारियों का बैठाया और मिट्टी के तेल में डुबोये अग्नि बाण दिये जिससे वह जाटों के बेड़ों को जला दें। जाटों ने अपने

स्त्रियों-बच्चों और सामान को सिंध सागर भेज दिया और हथियारों से सुसज्जित नावों के बेड़े को गजनियों से मुकाबला करने के लिये नदी में छोड़ दिया। एक घमासान युद्ध हुआ परन्तु आगे निकली हुई मेखों ने जाटों की नावों को डुबो दिया और बची-खुची नौकायें जला दी गईं। इस भयानक हमले से बहुत कम बचे और जो बचे उन्हें बन्दी जीवन की कठोर यातनायें सहनी पड़ीं। कुछ निःसन्देह बच निकले और यह सम्भव है कि बीकानेर की राजपूत रियासत में जो कि जाट जाति के पतन पर बनी, इस सांघातिक हमले से बचे हुए लोग आबाद हो गये। जाटों की बढ़ती हुई शक्ति के पैर इस आपत्ति से ऐसे टूट गये कि हम फिर सन १६५८ तक जब कि वह शाहजहाँ के राजच्युत किए जाने पर औरङ्गजेब के अमूल्य सहायक के रूप में प्रगट होते हैं उनके या उनके सैनिक कार्यों के सम्बन्ध मे कुछ नहीं सुनते हैं।"

ऊपर लिखा विवरण का पिछला अंश जिसमें जाटों को औरङ्गजेब का सहायक बतलाया है, इस बात का प्रमाण है कि जाट वीर सदैव से एकतंत्री शासन सत्ता के विरोधी रहे हैं, शाहजहाँ के विरोध में औरङ्गजेब का सहायक होना उनकी इसी शासक विरोधी मनोवृत्ति का ही सूचक है क्योंकि बाद में वे औरङ्गजेब के भी कट्टर विरोधी बन गये और औरङ्गजेब से लड़ने वाले महाराज छत्रसाल और महाराज अजितसिंह जोधपुर की सहायता करते रहे। इसके प्रमाण में आगे उद्धरण दिये हैं।

मेजर बिंगले जो जाटों की दृढ़ता, युद्ध निपुणता, साहस और शक्ति से बहुत प्रभावित है, अँग्रेज सेना में जाट वीरों की भरती को महत्वपूर्ण समझता है। सेना में भर्ती करने वाले अँग्रेज रेक्रूटिंग अफसरों की जानकारी के लिए भारत सरकार की आज्ञा से एक पथ-प्रदर्शक के रूप में लिखी पुस्तक 'जाट्स, गूजर्स और

स्हीस' में जाटों के तीनों भेद हिंदू जाट, सिक्ख जाट और मुसलमान जाटों की एक रूपता के सम्बन्ध मे अपने विचार इस प्रकार प्रगट किए हैं।

The Sikh Jats of the Punjab have been truly described as the backbone of the Province by character and physique, as well as by locality. They are stalwart sturdy yeomen, of great independence, industry and agricultural skill, and collectively form perhaps the finest peasantry in India. It is probable that the great bulk of their ancestors came up the Sutlej valley into the Central Punjab, from the country bordering on the mouth of the Bolan; but many derive their origin from Bikaner, which was abandoned by their forefathers about 800 years ago, favour of the fertile plains of the Punjab and Malwa.

The Hindu Jats of Northern Rajputana and the Eastern Punjab are the same in every respect as those of the Western portion of the Gangetic Doab, they differ in little save religion from the great Sikh Jat tribes of the Malwa, though the latter inhabiting as they do the wide unirrigated plains of the Central States, are of slightly better physique than their neighbour of the damper riverine These eastern Jats are almost without exception Hindus, the few among them who are Musalmans being known as Mulla or 'Unfortunate,' and attributing their secession in most cases to the removal of an ancestor to Delhi, where he was forcibly converted and circumcised.

These first settlements of the Eastern Jats (who may be called true Jats as the adoption of the Sikh cult has practically converted their western brethern into a separate people, ethnically the same but politically and socially different,) were in Rajputana, where they had become strong and numerous by the time of the early Mohammadan invasions. From the earliest times they have been remarkable for their rejection of the monarchical principle and their strong partiality for self governing commonwealths One of the names by which they were known to the anecients was Arashtra or 'Kingless,' and the village community, an institution which from its organisation forms a typical example of the primitive agricultural commonwealth, has always been most flourishing in districts inhabited by Jats

After settling in Rajputana the Jats gradually spread northward from Bikaner into what was called Hariana, i e. Rohtak, Hissar, Gurgaons, and Jind, and eastward into Alwar, Bharatpur and Northern Gwalior, whence they worked their way gradually up the Jumna valley as for north as Saharanpur. The Jats of Hariana and the Chambal looked upon the Raja of Bharatpur as their natural leaders.

Hand Books for the Indian Army Jats Gujars, Ahirs.

पंजाब के सिख जाटों को उनके स्थान चरित्र और स्वास्थ्य के लिहाज से सूबे की रीढ़ की हड्डी ठीक ही कहा गया है। वह बहादुर मजबूत स्वतन्त्र परिश्रमी धैर्यवान कृषक होते हैं कदाचित्

भारतवर्ष के सबसे अच्छे किसान। यह सम्भव है कि उनके पूर्वजों से अधिकतर सतलज नदी की घाटी में होते हुए मध्य पंजाब में बोलन के दर्रे से आस-पास वाले देशों से आये हों परन्तु बहुत से बीकानेर से आये जिसको उनके पूर्वजों ने लगभग ८००- वर्ष पहिले पंजाब और मालवा के उपजाऊ मैदानों में रहने की इच्छा से त्याग दिया था।

उत्तरी राजपूताना और पूर्वी पंजाब के हिन्दू जाट हूबहू वैसे ही हैं जैसे कि गंगा के दोआब के पश्चिमी हिस्से के जाट, उनमें और मालवा की महान् सिख जाट जाति में धर्म के अति-रिक्त बहुत कम अन्तर है यद्यपि मालवीय जाट मध्य-प्रदेश के बिना सिंचाई वाले चौड़े मैदान में रहने के कारण नदियों वाले तर मैदान में रहने वाले अपने पड़ौसियों से कुछ अधिक स्वस्थ हैं। यह पूर्वीय जाट लगभग सभी हिन्दू हैं उनमें से कुछ थोड़े ही मुसलमान हो गये हैं, जो 'मुल्ला, या 'अभागे' कहलाते हैं। वह हिंदू जाति में बाहर होने का कारण अपने किसी पूर्वज का दिल्ली ले जाया जाना बतलाते हैं जहाँ कि वह जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया और उसकी सुन्नत करवा दी गई।

पूर्वी जाटों की यह पहली आबादियाँ राजपूताना में थी जहाँ कि वह शुरू के मुसलमानी हमले के समय तक शक्तिशाली और बहु-संख्यक हो गये थे। इन जाटों को ही असली जाट समझना चाहिये, क्योंकि सिख धर्म को अङ्गीकार कर लेने के कारण उनके पश्चिमी भाइयों की एक पृथक जाति बन गई जो एक देश के होते हुए भी राजनैतिकता और सामाजिकता में भिन्न थी। बहुत पुराने समय से ही उनको राज शासन प्रणाली के प्रति अरुचि और प्रजातंत्रवाद के प्रति पक्षपात प्रसिद्ध है। आदिवासी उन्हें जिन नामों से जानते थे उनमें एक अराष्ट्र था।

'राजहीन' भी था और उन जिलों में जहाँ जाट आबाद थे, गाँव पंचायत जो कि एक दकियानूसी काश्तकारी प्रजातंत्री संस्था का उदाहरण है बहुत फलीभूत होती थी।

राजस्थान में आबाद होने के बाद जाट बीकानेर के उत्तरीय प्रदेश जिसे हरियाना कहते हैं अर्थात् रोहतक, हिसार गुड़गाँव और जींद में तथा पूर्व की ओर अलवर, भरतपुर और उत्तरीय ग्वालियर मे फैल गये जहाँ से वह शनैः २ जमुना की घाटी मे होते हुए उत्तर मे सहारनपुर तक जा पहुँचे। हरियाना और चम्बल के जाट भरतपुर के राजा को अपना स्वाभाविक नेता समझते थे।

मुसलमान इतिहास लेखकों ने भी जो कुछ लिखा है उसमें भी जाट वीरों की शक्ति और सभी के प्रमाण यत्र-तत्र मिलते ही हैं यथा—'इब्नुखुद्दर्वि नामक' ऐतिहासिक ने अपनी पुस्तक 'अर्वी की तवारीख मुअज्जिमुत्तवारीख' में जो सन् ६१२ ई० में लिखी गई है जाट वीरों के सम्बन्ध में लिखा है-"मनसुरा किरपान पर जाटों का अधिकार है।"

तवारीख फरिश्ता में लिखा है—सन् १०२६ ई० मे जब महमूद गुजरात पर आक्रमण करने के बाद लौट रहा था, मार्ग में वीर जाटों ने उसे घेर लिया।

सन् १३६७ मे तैमूर ने दिल्ली पर आक्रमण किया तब भी जाटों ने अपना साहस दिखलाया। सन् १५२५ ई० मे मुगल साम्राज्य के स्थापक बाबर के पजाब आने पर भी जाटों ने सामना किया।

हिस्ट्री आफ औरङ्गजेब मे प्रोफेसर सरकार ने लिखा है कि अप्रेल सन १६६६ में गोकुला जाट के गाँव सुरहा पर हमला किया इस कारण गोकुला जाट ने सादाबाद पर हमला किया, परन्तु अब्दुलनवी के मारे जाने पर आलमगीर औरङ्गजेब स्वयं

आगरा आया और अलवंदी खाँ के लड़के हसनअली खाँ को फौजदार बनाया इस लड़ाई मे गोकुला तथा उसका साथी संखी पकड़ा गया।

गोकुला जाट के मरने के बाद भोजराज का पुत्र राजाराम हुआ उसने मई १६८६ ई० मे खानेजहाँ सफदर जङ्ग को हराया।

—लेट मुगल (अर्विन कृत) मसीरे आलमगीरी और मसीरुल उमरा नामक पुस्तक मे लिखा है-१८ अक्टूबर सन १७०५ में आगरा के तत्कालीन सूबेदार मुख्तारखां ने सिनसिनी पर हमला किया और दूसरा हमला दिसम्बर १७०७ मे हुआ जो रजा बहादुर ने किया था, इस युद्ध मे इतने मनुष्य मारे गये कि उनके एक हजार सिर और १० गाड़ी हथियार लादे गये थे परन्तु जीत चूरामन की ही होनी लिखी है।

आर्मीक्शन नामक पुस्तक जो सन १७१५ ई० मे 'जोन सर्मन' नामक यूरोपियन ऐतिहासिक ने लिखी है, उसमें लिखा है कि—"शाहजहाँ के समय में भी इन ही जाटों ने मुरशिद कुली खाँ फौजदार मथुरा को उनकी एक गढ़ी पर हमला करते हुए मार डाला था।"

यार मुहम्मद नामक लेखक ने 'दस्तरुलइश्त' मे लिखा है दो मास तक सड़क (आगरा-दिल्ली) बिल्कुल बन्द रही जिसमे हजारों यात्री रुक गये, इन सबमें प्रसिद्ध अमीनुद्दीन सभाली की स्त्री भी थी। इर्विन कृत लेटर मुगल से।

फादरवेंडल Fatherwarnal नामक यूरोपियन लेखक ने लिखा है—निकोसियर बादशाह ने अपने भाई अली जफर को राजा जयसिंह के देश मे जाने के लिए बहुतसा रुपया और फौज देकर चूरामन को अपना हितैषी समझ कर सकुशल निकल जाने देने के लिए कहला भेजा, परन्तु उसने (चूरामन ने) अलीजफर की सेना को लूट लिया और पचास हजार मोहरें भी लूट लीं।

—Sarkar's Transcription.

मेजर विंगले ने भी लिखा है—

It is noticeable that during this action, The Jats of Bharatpur under their famous leader Churaman attacked and plundered Muazzim's camp.

(Churaman and his Jats plunder the Emperor's camp during the battle of Jajau, 1707.

अर्थात् यह याद रखने योग्य है कि इस उपद्रव काल में भरतपुर के जाटों ने अपने प्रसिद्ध नेता चूरामन के नेतृत्व में मुअज्जिम के लश्कर पर हमला किया और उसे लूट लिया। चूरामन और उसके जाटों ने बादशाही शिविर को सन १७०७ में जाजऊ की लडाई मे लूटा।

महाराजा सूरजमल ने सफदरजङ्ग की सहायता मे सन १७५३-१७५४ के बीच में जो दबदबा दिल्ली में गर्म कर रखा था वह जाट गिरदी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सियारलमुक्तरीन भाग ३ व ४ में तथा—

Fall of Mugal Emperor By Pro. Yadunath Sarkar

Two Nawab of Awadh By A. L. Shrivastav.

तवारीख अहमदशाही आदि पुस्तकों मे उन दिनों के भरतपुर नरेशों के नेतृत्व मे हुए जाटों के प्रबल आक्रमण, उनकी विजय और उनके द्वारा की गई लूटों का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है।

भरतपुर में जाट वीरों के पुरोहित हरनारायण जी द्वारा मन्मगा-ग्रह में सुनाया गया दिल्ली पर आक्रमण का एक और प्रमाण भी उपस्थित है—"नगर में कोलाहल मच गया, ऊँची-ऊँची इमारतें गिरने लगीं, जाटों का लुटेरा दल नगर में घुस गया और वहाँ पर उसने भयङ्कर लूट-मार शुरू कर दी, नगर के

बाहर यसी बस्तियां भी इस लूट से नहीं बच सकीं, २६ दिन तक युद्ध लूट-मार तथा गोला-बारी का क्रम चलता रहा। बृहस्पतवार रविवार और सोमवार को दिल्ली नगर मे भारी लूट हुई। (जमादिलव्वल अव्वल ११७८ हिजरी के प्रथम २६ दिन)।

जाटों की स्वतन्त्रता सैनिक शक्ति युद्ध कुशलता और सफलता के सम्बन्ध में मेजर बिंगले ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ज टस. गूजरस एन्ड् अहीरस में लिखा है—

Like the Mahrattas and Sikhs the Jats owe their independence partly to the religious persecutions of the Mughals which drove them to revolt and partly to the internal dissensions of the latter days of the Empire which gave them a favourable opportunity of consolidating their powers and giving it a national character.

The name of the Cincinnatus of the Jats who abandoned his plough to lead his coun, trymen against their Mohamadan tyrant was Churaman Taking advantage of the weakness of the imperial authorities, the Jats of the Jumna valley seized the lands of which they had for centuries been the cultivators and as bands of robbers commenced a series of daring outrages in all the neighbouring States. The Mughal troops sent against them were utterly unable to repress their violence or check their rising power. In conjunction with the Mewatis of Rajputana they continued the same predatory course, and having thereby amassed considerable wealth and consolidated

their strength, they erected several fortresses, where, even in the infancy of their power, they evinced the same obstinate skill in defending mud-walls which in later times gained them such a war like renown.

अर्थात् मरहठा और सिक्खों की तरह जाटों की स्वतन्त्रता का कारण भी कुछ तो मुगलों का धार्मिक पक्षपात के कारण कष्ट पहुँचाना था जिसने उनको बगावत करने के लिए मजबूर कर दिया और कुछ मुगल साम्राज्य के अन्तिम दिनों के आपसी झगड़े थे जिसने जाटों को अपनी शक्ति संगठित करने और उनको एक जातीय रूप देने का बडा अच्छा अवसर दिया।

इस जाट सरदार का नाम जिसने अपने देश वासियों का मुसलमान जालिमों के विरुद्ध नेतृत्व किया, चूरामन था। शाही शासन की कमजोरियों का फायदा उठाते हुए जमुना की घाटी के जाट उन जमीनों के मालिक बन बैठे जिनको कि वह सदियों से काश्त करते थे, और डाकुओं के गिरोह बनाकर आस-पास की रियासतों में बडे साहसिक उपद्रव मचाने लगे। जो मुगल सेनायें उनके विरुद्ध भेजी गई वे उनके उपद्रवों को दबाने और उनकी बढ़ती हुई शक्ति को रोकने में नितान्त असमर्थ रही।

राजपूताने के मेवातियों से मिलकर जाटों ने वैसी ही लूट मार जारी रखी और उससे बहुत अधिक धन कमाकर और अपनी शक्ति संगठित करके उन्होंने कितने ही किले बना लिये, जिनकी कच्ची दीवारों की रक्षा करने में उन्होंने अपनी शक्ति शैशव काल में भी उसी दृढता और कुशलता का परिचय दिया जिसने आगे चलकर उनको युद्ध चतुरता में इतनी प्रसिद्धि दिलाई।

जाटों की स्वतन्त्रता का एक कारण और भी है जो कि मुख्य भी है वह उनकी स्वतन्त्रता प्रियता और प्रजातंत्रीय भावना

है जिसके कारण वे अराष्ट्र तक कहलाते रहे और सदा ही अवसर मिलने पर शासन सत्ता के प्रति विद्रोह करते रहे।

जाट जाति की अन्य दो शाखायें सिख जाट और मुसलमान जाट और हैं। पीछे लिखा जा चुका है कि सिख जाट और हिन्दू जाटों में कोई विशेष अन्तर नहीं है। और आज भी उनमें आपस में विवाह सम्बन्ध भी होते हैं क्योंकि सिखों और हिन्दुओं की दर्शन धारा समान है, ईश्वर परलोक आदि की सांस्कृतिक मान्यता एक सी है।

जाट सिक्खों ने भी वीरता के क्षेत्र में असाधारण सफलता पाई है, सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना हिंदुओं में से ही हिंदू संस्कृति की रक्षा के लिए ही की गई थी, सिक्खों के साहस शौर्य और युद्ध कौशल की जो प्रसिद्धि अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेज सेना में शामिल होकर यूरुप में युद्ध करने के कारण हुई थी, उसमें प्राय: सभी सैनिक जाट थे, अन्य जाति के सिक्खों की संख्या नाम मात्र की ही रही है। सिक्खों के जो राज्य स्थापित हुए उनके संस्थापक सभी जाट थे और उनके वंशधरों के हाथ में ही वहाँ की शासन सत्ता रही। पहिले इन छोटे-छोटे संगठनों को जिनके पास अपनी सेना व अपना राज्य था मिसल कहते थे, ऐसी १२ मिसलों में से ६ मिसलों के सस्थापक प्रमुख जाट ही थे और शेष ३ मिसलों के सस्थापक गैर जाट सरदार थे किन्तु सैनिकों की अधिकांश संख्या जाट वीरों की ही थी।

सिक्ख धर्म का प्रारम्भ खत्री जाति के गुरुओं द्वारा हुआ था किन्तु इसका वास्तविक विकास एवम् विस्तार जाट जाति के साहसी शूरवीर पुत्रों द्वारा ही हुआ। जाट सिक्खों ने भी अपने भाई हिंदू सिक्खों के साथ अपने सहयोग को बनाये रक्खा और जब आवश्यकता हुई वे आगे आए, म० सूरजमल की दिल्ली में

मृत्यु होने के बाद जवाहर सिंह ने दिल्ली पर आक्रमण किया [illegible] इसके बल से [illegible] पंजाब के [illegible] इस विषय में [illegible] भी लिखा है—

17 From the death of Badan Singh in 1775, Surajmal ruled as Maharaja in his own right till his death in 1763 and at this period was probably at the head of the most formidable force in India. His crowning and most brilliant achievment was the capture of Agra in 1761 which the Jats held till (1774) together with the sovereignty of the Agra and Mathura District most of the present Alwar District and parts of Gurgaon and Rohtak. Surajmal met his death in 1763 at the hands of a Squadron of the Imperial force while making a fool ardy attempt to hunt in the Imperial domain.

18 His son and successor, Jawahar Singh, possessed the valour without the capacity of his father In 1764 with the help of Sikhs from the Punjab, he plundered Delhi and added Jhajhar, Bahadargarh and Rewari with the considerable part of the present Gurgaon, Rohtak District to the Jat possessions During his short reign he lived chiefly in Agra Palace, where it was his whim to sit on the black marble throne of Jahangir, and here he was murdered at the instigation of the Raja of Jaipur in 1768.

अर्थात् सन १७७४ में बदनसिंह की मृत्यु के बाद से सूरजमल ने महाराजा बनकर अपनी मृत्यु तक जो सन १८६२ मे हुई राज्य किया और इस समय मे कदाचित भारत मे सबसे अधिक शक्तिशाली सेना का नेतृत्व किया। उसकी मुख्य और सबसे अधिक शानदार जीत १७६१ मे आगरा की विजय थी। (जो कि जाटों के कब्जे में सन १७७४ तक रहा) और उसके साथ आगरा, मथुरा जिलों, वर्तमान अलवर जिले और गुड़गॉव और रोहतक जिलों के कुछ हिस्सों पर उसका प्रभुत्व रहा। सूरजमल शाही सेना की एक टुकड़ी द्वारा सन १७६३ में शाही इलाके में शिकार खेलने के मूर्खतापूर्ण प्रयास मे मारा गया।

उसका पुत्र और उत्तराधिकारी जवाहरसिंह बहादुर तो था परन्तु अपने पिता की सी योग्यता नहीं रखता था। १७६४ मे पंजाब के सिक्खों की सहायता से उसने दिल्ली की लूट की और झझ्झर, बहादुरगढ़ और रेवाडी मय गुडगाव और रोहतक जिलों के एक बहुत बड़े हिस्से को जाटों के अधिकार में ले आया। अपने अल्प शासन काल में वह मुख्यत आगरा के किले में रहता था जहॉ कि उसको जहांगीर के मग मूसा के तख्त पर बैठने की धुन सवार थी। और यहॉ ही वह सन १७६८ मे जयपुर के राजा के इशारे से मार डाला गया।

ऊपर के उद्धरण से यह भी पता चलता है कि उन समय जाट वीरों की सेना कितनी शक्तिशाली और संगठित थी जिसकी टक्कर की सेना भारतवर्ष भर मे शायद ही दूसरी हो। इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान कालिका रजन कानूगो ने भी अपनी पुस्तक हिस्ट्री आफ जाटस मे स्पष्ट रूप से जाटों की शक्ति के सबध में बहुत कुछ लिखा है।

जाटों की तीसरी शाखा मुसलमान जाट यद्यपि अपनी

कट्टर धार्मिक भावना के कारण हिन्दू जाटों से दूर जरूर हो गये पर उनकी भावना भी विद्रोहात्मक ही रही और रहन-सहन भी वैसा ही साधारण रहा।

मेजर विंगले ने मुसलमान जाटों के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है—

In short the Muhammdan Jat of the Indus valley and the salt range is looked down upon by other Muslims as a member of an inferior race and the position he there occupies is very different from that which is held by his Sikh and Hindu brethren in the Central and Eastern Punjab, Northern and Eastern Rajputana and the Jamna-Ganges-Doab

अर्थात् संक्षेप में सिंध घाटी और नमक चट्टानों के इलाके के मुसलमान जाट देखने में अन्य मुसलमानों की अपेक्षा हीन वेश के दिखाई देते हैं एवम् सामाजिक स्थिति और पद में मध्य और पूर्वीय पंजाब, उत्तरी-पूर्वीय राजपूताना और जमना-गंगा के दोआब के अपने हिन्दू और जाट भाइयों की अपेक्षा बहुत अन्तर है।

और वे अपने दूसरे जाट भाइयों से सहयोग करते रहे इसका बहुत बड़ा प्रमाण पंजाब की, जहाँ जाटों की तीनों शाखाओं की बहुत बड़ी जन-संख्या है, यूनियष्ट पार्टी है जिसने मुसलमानों की साम्प्रदायिक पार्टी मुसलिम लीग को पिछले चुनावों में हरा दिया।

इस काव्य के चरितनायक जाट वीरों का मुसलमानों से धार्मिक विरोध नहीं था, उनके साथ में मेव, शिया तथा दूसरे मुसलमान भी थे जिन्होंने युद्धों में जाटों के साथ उसी उत्साह से भाग लिया था जैसा कि जाट वीरों ने लिया था।

भरतपुर नरेश भी उनकी धार्मिक भावना का आदर करते

थे। इसका प्रमाण भरतपुर शहर में राज्य द्वारा स्थापित मसजिद है जो बहुत विशाल है।

विश्नोई सम्प्रदाय में भी जाटों की एक बहुत बड़ी संख्या सम्मिलित है जो अब एक स्वतन्त्र जाति बन गई है। इन विश्नोई जाटों का भी सहयोग दिल्ली शासन के विरुद्ध युद्धों में रहा है, इनने भी अपना नेता भरतपुर के जाट वीरों को ही माना है।

जाट जाति की एक बहुत बड़ी विशेषता यह भी है जिसके लिए स्वामी दयानन्द और महात्मा गान्धी जैसे महापुरुष उपदेश और प्रचार करते रहे पर समाज के अन्य वर्ग उनको ग्रहण न कर सके किन्तु जाट जाति में ये गुण स्वाभाविक रूप से ही है यथा—विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, छूत-छात की कमी, हरिजनोद्धार सादा जीवन और अपनी संस्कृति से प्रेम, इस जाति में शासक जाति का अंधानुकरण नकल करने की आदत नहीं है, अस्तु इनकी रीति-रिवाज, आचार-विचार में इनकी अपनी मौलिकता उपस्थित है।

शासन सत्ता के प्रति जाटों की विद्रोह भावना उनकी युद्ध-कुशलता, शक्ति और साहस को राष्ट्रीय विचारधारा के इतिहास लेखक श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने किस प्रकार अनुभव किया है उसके सम्बन्ध में उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'भारतीय इतिहास का उन्मीलन' से कतिपय उद्धरण प्रस्तुत करते हैं यथा—

औरङ्गजेब के हुक्म से मथुरा में मन्दिर तोड़े गये तो गोकुला जाट के नेतृत्व में वहाँ के किसान बिगड़ उठे (१६६६ ई०) मथुरा का फौजदार उनसे लड़ता हुआ मारा गया, दोआब और आगरा तक बलवा फैल गया जिसे दबाने के लिए बादशाह को स्वयं जाना पड़ा अंत में तोपों के मुकाबले में जाट हारे, गोकुला कैद हुआ और मारा गया। पृष्ठ ५१४

ब्रजभूमि में भरतपुर के पास सिनसिनी और सोगर गाँव के मुखिया राजाराम और राम चेहरा ने जाट किसानों की सेना संगठित की और गढ़ियां बनाकर सिर उठया (१६८५ ई०) आगरे का सूबेदार उन्हें न दबा सका तब औरङ्गजेब ने दक्खिन के सूबेदार बहादुर खाँ को जिसे अब खानेजहाँ का पद भी मिल चुका था, उनके दबाने के लिए भेजा, आगरे में खानेजहाँ के रहते हुए राजाराम ने सिकंदरे पर (आगरा के बिल्कुल समीप लगभग ३ मील दूर) चढ़ाई की और अकबर के मकबरे से सारा कीमती माल लूट लिया (१६८८ ई०)। पृष्ठ ५२७

ब्रज के इस नए बलवे को दबाने के लिए शाह आलम आगरे का सूबेदार बनाया गया (१६६५ ई०)।

चूड़ामन तब फिर जङ्गलों में भाग गया और नई गढ़ियां बनाता रहा, १७०४ ई० में उसने सिनसिनी फिर वापिस ले ली, पर १७०५ और १७०७ ई० में उस पर चढ़ाई की, शाही सेना ने हजारों जाटों का संहार किया। पृष्ठ ५२८

सामूगढ़ की लड़ाई में चूड़ामन जाट ने निष्पक्ष होकर दोनों तरफों को लूटा था। उसको दिल्ली से चम्बल तक के रास्तों की रक्षा का भार सौंपा गया (१७१३ ई०)।

उसने प्रदेश पर पूरा अधिकार जमाना और अपना इलाका बढ़ाना शुरु किया। बादशाह को कर देना भी छोड़ दिया उसको दबाने के लिए सवाई जयसिंह को भेजा गया, पौने दो साल के घेरे के बाद गढ़ लिया जाने के पहिले ही अब्दुल्ला ने चूड़ामन से संधि करा दी। (१७१८ ई०) पृष्ठ ५१८

अजमेर की सूबेदारी अजीतसिंह के बजाय दूसरे व्यक्ति को दी गई, उस पर अजित ने विद्रोह किया और आगरे के सूबे-

दार को नहीं घुसने दिया। चूड़ामन जाट ने अजित और छत्रसाल दोनों को मदद भेजी। पृष्ठ ५४२

लौटते हुए नादिरशाह का कुछ माल-असबाव दिल्ली के पास ही जाटों ने लूट लिया। पृष्ठ ५५४

म० जवाहर सिंह ने जीत के बाद दिल्ली मे प्रवेश करने पर भी मल्हारराव होलकर की मुगल शासन से मिल जाने की नीति के कारण ही दिल्ली की शासन सत्ता पर अधिकार करने का विचार छोड़ दिया था।

पंजाब में सिक्ख जाटों ने तो अपने कई राज्य कपूरथला पटियाला, जींद नाभा आदि स्थापित कर ही लिये थे।

मध्यप्रदेश के गोहद में भी जाटों ने अपना राज्य स्थापित कर ही लिया था और राणा की उपाधि धारण करके शासन किया, जाट वीर राणा भीमसिंह ने १७६० ई० मे ग्वालियर आदि किले अपने अधिकार में कर लिए, वर्तमान धौलपुर इनकी राजधानी रही। ग्वालियर के दक्षिण में भी जाट वीरों ने मुगल सत्ता को टक्कर देकर अपना राज्य पिछोर के नाम से स्थापित कर लिया।

ठेनुआ गोत्रीय सरदार माखनसिंह ने वर्तमान अलीगढ़ के आस-पास कई किले बनाकर मुगल सत्ता से टक्कर ली और इनके वंशजों ने मुरसान, हाथरस के किले बनाकर मुगल सत्ता और अंग्रेजी सत्ता दोनों से मुकाबिला किया। म० जवाहरसिंह के साथ दिल्ली पर चढ़ाई में भी सहयोग दिया, हाथरस के शासक दयराम जी ने अंग्रेजों से भी युद्ध किया।

इस प्रकार इस वीर जाट जाति के यशस्वी पुत्रों ने समय-समय पर अपनी तेजस्विता का परिचय विद्रोह और भयङ्कर युद्ध करके दिया है, जिसका वर्णन करने से पुस्तक का कलेवर बढ़ता है और वह वर्णनीय विषय भी नहीं है।

प्रस्तुत काव्य का मुख्य आधार तो अँग्रेजों के साथ भरत-पुर पर हुआ युद्ध है उसी के प्रसग मे दिल्ली के दोनों युद्धों का वर्णन पुरोहित श्री हरनारायण जी ने सुना दिया है।

इस प्राक्कथन में जो ऐतिहासिक तथ्य प्रसंगवश उपस्थित किए हैं वे प्रस्तावना और दिल्ली के युद्धों के आधार को प्रमाणित करने के लिए हैं। वैसे काव्य में कवि कल्पना का उपयोग होता ही है।

काव्य कथानक इस प्रकार है—

यशवन्त राव होल्कर अँग्रेजी सेना से लडता हुआ सहा-यता के लिए फिरता था, राजस्थान के राजाओं से निराश होकर पजाब में म० रणजीत सिंह के पास लाहौर भी गया किन्तु निराशा ही मिली, तब भरतपुर से आश्रय चाहा, उस समय भरतपुर के शासक म० रनजीतसिंह महाराजा सूरजमल के सबसे छोटे पुत्र थे, उनकी वृद्धावस्था थी, जाट संसद अँग्रेजों के साथ की हुई सन्धि को तोड़ना नहीं चाहती थी इससे होलकर के अनु-रोध को मानने में झिझक रही थी तब राज पुरोहित श्री हरनारा-यण जी ने म० सूरजमल और म० जवाहरसिंह के दिल्ली आक्र-मण का वर्णन सुनाकर जाट वीरों को उद्बोधन किया और हुलकर को आश्रय दिलाकर अङ्गरेजी सेना से होने वाले भयङ्कर युद्ध को निमन्त्रण दिया।

अँग्रेज एतिहासिक शासक जाति के होने के कारण विजय अपनी ही बतलाते रहे हैं पर वास्तविकता इसके विपरीत है विजय भरतपुर के जाट वीरों की ही हुई है।

जिनने ४ महीने तक शहर में घिरे रहने पर भी खाद्य सामिग्री और सैनिक संख्या दिन प्रतिदिन कम होते जाने पर भ एचम बाहर से किसी भी प्रकार की खाद्य सामिग्री, समर सज्ज

या सैनिक सहायता न मिलने पर भी आत्म-समर्पण नहीं किया इतनी वीरता से युद्ध किया कि अँग्रेजी सेना का साहस ही टूट गया और नई-नई फौजे आने पर भी कुशल सेनानायकों को भी पराजय का मुँह देखना पड़ा। इतनी हानि उठानी पड़ी कि गवर्नर जनरल को भी स्पष्ट शब्दों में युद्ध बन्द करने को लिखना पड़ा। इस विषय में इतिहास लेखक श्री केशवकुमार ठाकुर ने अपनी पुस्तक 'भारत में अँग्रेजी राज्य के दो सौ वर्ष' के पृष्ठ २१० पर लिखा है—'मार्क्विस वेलेजली ने युद्ध बन्द करने के लिए पहिले भी लिखा था और उसके बाद जनरल लेक को उसने ६ मार्च सन १८०५ के एक पत्र में लिखा था—"मैं चाहता हूँ कि भरतपुर का यह युद्ध किसी भी तरह से बन्द कर दिया जाय। इस युद्ध को मामूली समझने में हमने भूल की थी।

उस समय भरतपुर के जाट वीरों की सेना की युद्ध-कुशलता और साहस की देश में बहुत धाक थी और लार्ड लेक को टक्कर देने के बाद तो इङ्गलैण्ड में भी ख्याति फैल गई, इस सम्बन्ध में डा० के० वी० एल० गुप्त M. A P. H. D. अध्यक्ष इतिहास और राजनैतिक विज्ञान एम० एस० जे० कालेज भरतपुर के अप्रकाशित थीसिस दी एवोल्यूशन आफ एडमिनिस्ट्रेशन आफ दी फोर्मर भरतपुर स्टेट १७२२-१९४७ के पृष्ठ १०७ से उद्धृत करते हैं।

1. "Rumours regarding the military strength of the Jats were exaggerated to such an extent that English soldiers and commanders were geered at with remarks such as "Oh, you may bully us, but go and take Bharatpur."

(From Mac Retchie David--the Gypsies of India, 'Page—133)

जाटों की सेना की दक्षता और विशालता की खबरें इतनी बढ़ा-चढ़ा कर फैलाई गईं थीं कि अंग्रेजी सेना और सेनापतियों का मजाक उड़ाया जाता था और उन पर ऐसे फिकरे कसे जाते थे, "तुम हमें डरा सकते हो परन्तु जब जानें कि भरतपुर जाकर उसे फतह करो।

सर थामस सैकशन ने किसानों में भी यही भाव पैदा होने का समर्थन किया-वह लिखता है "ज्यों ही कि मेरी सेना आगरा के निकट पहुँची, हमने गाँवों में से गुजरते हुए देहातियों का अपने भविष्य के विषय में यह भविष्यवाणी करते हुए सुना "भरतपुर जाओ परन्तु वहाँ से लौटोगे नहीं। एक झुर्रियां पड़ी हुई खूसट ने अपनी कोठरी में से निकल कर अपने मांस रहित हाथों को ऊपर उठाते हुए चिल्लाकर कहा, "भरतपुर जाओ वहाँ तुम्हारी बोटी-बोटी उड़ा दी जायगी और तुम सबको मार डाला जायगा।"

2. "Sir Thomas Section testified to the same feeling among the peasantry." As my regiment approached Agra," he writes "excorting the guns from Meerut. he heard as we passed through the various villages, the confident prediction muttered by the natives as to the fate that awaited us, "Ah, go to Bharatpur you won't come back, one old wrenkled bag rushing out of her room and raising her skinny arms in the air exclaimed, "go to Bharatpur, they will split you up. Go and be killed all of you."

(Section Colonel—From Gadet to Colonel, Vol—I, Chapter III)

The Evoiutlon of Administration of the former Bharatpur State, 1722—1947.

भरतपुर नरेश ने यशवंत राव हुलकर को दीग के किले में आश्रय दिया, अँग्रेजी फौज तो पीछा कर ही रही थी, जनरल लेक ने म० भरतपुर को पत्र लिखा, अपनी पुरानी संधि का उल्लेख करके यशवन्तराव हुलकर को अँग्रेजी सेना के हवाले कर देने के लिए लिखा, इसका उत्तर यही दिया गया कि हम अपनी शरण में आये को आपको नहीं सौंप सकते और उसकी रक्षा करेंगे, हमारे यहाँ से जाने के बाद तुम जानो और वह जाने, इतने बीच में ही लेक ने दीग के किले पर आक्रमण कर दिया। उस समय दीग में सैनिक थोड़े ही थे और सुरक्षा का पर्याप्त प्रबन्ध करने का समय भी नहीं मिला था, जनरल लेक का आक्रमण पूरे वेग से हुआ, जाट वीरों की संख्या कम थी पर वे बहुत वीरता से लड़े और अपना बलिदान देकर भी हुलकर को सुरक्षित अवस्था मे अँग्रेजी सेना के घेरे से बाहर निकाल कर अपने धर्म का पालन किया और दीग का किला खाली कर दिया, अंग्रेजी सेना ने दीग पर अधिकार कर लिया और तुरन्त ही भरतपुर पर आक्रमण कर दिया एवम् विशाल सेना के द्वारा शहर को चारों ओर से घेर लिया। अँग्रेजी सेना ने नगर में घुसने के तीन बार प्रयत्न किये पर तीनों बार भरतपुर के जाट वीरों ने मार-मार कर पीछे धकेल दिया। अँग्रेजी सेना की २० फर्वरी १८०५ की एक असफलता का पं० सुन्दरलाल जी ने अपनी प्रसिद्ध इतिहास पुस्तक 'भारत में अँग्रेजी राज्य' जिसे अँग्रेजी सरकार ने जब्त कर लिया था और फिर स्वतंत्र भारत की सरकार ने छपवाया था, मे इस प्रकार लिखा है—

लेकिन जिस रास्ते से कम्पनी की सेना ने भीतर घुसना

चाहा उसी रास्ते से भीतर की भारतीय सेना ने बाहर निकल कर कम्पनी की सेना पर हमला कर दिया, कम्पनी के अनेक अंग्रेज अफसर और असंख्य देशी-विदेशी सिपाही वहीं पर भारतीय गोलियों के शिकार हो गये, यहाँ तक कि भीतर की सेना ने अँगरेजों की सामने की खन्दकों पर भी कब्जा कर लिया। अँगरेजों की ओर सबसे आगे गोरी पलटने थीं, जनरल लेक ने इन लोगों को आज्ञा दी कि तुम आगे बढ़कर शत्रु को नगर के अन्दर धकेल दो, उनके अफसरों ने इनको खूब समझाया और हिम्मत दिलाई किन्तु इन गोरे सिपाहियों के दिल में इतना डर बैठ गया था और भरतपुर की सेना की ओर से गोलियों की बौछार इतनी भयङ्कर थी कि इन लोगों ने आगे बढ़ने से साफ इन्कार कर दिया। उस संकट के समय जनरल लेक ने हिन्दुस्तानी पैदलों की दो रेजिमेंटो को आगे बढ़ने का हुक्म दिया, वे लोग वीरता के साथ आगे बढ़े।

युद्ध द्वारा भरतपुर विजय असम्भव समझ कर कूटनीतिक उपाय अपनाये गये किन्तु देश-भक्त जाट वीरों ब्रजवासी योद्धाओं और भरतपुरी नागरिकों के मनों में भेद-भाव पैदा करने मे अँगरेज अधिकारी सफल नहीं हुए। इस विषय में कुछ प्रमाण गवर्नर जनरल और कमाडर इन चीफ के आपसी पत्र-व्यवहार में से उद्धृत करते हैं जिससे अँगरेजों की छल-कपट नीति पर भी प्रकाश पड़ता है।

"While the Commander-in-Chief is preparing for the siege of Bharatpur or *actually* engaged in it, might it not be *advisable to* endeavour to detach Ranjit Singh from Holkar? Although Bharatpur has not fallen .... Holkar would be hopeless if abandoned by Ranjit Singh"

जब कि प्रधान सेनापति भरतपुर के घेरे की तैयारियां कर रहा है या घेरा डाले हुए है, क्या यह उचित न होगा कि रणजीतसिंह को होल्कर से पृथक करने का प्रयत्न किया जाय ? यद्यपि भरतपुर में विजय नहीं हुई है तदापि होल्कर निराश हो जायेगा, यदि रणजीतसिंह उसका साथ छोड़ दे।

"Every endeavour is making and will be made to detach Ranjit Singh from Holkar... Holkar and his followers would have little hope if abandoned by Ranjit Singh"

Gen. Lake to Governor General.

होल्कर से जसवंतसिंह को पृथक करने का हर प्रयत्न किया जा रहा है और किया जायेगा। यदि रणजीतसिंह उसका साथ छोड़ दे तो होल्कर और उसके नेतृत्व मे चलने वालों को बहुत कम (जीत की) आशा रह जायेगी।

"A correspondence is now going on between me and Ranjit Singh, which I am in hopes will lead to an accommodation sufficiently favourable to the British Government and prevent any future union of interests between that Chief and Jaswant Rao Holkar."

मेरे और रणजीतसिंह के बीच जो पत्र-व्यवहार चल रहा है उससे मुझे बृटिश सरकार के हित में (मुआफिक) स्थिति हो जाने और, उक्त सरदार और जसवंत राव होल्कर क मेल मे रुकावट पड़ जाने की काफी आशा है।

भरतपुर के जाट वीरों ने अपनी जान पर खेल कर इतना भयङ्कर युद्ध किया कि अँग्रेजी सेना के पैर उखड़ गये और स्वयम् प्रधान सेनापति भी विजय की आशा छोड़ बैठा, प्रधान सेनापति ने स्वयम् जाटों के नेता भरतपुर नरेश महाराजा रणजीत

सिंह से बार-बार संधि की प्रार्थना की जिसको वे अस्वीकार करते रहे।

युद्ध की भयङ्करता में जाट वीरों के साहस दृढ़ता और युद्ध-कौशल का परिचय देने के लिए जनरल लेक और गवर्नर जनरल मार्किस वेलेजली के पत्र-व्यवहार का कुछ अंश उद्धृत करते हैं—

And the column after several attempts with heavy loss was obliged to retire ..General Lake to Marques Wellesley, dated 10th January, 1805.

और सेना को कई हमलों के बाद भारी हानि के साथ पीछे हटना पड़ा—जनरल लेक बनाम मारकुइस वैलेजली १० जनवरी १८०५।

I am sorry to add that the ditch was found so broad and deep that every attempt to pass it proved unsuccessful, and the party was obliged to return to trenches without effecting their objects

मुझे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि खाई इतनी चौड़ी और गहरी निकली कि उसके पार करने का हर प्रयत्न विफल हुआ और सेना को अपनी खाइयों में अपना लक्ष्य प्राप्त किये बिना ही लौटना पड़ा।

The troops behaved with their steadiness but I fear from the heavy fire they were unavoidably exposed to, for a considerable time, that our loss has been severe.

सेना ने बड़ी दृढ़ता दिखाई परन्तु इतनी जबरदस्त और इतने दीर्घकाल तक की गोला-बारी से, जिससे बचने की कोई सूरत न थी, मुझे भय है कि हमें भारी हानि उठानी पड़ी है।

अन्त में महाराज ने संधि प्रार्थना स्वीकार कर ली, इससे उनका छिना हुआ सब राज्य मिल गया एवं जाट सेना की वीरता और किले की अभेद्यता की प्रसिद्धी सारे भारत में हो गई।
अन्तिम अंश के एक छन्द—
"अब मिलना विजय असम्भव है, बोले झुक कर कारे अफसर।
ले चक्र सुदर्शन कृष्ण चन्द्र, मौजूद स्वयं गढ़ बुर्जों पर॥

इसका आधार अँग्रेज लेखक थार्नटन की निम्न पंक्ति हैं—

"In 1805 during the first siege; some of the native soldiers in the British Service declared that they distinctly saw the town defended by the divinity dressed yellow garments and armed with his peculliar weapons, the bow Maco Coch and pipe."

Thorntoa in his Gazetter of India.

अर्थात् भरतपुर के प्रथम घेरे के समय देशी सैनिकों ने जो ब्रिटिश सेना में थे कहा कि 'हमने देखा है कि शहर की रक्षा पीताम्बर-धारी, शंख-चक्र, धारी लिए श्री कृष्ण कर रहे हैं।

अन्त में दोनों दलों का सम्मेलन हुआ तब जनरल लेक से महाराजा को ज्ञात हुआ कि श्रीकृष्ण स्वयं गढ़ रक्षा को पधारे तो उनने भगवान के प्रति आभार प्रकट किया और 'गिरधर की जय, गिरधर की जय' कह जय जयकार किया तथा काव्य समाप्त हुआ।

उपसंहार रूप में यहाँ यह लिखना भी आवश्यक है कि जाट वीरों की स्वातंत्र्यप्रियता कभी मिटी नहीं। भारत की स्वतन्त्रता के लिए हुए प्रत्येक संघर्ष में जाट वीरों ने भाग लिया है। सन् १८५७ के विद्रोह में इसकी संख्या उनकी जाति के अनु-

रूप विशाल ही थी, असंख्य जाट वीर अंग्रेजों के साथ लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हुए और असख्य ही फांसी पर चढ़ शहीद हुए। गदर शान्त होने पर गाँव गाँव में पेड़ों पर फांसियां लटकाई गई उन पर झूलने वाले वीरों में बड़ी संख्या जाट किसानों की ही रही है।

दिल्ली के पास बल्लभगढ़ के राजा श्री नाहरसिंह ने भी सन् ५७ के विद्रोह में सक्रिय भाग लिया, विद्रोह के असफल होने पर वे पकड़े गये और हँसते हँसते फांसी पर चढ़ गये।

स्वाधीनता प्राप्ति के दूसरे सशस्त्र संघर्षों में बलिदान देने वाले जाट वीरों में स० भगतसिंह, ऊधमसिंह आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

इसी प्रकार कांग्रेस के आंदोलनों में भी जाट वीरों की विशाल संख्या ने सक्रिय भाग लिया है और ब्रिटिश सरकार के कारागारों को भर दिया है। एवं अनेक वीर शहीद भी हुए हैं। वृन्दावन, मथुरा में शहीद होने वाला वीर लक्ष्मण राजस्थान का एक जाट युवक ही था।

इस समय भी भारतीय सेना में जाट वीरों की विपुल संख्या है।

इस काव्य के लेखन प्रकाशन मे बहुत से ग्रन्थ और सहृदय सज्जनों से सहायता मिली है, उन सबका नामोल्लेख नहीं कर पाया, इसके लिए उनसे क्षमा चाहता हूँ और हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। मेरे प्रेस के पास न रहने से और नया काम होने से प्रूफ देखने मे भूलें रह गई हैं इसलिए शुद्धि-पत्र लगा दिया है, कृपया शुद्ध करके पढ़ें और कष्ट के लिए क्षमा करें।

विनयावनत—गोपाल प्रसाद 'कौशिक'

ग्रन्थकार—
आचार्य गोपाल प्रसाद 'कौशिक'

श्री गिरिराज महाराज की जय

मंगलाचरण

ीकृष्णचन्द्र की जो प्रतिमा,
ी गोवर्द्धन गिरिराज देव ।
कलियुग मे तीर्थ परम पावन,
ांछित फलदाता एकमेव ।।

प्रभु प्रकृत रूप नयनाभिराम,
द्वापर पूजित कर कृष्ण राम ।
उन प्रभु का कृपा पात्र 'कौशिक',
साष्टांग कोटि करता प्रणाम ।।

भवदीय कृपा के बल से ही,
भवदीय भक्त जन के गुनगन।
अति देश भक्ति मति से प्रेरित,
करता हू मैं किंचित् वर्णन ॥

सदियो से रहे उपेक्षित ये,
सीधे सच्चे भोले किसान।
इनके कर्मो, बलिदानो का,
कवि किया नही समुचित बखान ॥

मै भी तो इसी वर्ग का हूँ,
इससे ही प्रायश्चित करता।
उल्लेखनीय लिख प्रमुख कार्य,
कृत कृत्य स्वय को भी करता ॥

इस भारत की धरती महान्,
उस धरती का बेटा किसान।
हल छोड हाथ मे ली कृपान,
यह उस किसान का विजय गान ॥

प्रस्तावना

यह वर्णन उस अवसर का है,
चल काल चक्र की हलचल मे।
जब मुगल राज का प्रखर सूर्य,
होगया चलित अस्ताचल मे॥

उत्तर भारत मे बढा अधिक,
मुस्लिम शासन का अनाचार।
पर राजपूत नृप मांडलीक,
कर सके न समुचित प्रतीकार॥

बेकार बड़े बनने वाले,
नृप राजपूत अड सके नही ।
प्रतिशोध मुगल नृप से लेने,
बढकर चढकर लड़ सके नही ॥

हत भाग्य ! हिन्दुओ के हिय मे,
ऐसी बस गई गुलामी बू ।
जागीर खिलत मंसब मरतब,
बस चाह रही माफी की भू ॥

सदियो से दिल्ली बनी हुई,
भारत की भव्य राजधानी ।
आबादी चारो ओर बसी,
जाटो की बस्ती मस्तानी ॥

जितने श्रम जीवी कृषि जीवी,
अथवा ग्रामो के कर्मकार ।
सब के नेता थे जाट वीर,
सहज शूर सहृदय उदार ॥

हैं सभी जाट पक्के किसान,
गौ भैंस पालते पयवाली।
तन स्वस्थ व्यवस्थित मन रहते,
चहरे पर भी बल की लाली॥

शासन सत्ता के सुख भोगी,
थे मुसलमान या राजपूत।
थे सभी जाट तब कृषक मात्र,
भारत मा के सच्चे सपूत॥

रजपूतो नृपतो से शासित,
थी जाट जाति शोषित महान।
शिक्षा संस्कृति मे पिछड़ी थी,
श्रम रत सदैव रहती निदान॥

ये क्षत्रिय गण के अरुण तरुण,
थे छिपे बुझे शीतल कृशानु।
थे रहे उपेक्षित निश्चित ही,
हो दवा घनों मे यथा भानु॥

रण कौशल भुज बल भूल गए,
जैसे बल भूले हनूमान।
था सुप्त पडा इन जाटो का,
अरमान शान आत्माभिमान ॥

इतिहास पुराना है इनका,
है जाट श्रमिक पक्के किसान।
पर वर्ण शुद्ध क्षत्रिय ही है,
अवसर पर कर लेते कृपान ॥

अति पुरा काल में जाटो के,
जत्थे जा पहुँचे यूरुप तक।
भारत में भी गए राज्य बना,
रहते विहार गंगा तट तक।,

महमद गौरी ने छल बल से,
गढ दिल्ली को आधीन किया।
भारत में राज्य विदेशी को,
आ दिल्ली में आसीन किया ॥

इस जाट जाति के सुत सपूत,
सह सके न यह अपमान घोर।
बदला लेने बढ गए शीघ्र,
माते गौरी का मद मरोर ॥

गरबीले गौरी की सेना,
का जाटों ने संहार किया।
तलवार वार करके प्रहार,
धरती का भार उतार दिया ॥

संहार शान्ति का बारबार,
होता तब क्रान्ति उदय होती।
हो अशुभ नष्ट शुभ सहज प्रगट,
स्थिति तब परिवर्तित होती ॥

प्रतिक्रिया किसानों में प्रगटी,
जाटो मे जागा क्षात्र धर्म।
होगए शिथिल नृप राजपूत,
तब कृषक सँभाला युद्ध कर्म ॥

—सात—

उस प्रभू की लीला है अपार,
क्या अद्भुत दृश्य दिखाता है।
आलोकित दीपक से काजल,
कीचड़ से कमल उगाता है॥

अति छीन छिपी चिनगारी से,
जो आग प्रचड लगा देता।
वह शोषित श्रमिक जनो के मन,
क्या क्रान्ति भाव उमगा देता॥

शोषित लाञ्छित पददलित कृषक
के घर घर भड़की विकट क्रान्ति।
वज गए शख उठ गए युवक,
थी शेष न कुछ भी भीति भ्रान्ति॥

तव वीर प्रसविनी जाट जाति,
करवट लेकर ली अँगड़ाई।
प्रिय स्वतंत्रता देवी की छवि,
जन जन के मन में मुसकाई॥

होगए संगठित ग्राम ग्राम,
युवक प्रौढ उगते किशोर।
क्या श्रमिक कृषक क्या कर्मकार,
सव विकट वीर रस में विभोर॥

नेता उनके बन गए जाट,
असि धारण की हलधर किसान।
मुगलो से कर नित मार काट,
बल कर हरते धन मान प्रान॥

सहयोग ग्राम जनता का ले,
संगठित सैनिको की टोली।
हथियार किये तैयार सभी,
बदूक तोप गोला गोली॥

बन गए विरोधी विद्रोही,
शासक दल के रिपु शौर्यवान।
अवसर पाकर हमले करते,
क्षरा मे रण छिडता घमासान॥

लट्ठा से हट्टा कट्टा भट,
छट्टा पट्टा छरहरे वीर ।
छावनी छा रहे छट छट कर,
चौडी छाती लवे शरीर ॥

सैनिक सशस्त्र वन गए शीघ्र,
इस व्रज मडल के ग्वाल वाल ।
नीचे से पा नेतृत्व नया,
नव युवक होगए नौनिहाल ॥

वन टोली छापेमारो की,
दल मुगल मध्य करती हलचल ।
झट मारकाट कर लूट पाट,
चल शोभित करती घन जगल ॥

ये नहीं सताते जनता को,
लूटा करते शासन का धन ।
सहयोग सदा शोषित जन का,
हो सफल प्रबल हो जाता मन ॥

प्रतिरोध मुगल शासन का तब,
करते ये बाँके वीर प्रवल।
बढकर अडकर जमकर लडकर,
कर तहस नहस मुगलों का दल॥

अति सबल कभी रिपुदल विलोक,
छापा मारा करते चचल।
ये रूप अमगल मुगलो के,
छल बल हरते उनका सबल॥

निष्फल प्रयत्न शासन के सव,
पद धन लोभन,कौशल छलबल।
विप्लववादी रण रस राते,
नित होते जाते जाट सवल॥

फैली भारत भर में तुरंत,
ब्रज से उमगी यह क्रान्ति गग।
जाटों के जन जन तन मन मे,
रण रगमयी उमगी उमंग॥

आजादी बढी विचारो की,
है जाट जाति सख्या विशाल।
कुछ जाट हो गए मुसलमान,
पर तजी न अपनी प्रकृत चाल॥

सिख सम्प्रदाय हिन्दू मत मे,
इसलिए अधिक कुछ भेद नही।
कुछ गुरु प्रभाव हो गए सिक्ख,
पर जाटो से उच्छेद नही॥

विश्नोई भी कुछ पृथक पंथ,
शामिल है वहु संख्यक किसान।
वनगई कही पर पृथक जाति,
पर जाट वहां पर भी महान॥

हिन्दू मुस्लिम सिख विश्नोई,
पर भीतर वाहर जाट जाट।
क्या रीति नीति क्या रहन सहन,
सब मे है व्याप्त समान जाट॥

है ईश एक मारग अनेक,
इसलिए नही कुछ भेद भाव।
है सभी जाट असली किसान,
श्रमरत सैनिक सीधा स्वभाव ।।

मजहब मत के मतभेद मिटे,
विशनोई सिख क्या मुसलमान।
सब जाट बन गए विद्रोही,
हल छोड हाथ मे ली कृपान ।।

पजाब आगरा मेरठ तट,
मरुथल के वासी जाट ज्वान।
सब मे विप्लव विद्रोह उठा,
चमकी किसान की आन बान ।।

जगी जाटो के जम घट हो,
जत्थे बन जाते जोश पूर।
झट उमड घुमड घन से घमड,
बरसे दुश्मन पर सुभट शूर ।।

तलपत का तेज तेगधारी,
व्रज का वह पहिला विद्रोही।
कर डाला कत्ल किले पर चढ,
मथुरा का शासक निर्मोही॥

सिनसिनवारो का प्रथम शेर,
गोकुल रक्षक गोकुला वीर।
हो गया आगरे मे शहीद,
निजकटा कुल्हाडे से शरीर॥

खल प्रवल मुगल दल दलन दर्प,
सिनसिनवारो का अपर शूर।
श्री राजाराम जला अकवर,
निज नाम कर दिया दूर दूर॥

दव दिल्लीपति जागीर दई,
लड कर लूटा लाखो का धन।
गढ वना थून जाटौली मे,
ठाकुर चूरामन चूरामन॥

श्री वदनसिह वंशावतंस,
प्रशंसनीय प्रतिभा मतिगति ।
जागीर और राजा पद दे,
निज मित्र वनाये, जयपुर पति ॥

उनके जनमे बाईस पुत्र,
थे ज्येष्ठ श्रेष्ठ नृप सूरजमल ।
जिनके बल वैभव की उपमा,
के योग्य एक बस आखडल ॥

नृप सूरजमल के चार पुत्र,
थे ज्येष्ठ जवाहर नर नाहर ।
रणजीतसिंह सुत थे कनिष्ठ,
यश फैला उनका घर वाहर ॥

वर्णन है प्रस्तुत यत् किंचित्,
रण विकट शौर्य साहस संचय ।
सूरजमल, सिंह जवाहर नृप,
रणजीत सिंह गुणगण परिचय ॥

प्रणवीर पराक्रम के प्रतीक,
नस नस में बसा हुआ साहस।
ले नाम नायको का ही तो,
यह विवरण भरा वीर रण रस॥

अज्ञात, ज्ञात योद्धा असख्य,
इन युद्धो में बलिदान हुए।
रणजीत विजय सुख कुछ भोगे,
वास्तव मे सभी महान हुए॥

वे सभी स्वर्ग वासी हैं अब,
उन सब को अर्पित साधु वाद।
उनकी संतति भी नाम करे,
सन्मान सहित सब करें याद॥

बहु संख्यक नाम सदा पाते,
पर यश भागी सब ही समान।
क्या श्रमिक कृपक क्या कर्मकार,
बलिदान सभी के का बखान॥

है प्रमुख सभी में जाट जाति,
जो श्रम करती, वे है किसान।
गूजर अहीर मैना ब्राह्मण,
रणमख मे होमे सभी प्रान ॥

जय किया जवाहर दिल्ली रण,
थे सब प्रान्तो के साथ जाट।
थे मुसलमान भी मेव शिया,
सब ने दिखलाये युद्ध ठाट ॥

सब सदा लड़े सब समरो मे,
गोरो को दी सबने टक्कर।
उन सबके ही यश का वर्णन,
है कवि कृतार्थ अब प्रस्तुत कर ॥

भय मोह समर मे छोड़ दिया,
रिपुदल बल लड़ कर तोड़ दिया।
मुगलो को मीड़ मरोड़ दिया,
गोरो को भी झकझोड़ दिया ॥

शासन से कर विद्रोह प्रबल,
सत्ता उखाड दी जमी अचल।
शोषित श्रमिक जातियो का,
है सामूहिक यह यत्न सफल ॥

जो पीडित पड़े रहा करते,
पददलित लांच्छित अपमानित।
यह गीत जागरण उनका ही,
जनजन को करता अनुप्राणित ॥

जिन किसान श्रमिकों ने जम,
तिल तिल होमा जिवन नश्वर।
उन त्याग वीर नररत्नों का,
वन्दन हो भारत में घर घर ॥

उत्पादक बन करते पालन,
सैनिक बन रण रक्षण तत्पर।
है उभय क्षेत्र में अद्वितीय,
पढ़िये उन जाटो के जौहर ॥

लोहागढ—भरतपुर

पृष्ठ संख्या १९
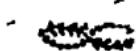
लोहागढ़ भरतपुर

अड कुटिल कुलिश सा प्रबल प्रखर,
अँगरेजो की छाती में गढ।
हर गढ से बढ चढ़ सुदृढ सुगढ,
यह अजय भरतपुर लोहा गढ़ ॥

यह दुर्ग भरतपुर अजय खड़ा,
भारत माँ का अभिमान लिए।
बलिवेदी पर बलिदान लिए,
शूरों की सच्ची शान लिए ॥

जाट सपूतों तपपूतों के,
गौरव मय गुण गण गान लिए।
चढ़ने बढ़ने लड मरने के,
बाँके तीखे अरमान लिए॥

यह गढ किसान की आन बान,
भट खान, मान इसका महान।
सन्मान सुरक्षा हित सदैव,
बलिदान शान से करें प्रान।

रण विजय हेतु इसने जाती,
परवानों की टोली देखी।
इसने कभी न बुझने वाली,
जग मग जौहर होली देखी॥

इसने अपने तन पर बरसी,
अरि की अविरल गोली देखी।
रुचि वीर भाल पर लगी हुई,
रिपु रक्त रँगी रोली देखी॥

—तीस—

यह दुर्ग राष्ट्र संयोजक है,
इसकी भी आन अदांकी है।
रजवाड़ों का रखवाला है,
मस्तानी इसकी झांकी है॥

उसके रज कण में रमी हुई,
वास्तविक वीरता बाँकी है।
जिसकी कीमत तलवारों के तन,
तुला तोल कर आँकी है॥

इसकी ईंटों पर लिखी हुई,
वैभव की अकथ कहानी है।
इसके बुर्जों पर बनी हुई,
युद्धों की अमिट निशानी है॥

इसकी खाई में भरा हुआ,
उन तलवारों का पानी है।
रन जिनकी धाक देश भर के,
सुभटों ने हट कर मानी है॥

इसकी खाई में खड्ग लिए,
खुल खेल भवानी नाची है।
इसके बुर्जों पर बैठ मृत्यु,
हठ मृत्युपत्रिका बाँची है॥

वीरत्व कसौटी बाँकी यह,
बहु बार वीरता जाँची है।
सिर मार हार लाचार फिरे,
रिपु कई बार यह साँची है॥

हमने इसी दुर्ग के बल पर,
दृढ़ प्रतिद्वंदी ललकारा है,
इसी दुर्ग के कारण जग में,
अति ऊँचा शीस हमारा है॥

है गढ़ नाक हिन्दुओं की है,
गौ ब्राह्मण का रखवारा है।
छल बल कुशल सैन्य नायक भी,
इस पर चढ़ कर रण हारा है॥

यह जाट जाति का पूजनीय,
सब सादर शीस झुकाते है।
धर मस्तक पर इसके रजकण,
निज जीवन सफल बनाते है।

अड बगी जंगी जोशीले,
मिल गीत विजय के गाते है।
कस कमर समर के साज सजा,
भट जाट वीर मदमाते है॥

यह लोहागढ नव युवको की,
पद पूजा का अधिकारी है।
इसीं दुर्ग ने हिंदू हित की,
बिगड़ी भी बात सँभारी है॥

इसी दुर्ग के लिए समर्पित,
सेवा भी सदा हमारी है।
उन देश भक्त दीवानों की,
टोली इस पर बलिहारी है॥

यह दुर्ग मान मर्यादा गढ़,
इसकी महिमा है अटल बनी।
जो झुके न दिल्ली पति को भी,
थे नृपति यहाँ तलवार धनी॥

कर कर विपक्ष दल पक्षहीन,
रण विजय वाहिनी बनी अनी।
अवनी की शोभा सहस गुनी,
है सभी गढ़ों में मुकट मनी॥

है क्षात्रधर्म का पुण्य क्षेत्र,
वीरों का विपुल अखारा ये।
हिन्दू जनता का गौरव गिरि,
शरणागत हेतु सहारा ये॥

है सुभट सैनिकों का
रिपु दुष्ट जनों का कारा ये।
भरतखंड के भाग्य गगन का,
उज्वल अविचल ध्रुवतारा ये॥

इस गढ़ ने भारतवर्ष मध्य,
बढ़ चढ़ कर लड़कर काम किया।
कर मान भङ्ग अँगरेजों का,
यूरुप तक में भी नाम किया॥

लखि चित्र किले का रन बंका,
धक धक करती रिपु छाती थी।
रण इसी किले की धाक मान,
दिल्ली दिल में दहलाती थी॥

है यही दुर्ग भारत में सर,
हँस सहस कमल सा खिला हुआ।
सम भ्रमर पाँति के जाट जाति,
जन जीवन मधुरस पिला हुआ॥

लोहागढ का सन्मानित पद,
केवल इस गढ़ को मिला हुआ।
तारा गण जैसे अन्य किले,
सम चन्द्र भरतपुर किला हुआ॥

लग इसी दुर्ग की अग्नि लपट,
भट मुगल मोम से पिघल गये।
रिपु रक्त पात्र पा युद्ध ताप,
खुल पलक मात्र में ढ्वल गये॥

इस गढ के बांके बुर्जों पर,
पड़ अगणित गोले उछल गये।
भट इसी दुर्ग की छाया में,
रण राग फाग को [illegible]

डट इस गढ के परकोटे पर,
कट कट कर लडी लड़ाई है।
इसके वैभव बल विक्रम की,
दिश दिश में विदित बड़ाई है॥

इसके हित जाट जवानों ने,
छाती निज अकड अडाई है।
है कुलिश समान कठोर घोर,
इस पर अति कठिन चढ़ाई है॥

इस गढ़ की रक्षा के कारण,
लड़ लाश छावनी छाई थी।
हो सिमट संगठित जाट सुभट,
जय जौहर ज्योति जगाई थी॥

इस गढ़ को ही अँगरेज अनी,
रण विजय माला पहराई थी।
रण जीत नृपत रणजीत सिंह,
ने पाई विजय बधाई थी॥

इस गढ ने ही भारत भर में,
मृत्युञ्जय ज्योति बिखेरी थी।
भैरव स्वर भर भर जाटों की,
बजती भीषण रणभेरी थी॥

इस गढ़ की सैना शौर्य भरी,
जाकर के दिल्ली घेरी थी।
प्रलयंकर तोप भयङ्कर तब,
दिन में भी करी अँधेरी थी॥

इस गढ मे जोशीला मारु,
मर मिटने का रण राग बजा।
सिनसिनवारो सरदारो ने,
संगर का सच्चा साज सजा॥

रण रङ्ग चढ गया अङ्ग अङ्ग,
मन से भ्रम माया मोह भजा।
मुगलो को डाला मीड़ मसल,
चट चखा तेज तलवार मजा॥

बढ सूदन सुकवि इसी गढ मे,
वह विकट वीर रस काव्य पढ़ा।
झट फूंक कान मे विजय मंत्र,
बल शौर्य ओज उत्साह मढा॥

इस गढ मे चढ़ लड़ मरने का,
खुलकर खूनी उन्माद चढा।
सौ सौ सुभटों को काट जाट,
भट अभिट वेग से झपट बढा॥

लोहागढ़ भरतपुर
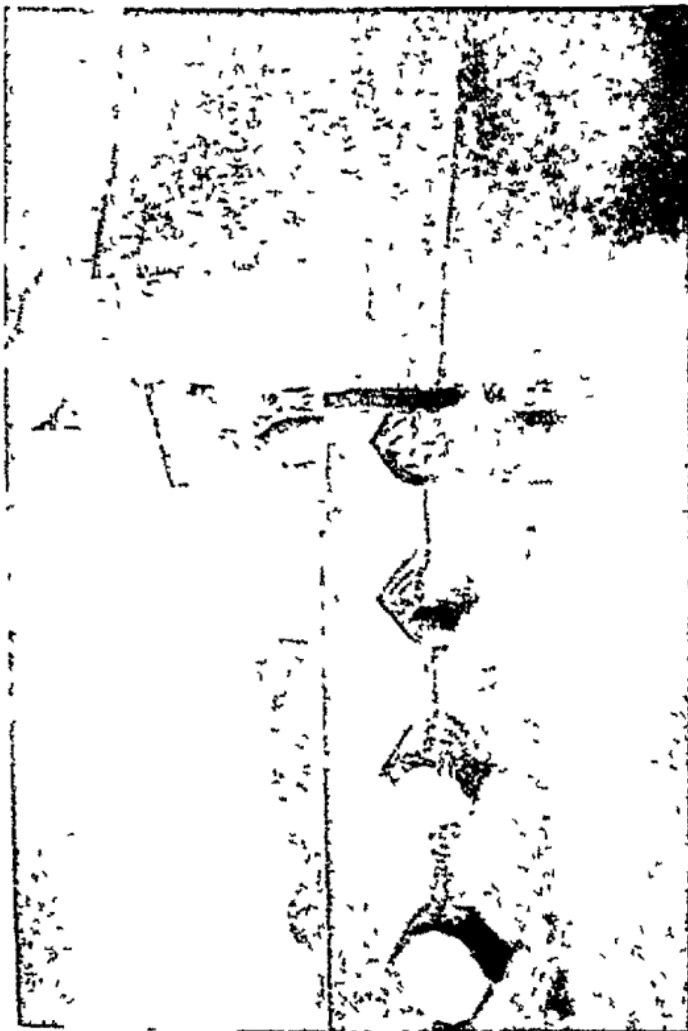
इस गढ़ के राज महल भीतर,
बस लहर वीर रस लहराई।
बजती रहती थी सदा यहां,
शुभ समर विजय की शहनाई ॥

इस गढ में विकट वीर रस की,
बरसी थीं रस मय बौछारे।
चट निकल म्यान से चमक उठी,
चम चम चपला सी तलवारे ॥

इस गढ के एक द्वार पर तो,
वे ही प्राचीन किवाड चढे।
हर गढ चित्तौड से दिल्ली पति,
दिल्ली दरवाजे लाय मढ़े ॥

लड कर लौटाना गत वैभव,
रण कुशल भरतपुर भूप बढ़े।
मेवाड़ी वीरों से बढ़ कर,
अड़ लड़े जाट भट लौह गढ़े ॥

दूजे दरवाजे वे किवाड़,
बलि दिया जहाँ पाखरिया भट।
निज रक्त माँस को चढ़ा चखा,
यश पाया हो शहीद उत्कट॥

इसी दुर्ग ने नव भारत का,
जय वैभव मय इतिहास लिखा।
इसी गुरु ने क्षात्र धर्म का,
शुचि मन्त्र देश को दिया सिखा॥

फूल फूल कर फूल देव गण,
इस गढ़ ऊपर बरसाते थे।
दहलाने वाले दुश्मन दिल,
दुंदुभि भी यहाँ बजाते थे॥

इसने चढ़ता तथा चमकता,
सूरजमल नृप सूरज देखा।
खल दुष्ट दर्प दलने वाला,
रण अतुल पराक्रम बल देखा॥

यह जाट राज्य निर्माण किया,
वह राजनीति कौशल देखा।
अति शौर्य धैर्य उत्साह ओज,
परिपूरित ब्रज मण्डल देखा॥

इसके आँगन मे ही सहसा,
रण कारण शक्ति बटोरी थी।
बरबस नसनस रण रस भरती,
महारानी मातु किशोरी थी॥

जिसकी ओजस्वी वाणी ने,
जाकर दिल्ली झकझोरी थी।
राज्य कला कुशला रानी कर,
दृढ़ राजनीति की डोरी थी॥

है यहीं दुर्ग तो जन्मभूमि,
जग जाहर भूप जवाहर की।
अब भी सुनता तन्मय हो मन,
धुन उस मदमाते नाहर की॥

जिसके प्रताप से आतङ्कित,
सब राजनीति घर बाहर की।
मद मर्दन कर दिल्ली पति का,
रण भूमि भुजा फर फर फरकी ॥

यह राजस्थानी सिंह द्वार,
सबके स्वागत हित सदा खुला।
हो मित्र परम या शत्रु चरम,
ये नही किसी को सका भुला ॥

मित्रो का मोदक मधुर मधुर,
शीतल पयनूप का प्रेम घुला।
बैरी को गोलो के लड्डू
पानो तलवारो धार घुला ॥

इसी दुर्ग के दरवाजे पर,
दल बादल गोरे चढ़ आये।
फिर बरसा झर से धुआँ धार,
इस पर ही गोले बरसाये ॥

अड लडे महीनो तक योद्धा,
पर नही जरा भी घबराये।
तब लेक लाट हट गया हार,
होगये नृपत के मन भाये॥

बुर्जो पर गरज उठी तोपे,
लपलप करती जिह्वा खोली।
था गोलो का घनघोर शोर,
डगमग डगमग धरती डोली॥

जोशीले जाट जवानो ने,
जम छाती पर झेली गोली।
रणचडी मुण्डमाल पहिने,
शतखडी के स्वर मे बोली॥

इस गढ़ पर चढ अँगरेजो ने,
लड अपनी जान गमाई थी।
श्री सुजान गङ्गा में न्हाकर,
गति सहज स्वर्ग की पाई थी॥

इसी किले पर प्रवल शत्रु से,
डट डट कर हुई लड़ाई थी।
छल वल कुशल अजय वैरी पर,
श्री विजय समर मे पाई थी॥

इस गढ़ के दृढ़ बुर्जो पर ही,
रण रक्षण को व्रज राज खड़े।
गोरों के सैनिक गण को रण,
सञ्चालन करते दीख पडे॥

करनसिंह मॉडौ पुरिया की,
है इसी किले में कीर्ति अमर।
इसी दुर्ग पर किया वीर ने,
दृढ़ कमर बाँध कर प्रखर समर॥

तलवार चलाई एक हाथ,
लीनी किवाड़ कर सहज पकर।
भट मार मार अगणित गोरे,
कर दिया पहर भर कहर समर॥

जय भूमि भरतपुर लोहा गढ,
घर घर मे जनमे नर नाहर।
जोशीले जगी ज्वानो के,
जाटों के जौहर जग जाहर॥

जाट वीर

प्रण त्याग वीर तलवार वीर,
रण क्षण रिपुगण करते अधीर।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाट वीर ॥

जिन के जीवन में जौहर की,
जय जग मग जग मग ज्योति जगी।
जिनकी रग रग में रण मद की,
रस रुचिर रँगीली रेख रँगी ॥

जिनके स्वभाव में भडकीली,
चढ लड़ मरने की आग लगी।
जिनके तलवार प्रहारों से,
रिपु की मतवाली फौज भगी॥

बढ जाते रण मे दर्प भरे,
कर कठिन मोरचे चीर चीर।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाट वीर॥

पावन ब्रज भू की रक्षा का,
अपने कंधों पर भार लिये।
मद मस्त झूमते जाते थे,
कर में घातक हथियार लिये॥

हो रुद्र रूप रिपु नाशन को,
बन महाकाल संहार लिये।
बन करके जन सेवक सच्चे,
दृढ शासन का अधिकार लिये॥

जन हित सर्वस अर्पन करते,
शूरमा सहिष्णु सच्चे सुधीर ।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाटवीर ॥

मन देश भक्ति की उठती थी,
अति बांकी तूफानी लहरें ।
रण विजयी कपि ध्वज की नभ में,
मद मान भरी फर फर फहरें ॥

जिनकी धुन सुन कर रिपु दल के,
दिल में भय की वदली घहरे ।
वह भूमि चूमने योग धन्य,
जहिं जाट वीर टोली ठहरें ॥

अतिशय निशंक रण मदमाती,
रिपु मान मर्दिनी जाट भीर ।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाट वीर ॥

जिनके कंठो से गूँज उठों,
गिरिराज देव की जयकारें।
दुश्मन दल में फ्ट फैल गईं,
वे जोश भरी रण ललकारे ॥

मुगलों के शीसो से खेलीं,
रन मे चमकीलो तलवारें।
इन रन बाँकुरे सैनिकों पर,
मनि मानक मुक्ता धन वारें ॥

लडने को प्रस्तुत जाट वीर;
सँग मे गूजर मीना अहीर।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाट वीर ॥

ये जाट-वीर सच्चे किसान,
खेतो मे कृपी काटते थे।
रन काट काट रिपु मुंड झुड,
लोथे रन खेत पाटते थे ॥

खेतो में पानी देने को,
कूओ से स्वय खीचते थे ।
रन खेतों को रिपु रक्त धार,
से वढ कर शीघ्र सीचते थे ॥

भूपाल यही नरपाल यही,
ये वादशाह ये ही वजीर ।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाट वीर ॥

वीरों की मृत्यु सहचरी थी,
रक्खा था शीस हथेली पर ।
विकराल काल से खेल रहे,
था वोझा जान अकेली पर ॥

पहनाई म्लेच्छ मुंड माला,
चढ महाकाल को देहली पर ।
मुगलों को मीड मर्द डाला,
चढ रजधानी अलवेली पर ॥

बढ़ते जाते थे शस्त्र हाथ,
तलवार तमचा तोप तीर ।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाट वीर ॥

इस जीवन में विश्राम कहाँ,
लड़ने को हरदम कसी कमर ।
प्राणों की बाजी लगा लड़े,
जीते जम कर बहु विकट समर ॥

इस जीवन मे यश विजय मिले,
पा मृत्यु स्वर्ग मे बने अमर ।
जिनकी पदगति पर बज उठता,
शिवजी का डमरू डमर डमर ॥

ये महाकाल के अग्रदूत,
ये भीषण प्रलयंकर समीर ।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाटवीर॥

ये रण वका मदमस्त शेर,
मन मे खूनो अरमान भरे ।
लड मरने को तैयार तुरत,
वॉके तीखे अरमान भरे ॥

जब युद्धकाल से लडे कठिन,
ऐसी अडवगी आन भरे ।
शूरो की सच्ची शान भरे,
तलवारो का अभिमान भरे ॥

जिनके डर से थर थर कपते,
नव्वाव शाह मसव अमीर ।
जग जाहर जोश भरे जोधा,
रण धीर विकट भट जाटवीर ॥
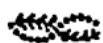
—प्राचीन—

महाराजा—सूरजमल जी   पृष्ठ संख्या ४२

विस्तृत ललाट अति तेज पुंज,
थी नाक अतुल शोभा पाती ।
ज्योतिर्मय आँखे लाल लाल,
भौंहे गहरी सी इठलाती ॥

ऐंठी मूछे गलमुच्छे घन,
दुश्मन दल मे भर जाता भय ।
व्रज मडल के आखंडल का,
सूरज मल का पौरुष परिचय ॥

द्युति दर्प भरी दोहरी देह
दिव दीप्ति मयी जगमग जगमग ।
माथे पर रत्न जडी पगडी,
थे चमक रहे जिसके नग नग ॥

रण मद उन्मद घन उठा उबल,
फड फडा उठी तन की रगरग ।
झट उछल अश्व चढ गये लपक,
हिल गयी अवनि डगमग डगमग ॥

अनुयायी अगणित विकट सुभट,
जिनके गतिमय अति चचल हय ।
ब्रजमंडल के आखंडल का,
सूरज मल का पौरुष परिचय ॥

दृढ कमर समर को कसी रही,
तलवार शत्रु को तनी रही ।
चुभ रक्त चूसने को रिपु का,
पैनी भाले की अनी रही ॥

दहला देती छाती छिन मे,
ऐसी भाले की अनी रही ।
अरि मुंड माल पहिने गल मे,
रण चंडी सँग मे बनी रही ॥

जिनके प्रताप से भारत में,
हिन्दू जनगण रहते निर्भय ।
व्रज मंडल के आखडल का,
सूरज मल का पौरुष परिचय ॥

सज सैन्य चढी जाती बढती,
रवि छिपता रजपथ को भरती ।
कूओ का नीर सूख जाता,
पीछे दुनिया प्यासी मरती ॥

सुन गरज लरजता आसमान,
सुन धमक धसक जाती धरती ।
दिल्ली के शाही महलो मे,
बेगम फिरती गिरती परती ॥

आता न नींद दिल्ली पति को,
चट आये जाट यही सशय ।
ब्रज मडल के आखडल का,
सूरज मल का पौरुष परिचय ॥

जब समर स्थल मे बढ जाता,
रिपुदल मे मच जाती हलचल ।
तब अगनित मुंड मेदनी पर,
कट कट गिरते जाते प्रतिपल ॥

हो विकल विबस भग चले मुगल,
चख रण मे निजकरनी का फल ।
तब धन्य धन्य कह उठे देव
बदनेश सुवन भट सूरज मल ॥

अब म्लेच्छ रक्त से तृप्त हुआ,
युग युग का प्यासा तृषित हृदय ।
ब्रज मंडल के आखडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय ॥

जिसके उर में थी धधक रही,
प्रति हिंसा की जागृत ज्वाला ।
मुगलो का दल निज भुज बलसे,
रण थल मे बढ दल मल डाला ॥

मुगलो के सेनापतियो के,
चोटी बिन शीशो का प्याला ।
रण चडी को कर दिया तृप्त,
अब पिला मुगल शोणित हाला ॥

नभ मे लागा पृथ्वी प्रताप,
होते प्रसन्न लखि सूर्य विजय ।
व्रज मंडल के आखंडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय ॥

तन मन धन जिस पर न्यौछावर,
निज प्रजा प्राण प्रिय पृथ्वीपति ।
अरि मित्र मध्य गति से परिचित,
रण राजनीति रत वीर नृपति ॥

सुन कर जिसकी तिरछी भृकुटी,
वैरी गण हो जाते शंकित ।
जिनके केवल इंगित से ही,
दुर्जन होते शिर से वंचित ॥

जिसके प्रताप से हो जाता,
रण मे क्षण मे रिपु दल का क्षय ।
व्रज मडल के आखडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय ॥

जिसने प्रसन्न होकर पल मे,
लाखो को हाल निहाल किया।
हो रुष्ट दुष्ट दुश्मन दल को,
झट मीड मर्द पामाल किया॥

बलशाली वीर वैरियो को,
करके परास्त वेहाल किया।
कर क्षमा बहुत सो को फिर से,
धनवान किया खुश हाल किया॥

निश्चित पीढियाँ हुई वहुत,
पाकर ब्रज भूपति का आश्रय।
ब्रज मंडल के आखंडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय॥

वदनेश भवन अवतार हुआ,
जिस दिन नरेश सूरजमल का।
प्रगटा अनुपम ज्योतित प्रकाश,
दश दिशि मे तेज तुमुल झलका॥

जनता के मन की खिली कली,
फैला सुवास मलियानल का।
गति से गाया गंधर्वों ने,
शुभ गीत वधावा ंगल का॥

जन जन का तन मन अति प्रसन्न,
अब जाट जाति का भाग्य उदय।
व्रज मंडल के आखंडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय॥

अधरो पर खेला करती थी,
मृदु मृदु मधुमय मुसकान सरल।
रिपुदल को बनजाती तत्क्षण,
दाहक घातक अति तीव्र गरल॥

दुखियों का दुख सुन कर पल में,
व कर होजाता हृदय तरल।
दुर्दण्ड दुष्ट जन दहन को,
बढ़ जाता दल द्रुततर अविरल॥

गौ द्विज दीनों के रक्षण को,
प्रतिक्षण तत्पर अविचल निश्चय।
ब्रजमडंल के आखडल का,
सूरज मल का पौरुष परिचय ॥

जब समराङ्गण में कूद पडा,
तड़ तड तड़िता सा हय तड़का।
कड़ कड़ा हड्डियाँ काट काट,
खंजर बैरी के दिल खड़का ॥

चोंधिया गईं आँखें रिपु की,
हाथी भागे घोड़ा भडका।
अब जान बचा भागो मुगलो,
आगया बदनसिंह का लडका ॥

भगदड पड जाती रिपुदल में,
बढता जाता हय होती जय।
ब्रज मडल के आखंडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय ॥

सिहों से करता मल्ल युद्ध,
था जोश जवानी वचपन मे।
अड सूँड़ मरोडी हाथी की;
वल अकड अतुल भट के तन मे॥

रजपूतों की रण भूमि मध्य,
सग्राम बहुत घनघोर रचे।
तड़िता सी चलती तेग तडप;
सन्मुख न एक भी वीर वचे॥

रिपु काट काट दी भूमि पाट,
विन मुंड वहुत से रुण्ड नचे।
विजयी सूरजमल लहराता,
ज्यो ज्यो गहरा संग्राम मचे॥

अडता लड़ता ऐसे लगता,
जिमि गरुड़ काटता सर्प निचय।
व्रज मण्डल के आखण्डल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय॥

हैरान पठान हाँफते थे,
सुन-सुन कर घोर नगारो का।
हो विकल रुहेले काँप उठे,
चौधा चमका तलवारों का॥

घुट साँस बहुत मर गये तुरत,
था जोर बड़ा धूँधारो का।
हो गया कलेजा रेजा सा,
फल नेजा तेज दुधारो का॥

क्षत आहृत हृत होते अगनित,
मच जाती रिपुदल बीच प्रलय।
ब्रज मंडल के आखंडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय॥

जिसकी सेना ने खूँद दिये,
पथ जंगल और पहाड़ो के।
जिसके लोहे को मान गये,
राजा भी सब रजवाड़ों के॥

जिसकी कृपान की चमक देख,
स्वर विगड़े सिंह दहाड़ों के।
काँपा खगोल भूगोल डोल,
सुन-सुन धुन विजय नगाड़ों के॥

रिपु मुगल पठान रुहेलों के,
निश्चय दहलाते दिल अतिशय।
व्रज मंडल के आखंडल का,
सूरजमल का पौरुष परिचय॥

मदमाते सुभट मरहटों पर,
जिसकी रण धाक दिवानी थी।
नृप मुगल पठान रुहेलो ने,
मन दहशत जिसकी मानी थी॥

लख युद्ध भूमि के जटिल व्यूह,
रजपूतो को हैरानी थी।
पौरुष प्रताप व्रज सूरज की,
जग फैली गर्व कहानी थी॥

—चौमन—

छा गई कीर्ति दिक मण्डल में,
था शक्ति कोष जिसका अक्षय।
ब्रज मण्डल के आखंडल का,
सूरजमल्ल का पौरुष परिचय॥

महाराजा जवाहर सिंह जी

निज भुज बल से रिपु दल-दल कर,
दुर्गम दिल्ली गढ किया विजय ।
नर नाहर भूप जवाहर के
जग जाहर जौहर का परिचय ॥

मानो छल भरा छलावा था,
तलवार चलाता उछल उछल ।
चमकीला भारा पारा था,
अरि-गद नाशक चंचल प्रतिपल ॥
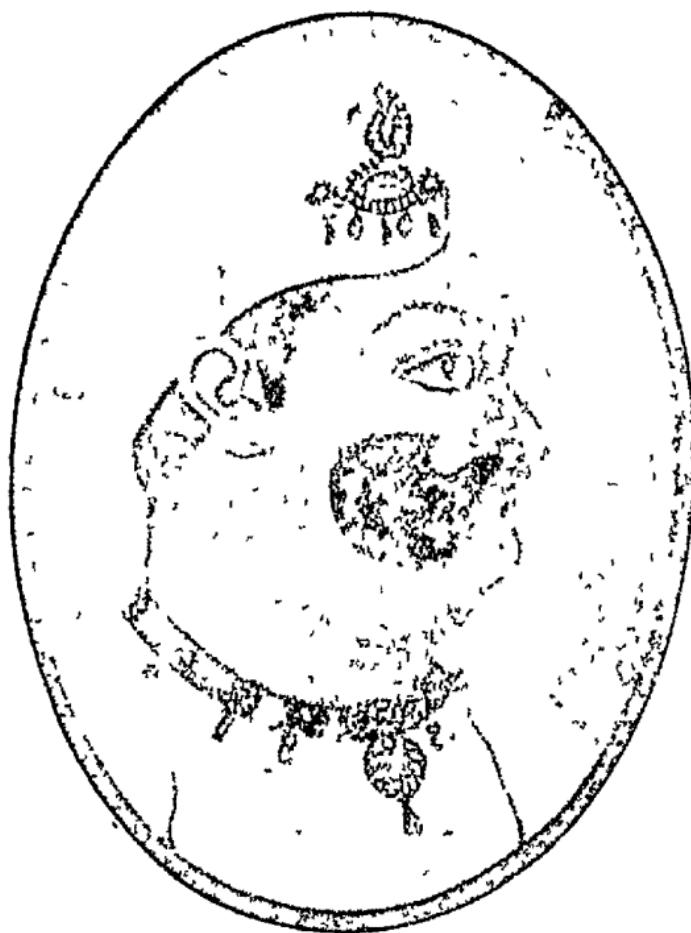
महाराजा—जवाहर सिंहजी   पृष्ठ संख्या ५६

जगमग जलता अङ्गारा था,
रिपुदल दहलाता जाता जल।
भारत नभ का ध्रुव तारा था,
अतिशय अमंद निज धाम अचल॥

जिसके प्रचण्ड पौरुष के बल
ब्रज मण्डल कुल हो गया अभय।
नर नाहर भूप जवाहर के,
जग जाहर जौहर का परिचय॥

जिसकी नस नस में यौवन का,
जोशीला विकट उफान भरा।
दिल्ली दल तहस नहस करदूँ,
मन में तीखा अरमान भरा॥

श्री पार्थ-सारथी महारथी,
की विजयों का ही ध्यान भरा।
शेवा, प्रताप, गोविन्द गुरू,
प्रणवीरों का अभिमान भरा॥

बल शौर्य पराक्रम साहस से,
पूरित था जिसका वीर हृदय।
नर नाहर भूप जवाहर के,
जग नाहर जौहर का परिचय।

भट अजब अदाँ का बाँका था,
निज आन बान पर रहा अडा।
छक्के शूरो के छुड़ा दिये,
जब समर मोरचा पड़ा कडा॥

दल मुगल पठान रुहेलों से,
रण भूमि बीच घनघोर लड़ा।
अति उग्र रूप था महाकाल,
दुश्मन कँपता भयभीत खड़ा॥

कवि गण करते गुण गान सदा,
इसके कर होगी दिल्ली जय।
नर नाहर भूप जवाहर के,
जग जाहर ज़ौहर का परिचय।

थे विकट बात के धनी सुभट,
अपने विचार पर जमे रहे।
तपता प्रचण्ड पौरुष प्रताप,
रिपु सैनिक भय से थमे रहे ॥

राजा रंगड और राजपूत,
आतंकित होकर झमे रहे।
नव्वाब खान अफगान ज्वान,
जिसके आगे थे नमे रहे ॥

जिस दिशि बढ जाता लेकर दल,
उस दिशि छाजाता निश्चय भय।
नर नाहर भूप जवाहर के,
जग जाहर जौहर का परिचय ॥

जिसकी हुँकार हिला देती,
दुश्मन दल के दिल के पंजर।
जिसके रक्षण में निज दल की,
नस नस मे जाता साहस भर ॥

जिसके प्रचण्ड पौरुष ऊपर,
जग जाट जाति जीवन निर्भर।
इस युवक शिरोमणि शिर ऊपर,
शुभ स्वर्ग सुमन झरते झर-झर ॥

रिपु दल दलता मलता चलता,
बढता जाता जोशीला हय।
नर नाहर भूप जवाहर के,
जग जाहर जौहर का परिचय ॥
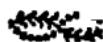
महाराजा—रनजीत सिंहजी

महाराजा रणजीतसिंह जी

गोरों का सर्व खर्व करता,
बरसों से हुआ गर्व सचय।
रण लार्ड लेक को विजय किया,
रण जीत सिंह नृप का परिचय ॥

साहसी शूर अति वीर धीर,
आदर्श बने बलवानो के।
रण जेता नृप रणजीत सिह,
नेता नरसिह किसानो के ॥

जब अँग्रेजो का राज्य अधिक,
भारत मे बढ़ता जाता था।
तब प्रमुख नरेशों ने उनसे,
कर लिया मित्रता नाता था॥

अँग्रेजो से अड लड़ने मे,
सब सबल भूप कतराते थे।
उनके प्रताप से आतंकित,
नृप धनी बली झुक जाते थे॥

है धन्य वीर जो दबा नही,
पाकर दबाव भी झुका नही।
गोरो के गोली गोलो से,
सगीनो से भी रुका नही॥

थे सुत कनिष्ट सूरजमल के,
आसीन हुए जब सिंहासन।
बिखरा सा राज मिला इनको,
उन्नति में लगे लगा तन मन॥

फिरता सहायता प्राप्त हेतु,
यशवंत राव हुल्कर भूपति ।
औरो के झगडे पडे कौन,
हो रही सभी की ऐसी मति ॥

है परम्परा यह भारत की,
शरणागत को देना आश्रय ।
भीषण भय मे भी पडे स्वय,
पर आश्रित को करदे निर्भय ॥

लाहौर नृपति से हो निराश,
जब भरतनगर माँगी सहाय ।
अनुकूल मान मर्यादा के,
रख दिया डीग इन्दौरराय ॥

तब लार्ड लेक माँगा हुलकर,
बातो से छल बल कौशल से ।
देना हुलकर स्वीकार नही,
जम लड़े समर गोरे दल से ॥

साधन सीमित जन बल किंचित्,
तन वृद्ध किन्तु था मन जवान।
अडलडा मान की रक्षा को,
पा विजय हो गया अति महान् ॥

वह अड़ा इस लिये रहे आन,
वह खड़ा इसलिए वढ़े शान।
सन्मान वड़ों का रखने को,
सर्वस्व सहित वलिदान प्रान ॥

जम समर किया अंग्रेजों से,
सारे रजवाड़ों से वढ चढ।
रण जीत लिया रणजीत सिंह,
हो गया भरतपुर लोहा गढ ॥

महाराजा— रनधीर सिंहजी

महाराजा रणधीरसिंह जी

अँग्रेज अनी से लडा निकल,
जिमि शूकर दल में लडे सिंह।
रणजीत सिंह के ज्येष्ठ पुत्र,
रण कुशल सबल रणधीरसिंह॥

युवराज राजते राम रूप,
तेजस्वी पूर्ण पराक्रम तन।
अँग्रेज आक्रमण अधिक प्रबल,
कर विफल सफल सेनापति बन॥

लोहागढ़ के परकोटा तट,
बन गए खेत रणखेत विकट।
लेकर कर मे करवाल कठिन,
भट कूद पड़े रण लेक निकट॥

बन भीम भयकर महावीर,
तलवार चलाई चपल चाल।
रन खेत पाट कर लोथो से,
भर दिये लबालब रक्त-ताल॥

बढ़ रही वेग से द्वार ओर,
गोरो की सेना धुआँधार।
क्षत विक्षत खो बैठी धीरज,
रणधीर सिंह के खा प्रहार॥

अतिशय प्रचण्ड भुजदण्ड प्रबल
कर खण्ड खण्ड अँग्रेज अनी।
लेकर नकेल दीनी धकेल,
रणखेतों से रणधीर धनी॥

—छियाछट—

गोरे गुण्डों के मुण्ड काट,
निर्मित की अगनित मुंडमाल।
अति भक्ति भाव मति गति अर्पित,
श्री महाकाल के गले डाल॥

अँग्रेज सैन्य के लार्ड लेक,
थे सेनापति सर्वोच्च शूर।
अगणित रण विजयी अपराजित,
नृप गर्व कर दिया चूर-चूर॥

रणधीर सिंह का बल विक्रम,
रण थल कौशल पौरुष साहस।
श्रमजीवी कृषकों जाटो के,
सन्मान हेतु ही था सरबस॥

राज पुरोहित श्री हरनारायणजी

श्री ब्रह्ममूर्ति ब्रह्मावतार,
अति शक्ति रूप शक्त्यावतार।
गम्भीर धीर मन्त्री प्रवीण,
सेनापति भी तलवार धार॥

उपजाता वैर विरोध आदि,
वितंडा व्यर्थ विवाद वाद।
असफलता जड़ आलस प्रमाद,
अवसाद दुखद व्यापक विषाद॥

ये दुर्गुण शत्रु हानिकारक,
जब जाट जाति में घुस आते।
मन वचन काय से प्रोहित जी,
रक्षा करने में लग जाते॥

है अर्थ पुरोहित का निश्चित,
जो सर्वाधिक हितकारी है।
नित निरत रहे यजमानो हित,
वह प्रोहित पद अधिकारी है॥

थे सदगुण खान पुरोहित जी,
संलग्न राज्य हित चिन्तन में।
नित पूजा पाठ मत्रणा मे,
रण भूमि सैन्य संचालन मे॥

सूरजमल और जवाहर संग,
अड लडे अनेकन युद्ध विकट।
मंत्री वन सुलझाईं उलझन,
श्रीमती किशोरी मातु निकट॥

हुलकर नृप को देना आश्रय,
निश्चित कर पाते नही नृपत ।
तव गौरव गाथा सुना सुना,
अनुकूल बनाया सबका मत ॥

रण विजय मिली अंग्रेजो से,
यूरुप पहुँचा जाटों का यश ।
हरनारायण जी का प्रभाव,
जो प्राप्त भरतपुर किया सुयश ॥

ये शस्त्र शास्त्र शिक्षक महान्,
जिमि गुरुवर द्रोणाचार्य आर्य ।
मति कौशल से रण भुजबल से,
सब सफल बनाते राज्य कार्य ॥

महाराज यशवन्त राव होल्कर इन्दौर नरेश का म० रणजीतसिंह भरतपुर नरेश को सहायतार्थ पत्र भेजना।

मथुरा तट से सट लिपट लिपट,
अठखेली करती थी नटखट।
कल कल निनादिनी कालिन्दी,
लहराती लहर लहर उत्कट॥

विश्राम घाट से कुछ
थे नहा रहे तेजस्वी जन।
गर्विष्ट बलिष्ट, पुष्ट थे तन,
पर श्रान्त क्लान्त लगते थे मन॥

जो जन विशिष्ट सा लगता था,
उससे कहता इस भांति अपर।
अजमालें जाट नृपति को भी,
है अधिक निकट अब भरत नगर ॥

इनके भी, बड़े प्रतापी थे,
अड़कर लड़कर जय किये समर !
मल प्रबल मुगल दल बल डाला,
भयभीत कप उठे रिपु थर-थर ॥

सूरजमल सूर्य प्रचण्ड तपा,
थे जोर जवाहर जग जाहर।
ढिल्ली करदी दिल्ली किल्ली,
लुटवाकर बादशाह का घर ॥

"सोचो तो सचिव" उचित है क्या,
अपने को और गिरायें हम।
सम नाम, जाति सम दोनो की,
अजमे को क्या अजमाये हम ॥

—महत्तर—

राजपुरोहित श्री हरनारायणजी

नाहर नृपति रणजीत सिंह,
पंजाब केशरी कहलाता ।
नज भारतीय मर्याद धर्म,
अंग्रेजों मे मन भय खाता ॥

चढ़ते प्रताप के राजा को,
कुछ ध्यान न यश अपयश का है ।
फिर उजडा बिखरा भरतपूर,
क्या साहस इसके वस का है ॥

मां बाप एक के पुत्र युगल,
है प्रकृति पृथक पाई जाती ।
सम नाम रुप वय जातक मे,
मति भिन्न भिन्न ही है आती ॥

इसलिए भरतपुर पति की मति,
है उचित न समझें ऐसी हम ।
जैसी पंजाब नृपति की गति,
से खो आये अपना सभ्रम ॥

पंजाब भूप जो किया कर्म,
उसने निज गौरव नष्ट किया।
मर्याद हमारी गई नही,
यद्यपि हमको कुछ कष्ट दिया॥

निज राज्य सुरक्षा के भय से,
शरणागत रक्षण धर्म तजा।
उसके कुल में रह सके नही,
यह राज्य, कहूँ सच, बजा बजा॥

जब हमने भारत की भू से,
अँग्रेज भगाने की ठानी।
इन दबे नवे राजाओं मे,
रण जोश जगाने की ठानी॥

तो ऐसे कितने ही अनुभव,
निश्चय हमको सहने होंगे।
ये कालकूट के तिक्त घूँट,
बन नील कण्ठ गहने होंगे॥

क्या केवल स्वार्थ साधने को,
हम जगह जगह पर अड़ते हैं ;
आजाद भूमि भारत की हो,
बस इसीलिए तो लड़ते है ॥

दे भेज दूत हे भूपति मणि,
अति चतुर, भरतपुर नगर सुघर ।
तब जैसी हो अनुकूल दशा,
कर लेंगे वैसा कार्य सुकर ॥

मेरे इस नम्र निवेदन को,
कृपया राजन् ! स्वीकार करें ।
यह राजनीति गति समय देख,
मिलकर वैरी संहार करें ॥

फिर इस आपत्ति काल में तो,
पा आश्रय कुछ आराम करें ।
ताजा तन जन बल शस्त्र खाद्य,
के संचय हित विश्राम करें ॥

—पिपहारा—

यम भगिनी यमुना जी नहाय,
अति पुण्य पूर्ण फल मधुर पाय।
मन वांच्छित फल हित मन ही मन,
कर विनय जोर कर सीस नाय॥

दे दान दक्षिणा ब्राह्मण को,
चढ़ घोड़ा पर चल दिये तुरत।
जा पहुँचे अपने शिविर बीच,
पथ छिपा बदलते राह बहुत॥

निज राजदूत भेजा विचार,
रण शील साहसी नृप हुलकर।
पर खबर ले उड़े पहले ही,
दो चतुर गुप्तचर भरत नगर॥

चम चम किरणों से चमक रहे,
दृढ़ दुर्ग भरतपुर धवल शिखर।
मृदु मलय गन्ध से लदा पवन,
लहराता कपि ध्वज लहर लहर॥

—छिहत्तर—

नग जड़े जगमगे नगर बीच,
नृप मन्दिर ऊँचा ज्यो मदर।
कितने तो थे इतने सुन्दर,
जितने कि पुरन्दर पुर अन्दर॥

थी हवा महल सी चुहल भरी,
हँस रही हवेली गली गली।
घर घर आगे थी फुलवारी,
खुल खिली हुई थी कली कली॥

बहुमूल्य वस्तुएँ भरी हुई,
विक रही खुले बाजारो मे।
भिड़ भीड ठसाठस फिरती थी,
सब सजी हुई हथियारों मे॥

उस दुर्ग मध्य दरबार भवन,
सज्जित सुन्दर शोभित विशाल।
थे चमक रहे दीवार जड़े,
कमनीय काच रँग लाल॥

सब अपनी अपनी जगहो पर,
बैठे थे योद्धा जमे हुए।
द्युति से दिपते दिप दिप आनन,
थे शस्त्र हाथ मे थमे हुए॥

बहुमूल्य सजे सिंहासन पर,
शुचि सौम्य शान्त आसीन भूप।
मुख तेजोमय था धवल केश,
था कौशलेश का सा स्वरूप॥

युवराज राम सम रहे राज,
रणधीर सिंह रणधीर वीर।
पौरुष प्रचण्ड वरिवंड भूरि,
भुज दण्ड शत्रु खण्डन सुधीर॥

तन वृद्ध, तरुण मन, तेजस्वी,
युग शस्त्र शास्त्र मे पारायण।
तप पूत निपुण रण राज नीति,
प्रोहित गुरुवर हरनारायण॥

—मटहरवर—

अनुभवी आर्य आचार्य वर्य,
देखे कितने उत्थान पतन।
नौका ले राज्य भरतपुर की,
कठिन स्थल खेते सहित जतन ॥

जिमि गुरुवर इन्द्र सभा मे हो,
सन्मान पूर्ण शुचि आसन पर।
वैसे ही प्रोहित जी बैठे,
मुसकाती मुख मुद्रा सुन्दर ॥

था पत्र उपस्थित हुलकर का,
अतिशय अनुनय अनुरोध भरा।
जातीय संगठन भाव भरा,
अँग्रेजों के प्रति द्रोह भरा ॥

महाराजा यशवन्त राव का महाराजा रणजीत सिंह जी को सहायतार्थ पत्र

थी योग लिखी मथुरा जी से,
श्री नगर भरतपुर शुभ स्थान।
जेता नेता रणजीत सिंह,
गुण गणनिधान सर्वोपमान ॥

हे ब्रज मण्डल के आखण्डल,
हे नीति कुशल अतिशय उदार।
क्षत्रिय कुल भूषण प्रजा प्राण,
हे जाट जाति के कर्णधार ॥

संयुक्त मोर्चा सुदृढ़ बना,
हम सब मिलकर हो एक हृदय ।
भारत स्वतन्त्र कर डालेंगे,
कर अँग्रेजों से समर विजय ॥

हम भूल नही सकते उनके,
उपकार किये नृप सूरजमल ।
माना ना मत पानीपत में,
भोगा कितना उसका कटुफल ॥

नेतृत्व ग्रहण करिये राजन् !,
पायेंगे आप श्रेय निश्चय ।
आवाहन भारत माँ का है,
हो जाओ उद्यत तज संशय ॥

अँगरेज विरोधी मैं संतत,
क्षत विक्षत दल युत थका हुआ ।
आश्रय हित खटका रहा द्वार,
दरवाजे पर ही खड़ा हुआ ॥

—वियात्री—

अंगरेजों से हो गई विजय,
तो वहुत मिलेगा द्रव्य मान।
मर अगर समर मे गए वीर,
वन अमर स्वर्ग मे हो पयान॥

हुलकर को लौटा देने में,
कायरता यह कर देने में।
गौरव धन पुरखों का खो दें,
फिर नहीं मिले वह लेने में॥

अंग्रेजों का आतंक त्याग,
अपने जन वल का ध्यान करो।
वाके साखे पुरखो के सुन,
कुछ मान करो, अभिमान करो॥

दिल्ली की कठिन चढाई को,
मुगलो की विकट लड़ाई को।
ओजस्वी स्वर मे प्रोहित जी,
यो कहने लगे वडाई को॥

—चौपाई—

भरतपुर का दरबार भवन जहा ॲंगरेजो मे युद्ध करना निश्चय हुआ और
पुरोहितजी ने दिल्ली युद्ध का वर्णन सुनाया था   पृष्ठ संख्या ८५

महाराजा सूरजमल का दिल्ली पर चढ़ना

चतुरो के चित चुभती चुभती,
चल पडी एक चर्चा चचल।
उत्ताल ताल चौपालों पर,
मच गई अचानक ही हलचल ॥

हाटो बाटो और घाटों तट,
युवको की टोली रही निकल।
दिल्ली पर चढने वाले है,
व्रजराज नृपतिमणि सूरजमल।

मदमाते मल्ल अखाड़ों में,
झुक झूम झूम करते गर्जन।
मन्दिर मठ ग्रह उद्यानों मे,
सभापण करते नागर जन ॥

सरदार और सामन्तो के,
चिंतित विस्मित स्तब्धित मन,
राजकीय घोपणा हुए बिना,
क्यो निराधार फैला कंपन ॥

सब समय पूर्व ही आ बैठे,
सरदार सभ्य सामन्त स्वजन।
कुछ जल्दी ही भर गया आज,
लोहागढ का दरबार भवन।

क्या अजब सनसनी सी फैली,
काना फूसी करते सब जन।
कुछ उत्सुकता बढ गई अधिक,
आ गए राज्य के मन्त्री गन।

श्री मुख से भी कुछ सुना नही,
कुछ युद्ध घोषणा हुई नहीं ।
दिल्ली पर चढने की चर्चा,
फिर भी फैली है सभी कही ॥

महाराज पधारे ये सुनकर,
हो खडे, किया झुक अभिवादन ।
सब बैठ गए फिर आसन पर,
आसीन हुए नृप सिंहासन ॥

श्री मान् आज का महत्वपूर्ण,
है विस्मय युत संवाद यही ।
दिल्ली पर चढने वाले है,
सन सनी शहर मे फैल रही ॥

बोले ब्रजराज इसे सुनकर,
मुझको आश्चर्य अपार हुआ ।
मेरे मन में भी बात न थी,
फिर कैसे यहाँ प्रचार हुआ ॥

—सत्तासी—

सब आप पता पास के नहीं,
इस पर अति अफ़सोस हुआ।
यह चाल किसी दुश्मन की है,
या प्रभु प्रेरित उद्घोष हुआ॥

सिर झुका सोचने लगे सुस्त,
उत्तर देने असमर्थ मौन।
आ विनत गुप्तचर पति बोला,
आश्चर्य ! बनाता बात कौन? ॥

ब्रजराज महल की भंगिन ने,
ऐसा संवाद उड़ाया है।
मूँछें मरोड़ते दिल्ली दिशि,
कारण इसका बतलाया है॥

प्राणद प्रभात की वेला में,
अमृत वर्षा कर रहा पवन।
ऊषा का अरुण राग बिखरा
निखरा प्राची का नवल वदन॥

लोहा गढ दुर्ग भरतपुर के,
बुर्जो पर तरुन किरन नर्तन ।
कर रहे दन्त धावन राजन,
ऊँची अटालिका खुले सहन ॥

भुजदण्ड प्रचण्ड वितुण्ड सुंड,
छन छन मे फड़ फड फडक रही ।
मुख धोकर मूँछ सँभाल रहे,
तेजस्वी आकृति चमक रही ॥

नागिन सी नजर निश्शक क्रुद्ध,
उत्तर दिशि को ही निरख रही ।
आँखे विशाल युग लाल लाल,
मानो चिनगारी बरस रही ॥

यह वर्णन भगिन ने भूपति,
मुझको ही सही सुनाया है ।
जन साधारण को तो केवल,
दिल्ली चढना बतलाया है ॥

—

भगिन की वहकी वातो को,
मुन चकित सोचने लगे नृपति ।
फिर वीर भाव गभीर धीर,
प्रचलित की निज वाणी की गति ॥

मवी गण चित्त विचार करो,
सन सनी शहर मे फैल गई ।
निज नगर भरतपुर के घर घर,
यह निश्चय जनता जान गई ॥

अव दिल्ली गढ पर चढ देना,
अड़ लड रिपु का धन मद हरना ।
कस कर वदला लेना पिछला,
पौरुप साहस से सर करना ॥

इन विकट विदेशी व्यालो के,
हम हर दम हमले सहते थे,
जव चढते गढ पर तव अड़ते.
घर पर ही लडते रहते थे ॥

—:o:—

हम साहस कर निज सैन्य सजा,
गढ दिल्ली पर चढ सके नही।
रक्षा ही करते रहे सदा,
आक्रामक बन बढ सके नही॥

श्री कृष्ण राम की हम सतति,
हम भीमार्जुन के वशज जन।
पुरुपार्थ परम परिपूरित तन,
रण शौर्य धैर्य साहस युत मन॥

दलदल विलासिता मे न फँसे,
हम सुरा सुराहो मे न बहे।
निज धर्म कर्म का मर्म भूल,
नहि तरुणी तन में रमे रहे॥

हम शुद्ध बुद्ध जागृत विशेष,
रण मरण वरण है सहज खेल।
हो सुदृढ संगठित करे वार,
है कौन शक्ति जो सके झेल॥

—

अवसर उपयुक्त यही आया,
दैवी प्रेरित घोपणा हुई ।
दिल्ली पर चढने लडने को,
जन जन के मन प्रेरणा हुई ॥

प्रचलित राजाज्ञा करो शीघ्र,
जन पद के जन जन तक पहुँचे ।
जाटो की सभी जमातो मे,
गाँवो मे घर घर मे पहुँचे ॥

सब सरदारो सामन्तो को,
सन्देश निजी पहुँचाओ यह ।
मर्याद मान के रक्षण को,
हे जाटो ! भार उठाओ यह ॥

सब सिनसिनवार ठाकुरो को,
सब बाँधव माफीदारो को ।
दो भेज सूचना आये सज,
चमका चमका तलवारो को ॥

हे भारतवासी ब्रजवासो !,
उठ कमर बाँध रण बढ़े चलो।
बदला पिछला लेने को सब,
अब समर क्षेत्र मे चढे चलो ॥

कृषिजीवी श्रमजीवी सैनिक,
जो असिजीवी क्षत्रिय गण है।
सब चले सँभल कर लडने को,
सबको ही युद्ध निमन्त्रण है ॥

यह दिन वह दिन जिस दिन को ही,
हैं मल्ल बनाते अपने तन।
यह दिन वह दिन जिस दिन को ही,
रण कौशल सीखे सैनिक गन ॥

यह दिन वह दिन जिस दिन को गिन,
जननी जनती है वीर सुवन।
यह दिन वह दिन जिस दिन को ही,
लालायित थे वीरो के मन।

सवाद पहुँचते ही सत्वर,
सब सिमिट चल दिये शूरवीर।
जाटो के सभी गोत्र के भट,
झट झपट बाँध तूणीर तीर॥

श्री प्रताप सिंह वैर भूपति,
सूरजमल नृप के अनुज वीर।
निज सैन्य सजाकर चले साथ,
सेनापति योद्धा समर धीर॥

जाटो से इतर अन्य योद्धा,
शुचि क्षत्रिय और अक्षत्रिय भट।
अति रण प्रेमी तलवार धनी,
जो कट कट करते समर विकट॥

उन्माद युद्ध का उमड पडा,
हर जन पद के हर जन जन मे॥
रण शौर्य वीर रस सर उफना,
सब तरुण नरों के तन मन मे॥

वे वीर सँभलते चले विहँस,
जिनने जीते थे विविध समर।
नव नौनिहाल, बाँके किशोर,
चल दिये चाव से कसे कमर॥

नियमित सेना से कई गुनी,
रण रसिक अधिक बन गई अनी।
दिल्ली पर चढ़ने लड़ने को,
तब प्रखर तेज तलवार तनी॥

बज उठे मस्त मारू बाजे,
धम धम धोंसा उद्घोष उठा।
मस्तानी ज्वानी लहर उठी,
नस नस बूढो के जोश उठा॥

चढ जाट अनी घनघोर चली,
सहजोर चली उस ओर चली।
गढ व्यूह विकट झकझोर चली,
मुगलो का मान मरोर चली॥

सज समरस्थल रण साज चले,
भट संभल शूर सिरताज चले।
मल मुगल गिराते गाज चले,
नृप सूरजमल वृजराज चले।

वल कुण्ड झुण्ड के झुण्ड चले,
उद्दण्ड, घमण्ड घमण्ड चले,
फड फडा चड भुज दण्ड चले,
वरिवड मुण्ड रिपु खण्ड चले॥

घनघोर रोर गज घण्ट शोर,
झर मद झरते गजराज चले।
छरहरे छलावे से छलिया,
छल छलांगते से वाज चले॥

सुन धाक धडकता दिल दल का,
गढ़ त्याग विरोधी भाज चले।
लड़खड़ा लँगड़ पड़ते गिरते,
कुछ काल चले कुछ आज चले॥

शासन दिल्ली का कर तमाम,
रण जीत मार्ग के शत्रु प्रवल।
दिल्ली परकोटे भीतर ही,
रह गया शेष अब राज मुगल ॥

सुन वादशाह हैरान हुआ,
अफसोस वडी आफ्त आई।
जुर्रत जाटो की वढ़ी वहुत,
दिल्ली पर चढा फौज लाई ॥

सैकडो वर्ष के शासन मे,
हिन्दू तो वस इस वार चढे।
दुश्मन दल तहस नहस करदो,
दिखलादो हम हैं अभी वडे ॥

ऐ वहादुरो ! ऐ दिलावरो !,
हिम्मत से अडो लडो डटकर।
जाटो की लाशे पड़ जाये,
मुगलो के खजर से कटकर।

अल्लाहो अकबर की अवाज,
सेना मे गूंजे विजयी वन।
अपनी तीखी तलवारो से,
दो काट जाट जन जन के तन ॥

छोडो वढ गोला वौछारें,
हो जाय आसमाँ धुआँधार।
तोपो की धमक धडाको से,
धरती भी धडके वार वार ॥

सब शक्ति संगठित कर सत्वर,
झट जमा लिया मोरचा कडा।
मुगलो को पलटन होशियार,
कौशल से कट कट कटक लडा ॥

रण लगी उगलने आग तोप,
चिनगारी चमके बेशुमार।
छर्रो की चपल चोट खाकर,
तन छार छार पैदल सवार ॥

तोपों से गोलों की बाढ़ें,
झट धाँय धाँय छूटी छटाक।
चट चट करती गढ़ दीवारें,
तड तड़ा गई तड़की तड़ाक॥

बल उठी बलीता लगते ही,
तोपों से गोला तड़प चला।
खिल खील खील उड़ गया खनक,
विकराल भयंकर ज्वाल जगा॥

गोला ओला दल से बरसे,
धमकों से शेष शीष डोला।
रण पण बन गया वणिक योद्धा,
रिपुतन तलवार तुला तोला॥

गोलों की मार गजब की है,
भीतों से हाथी हुए ढेर।
पैदल सवार दल घोड़ों के,
हन हाड हाड दीने बिखेर॥

गोला बरसाते अँधा धुन्ध,
रह कला तोप लघु उछल उछल।
कट हाथ पैर सिर वक्ष भाग,
गिरते पड़ते उडते प्रति पल ॥

गोला गोली चल धुआँ धार,
छा जाता छिति पर अन्धकार।
कर चट चट चमके चिनगारी,
कर अंश अंश विध्वस क्षार ॥

सन्मुख दोनों की जमी तोप,
गर्जन कर गोला पडे छूट।
टकराये आपस में आकर,
टुकड़े टुकडे हो पडे टूट ॥

गोला से तीक्ष्ण कटार किर्चे,
निकले, समर स्थल फूट पडे।
मरघट समान मैदान हुआ,
वहु ध्वंश अंश चौखूँट पड़े ॥

दश दिशि मे फैल गई दहशत,
हो धुआँ धार घन अन्धकार।
क्षत आहत होकर हुए ढेर,
हाथी घोड़ा पैदल सवार॥

गिर गिर घर घर ढीले ढीले,
पुर गाँव हो गए छार छार।
तृण पेड़ खेत जल हुए राख
दहली के चौतरफा उजार॥

सूरजमल समर स्थल उतरा,
तपता सूरज ज्यो प्रलय काल।
कट कट्ट काटता रुण्ड मुण्ड
मानो आया प्रत्यक्ष काल॥

जोशीला जोधा लहर चला,
रण मे बरसाता जहर चला।
रिपुदल पर करता कहर चला,
जगजेता कपि ध्वज फहर चला॥

यौवन-बल-मद-मे झूम झूम,
तलवार धार को चूम चूम।
खुल खेल मौत का खेल रहा,
मैदान जंग मे घूम घूम॥

आँधी तूफान उमगों में,
हमलो मे बिजली सी कडके।
तलवारो की तेजी तडक,
दुश्मन दल दिल धड धड धडके॥

लँगडे का लौह लहु लोभी,
लँगडी करदी लड मुगल अनी।
सुन कर दहाड दहले पहाड,
रिपु हाड हाड हडकली बनी॥

गरजा तरजा कर सिंहनाद,
हाथी उट्ठे चिंघार मार।
भयभीत अश्व हिनहिना उठे,
डर लहर कहर सी आर पार॥

हाथी के माथे जमा टाप,
खूनी खंजर झट पट उछार।
सिरदार बिना सिर किया तुरन्त,
सिर पेच सहित सिर को उतार॥

पैंतरा काट कर बचा वार,
लड़ते लड़ते घोड़ा मोड़ा।
कड़ कड़ा हड्डियाँ कड़क उठीं,
गिर पड़ा लड़खड़ा कर घोड़ा॥

फुंकार मारती फाट पड़ी,
विकराल व्याल करवाल काल।
घँस कठिन करेजे निकल गई,
खस पडी शत्रु सेना विशाल॥

कर झडप तडप तलवार चली,
इक बार चली बहुवार चली।
हर वार शत्रु संहार चली,
रिपु रक्त उमगती धार चली।

प्रतिवन्ध रहित स्वच्छन्द चली,
ढेरो कवन्ध कर काट काट ॥
मुडी हित अर्पित मुण्ड माल,
रुण्डो से रणस्थल पाट पाट ॥

भर जोश जनूनी खूनी सा,
चौगुनी चाल चल युद्ध वाट ।
फुकार मारती नागिन सी,
वैरी का लोहू चाट चाट ॥

चपला सी चमके चमकीली,
दुश्मन दल पर सहज़ोर गिरे ॥
तलवार वहाती रक्त धार,
इस ओर गिरे उस ओर गिरे ॥

खर खड्ग खीच खटका खटाक,
कर वार जोर से कर उछाल ।
झुक सिकुड वैठ रिपु अडा हाथ,
दृढतम गेडे की फटी ढाल ॥

झट झपट झपट्टा मार डटा,
दृढ ढाल शत्रु की दूर हटा।
अब हाथ कटा अब माथ कटा,
सब साथी जन का साथ कटा॥

खूँदता खुरों को टापों से,
पैदल दल का बह जाता हय।
खा मार कटार दुधारों की,
रन घनी अनी का होता क्षय॥

चमकीले चपला से भाले,
चप्पे चप्पे भर पर चलते।
तन चलनी ज्वानों के होते,
लोहू के फव्वारे चलते॥

लपलपा रहा लोहू लोभी,
तन जहर बुझाकर कहर चला।
छातियों छेदता छाँट साँट,
छींटे छिटकाता छहर चला॥

—एकमौट—

रण थल मे भाला उछर चला,
छिन इधर चला छिन उधर चला ।
दीखा न किसी को किधर चला,
लाशे बिछ जाती जिधर चला ।।

कट हाथी का पिलवान गिरा,
अँवारी से सिरदार गिरा ।
घोडा बिन कोडा ही दौडा,
घोडे से खिसन्न सवार गिरा ।।

क्या ताकत शुतर सवारो की,
क्या पलटन और रिसालो की ।
मैदान छोड भागी न जर्मा,
पड गई ढेरियाँ भालो की ।।

जाटो का जोश जवानी का,
घन उफन उफन फन सा लहरा ।
अति प्रबल शत्रु सिर कुचल कुचल,
समर स्थल मे गहरा गहरा ।।

कट कट पट जाना पृथ्वी पट,
छट छट छलनी होना शरीर।
रण मुण्ड कटे पर रुण्ड लड़े,
हटना न जानते जाट वीर ॥

जाटों की जबर लड़ाई है,
वीरों की विदित बड़ाई है।
धक्कों से धमक उठी धरती,
रन बाँकी विकट चढ़ाई है ॥

दल बादल जाट जवानों के,
रन उमड़ घुमड़ रिपु पर घहरे।
कर वज्रपात आघात कठिन ,
गोलों की बौछारें छहरे ॥

रण बाजो का घनघोर उठा,
खलबली मचाता शोर उठा।
जाटों का दल सहजोर उठा,
मुगलों को मल झकझोर उठा ॥

—एन्नी आट—

खाई की नही लडाई यह,
खुल पडे खुले मैदानो मे।
क्या जोश भरा है ज्वानो मे,
तन जोर तुले किरपानो मे ॥

भिडते ही अड कर लड जाते,
छिड जाता छिन में घमासान।
गिरते मरते रिपु भग जाते,
मैदान जीतते जाट ज्वान ॥

भट ज्वानो के छोरा छट छट,
खट खटकाते खजर खट खट।
कट कट लोथे गिरती झट पट,
पट पट पट जाता पृथ्वी पट।

सघर्ष सहज दुर्द्धर्ष युद्ध,
दिग्गज दहले काँपी दिगन्त।
मानो आ पहुँचा प्रलय काल,
रण अग्नि शिखा प्रगटी अनन्त ॥

धम धुंआ धार बौछारों में,
छिप जाता था नभ मे रवि रथ।
कट कट कर गिरते थे सैनिक,
लोथों मे रुक जाता था पथ ॥

कर उथल पुथल रण थल चंचल,
घहराते आते घुड़सवार।
किरचों से कठिन कटारों के,
वारों से होते छार छार ॥

मुगलों पर झपटे जाट ज्वान,
करवाल तेज उत्ताल चाल।
भगदड़ी पड़ी जम लड़ी नही,
रन खड़ी अड़ी सेना विशाल ॥

कूदे रन मे जूझे छन में,
मदमाते राते मन मचले।
झिझकें न झुकें पल कौन रुकें,
गिरते पड़ते लड़ते सम्हले ॥

छिद छिद कर रक्त फुहार उठी,
कवचित काया कपकपा उठी,
रुचि रक्त पिपासी सी रसना,
रण चडी की लपलपा उठी ॥

खजर की चोट लगी गहरी,
अथ से इति तक छाती खोली।
कर छेद साफ हो गई पार,
आ लगी दूर से ही गोली।

रण बीच रक्त की कीच हुई,
खिल नीच मीच खिलखिला उठी।
घन घमासान घमसान हुआ,
चंचल चण्डी किलकिला उठी ॥

कट कर वितुण्ड का सु ड उडा,
लडते योद्धा का मुण्ड उडा।
खूनी खप्पर भर चण्डी का,
देखो जाटो का झुण्ड उडा ॥

उर म्यान मत्स्य हुए कमठ ढाल,
नभ मगर मच्छ नर गज विशाल।
वह चली समर में रुधिर नदी,
भ्रम जाल डालकर मुण्ड माल॥

आराम रात को दिवस लड़े,
हो क्रुद्ध, पर रहे धर्म युद्ध।
लड़ते लड़ते गत बहुत दिवस,
हो सका न निर्णय किन्तु शुद्ध॥

पर हाय अचानक एक दिवस,
ऐसी विपरीत घड़ी आई।
नृप खिंचे मृत्यु मुख मृगया मिस,
जब निकट विजय दी दिखलाई॥

सूचना गुप्तचर से पाकर
दल मुगल छिपा जंगल कर छल।
मृगया करते पर पीछे से,
इक साथ कर दिया वार प्रबल॥

श्री अजीत सिंह पथेने के,
थे साथ नृपति सूरजमल के।
भट अड़े लड़े डट खड़े खड़े,
दिखलाये जौहर भुज बल के॥

पर बचा न पाये भूपति को,
हाँ! स्वय किन्तु बलिदान हुए।
कर युद्ध भयकर प्रलयकर,
सँग नृप के ही अवसान हुए॥

हत भाग्य अस्त हो गया हाय!
ब्रज सूरज नृपवर सूरजमल!
मरते मरते मृत किए बहुत,
बिन मुण्ड रुण्ड कर युद्ध चपल॥

इस वज्रपात के होते ही,
जन जन मन शोक लहर लहरी।
शोकाकुल सैन्य भरतपुर को,
लौटी खा चोट प्रबल गहरी॥

अगणित प्रयत्न पर सब निष्फल,
पा सके नहीं भूपति का शव।
अब जाट शिविर में गूँज रहा,
पीड़ित मर्माहत रोदन रव॥

संवाद शोक का साथ लिए,
जब फौज भरतपुर में आई।
उपवन असमय हिमपात हुआ,
तब कली कली थी मुरझाई॥

मूर्छित व्याकुल हो गई प्रजा,
रनवासो में कुहराम मचा।
इस महा भयकर पीड़ा से,
अवशेष न कोई चित्त बचा॥

नव नृप का हो राज्याभिषेक,
सरदार लगे करने विचार।
जो शूर योग्य जन अधिकारी,
पावे अपना राज्याधिकार॥

हा ! वज्रपात आघात हुआ,
आलोडित कर डाला तन मन ।
क्या दशा हो गई करुण आज,
आलोकित रहता था आनन ॥

श्री भक्ति भाव प्रतिभा विवेक,
सौम्य शौर्य साहस संयम ।
दृढता शासन संचालन की,
शोभा मुख पर रहती अनुपम ॥

तन तेजो मय मन ओजो मय,
रानी जगमग जागृत ज्वाला ।
गुण गण परम विलक्षण का,
फैला था दिशि दिशि उजियाला ॥

आ रही किशोरी रानी सुन,
स्तब्धित चकित उपस्थित जन ।
आगई सामने सबके फिर,
दासी सँभालती थी दो, तन ॥

वैधव्य शोक संतप्त, गात,
अंसुवन से आँखें भरी भरी।
मुख मलिन अधर निष्प्रभ सूखे,
आकृति उदास बिखरी बिखरी॥

यह दशा हुई उस रानी की,
जिस रानी का सुषमा वर्णन।
अत्युक्ति नही है सत्य सिद्ध,
विविध भाँति करते कविगन॥

हो खडे किया सन्मान प्रगट,
झुकझुक करके सादर प्रणाम।
अभिवादन कर स्वीकार, कहा,
हूँ विवश आज मन शोक धाम॥

है राज्य प्रथा कुल मर्यादा,
रानी रहती रनिवासो मे।
पर्दे मे से कहला देती,
आती न कभी जन-वासो में॥

मजबूर आज मैं विपति घोर,
उफना सतप्त शोक सागर।
सब बन्धन टूट गये खुद ही,
आ गई इसीसे मैं बाहर॥

कर क्षमा मुझे दें सब गुरुजन,
सब सुने करूँ आरत पुकार।
फिर दीजे उत्तर उचित मुझे,
कर बार बार मन में विचार॥

हा हंत हो गया अंत आज,
ब्रज मण्डल का उजड़ा बसन्त।
विषधर जाटों की छिनी अनी,
मेरे ही बिछुडे नही कन्त॥

मेरे क्या प्राणाधार गये,
कृषकों के भी आधार गये।
बल विक्रम के भण्डार गये,
कर सूना सुखसंसार गये॥

नौका के खेवन हार गये,
वे छोड हमे मझधार गये।
वे स्वय स्वर्ग उस पार गये,
सबसे सम्बन्ध विसार गये ॥

गुण गण उनके वर्णन करना,
मुझको कब सम्भव सहज कार्य ?
उस पथ पर मुझको चलना है,
जो बता गये स्वर्गीय आर्य ॥

क्षत्राणी धर्म सती होना,
कर सकती नही किन्तु पालन।
है आज्ञा करूँ प्रदर्शन पथ,
हो सुगम राज्य का संचालन !

पति की आज्ञा तो पत्नी को,
है एक मात्र शीर्पस्थ धर्म।
नानुच तज कर पालन करना,
क्या कर्म और क्या है अकर्म ॥

पर सोचो तुम निज धर्म श्रेष्ठ,
क्या उचित तुम्हे यह सब सहना।
नृप वध का बदला लिए बिना,
अपमान अग्नि मे ही दहना॥

दुख भरी किशोरी रानी की,
बानी प्रगटी हुकार मार।
है पड़ी नृपति की लाश वहाँ,
कैसा गद्दी का फिर विचार॥

दिल्ली गढ तोडन लक्ष्य छोड,
बदला लेने की तजी घात।
मति हीन हुए बलहीन हुए,
अफसोस शर्म की बडी बात॥

तुम तेज पुज तुम त्याग वीर!
कर सकें न भय तुमको अधीर।
प्रतिक्षण समराँगण रण तत्पर,
कुण्ठित न तुम्हारे शस्त्र तीर॥

कस कमर समर को उठो शूर,
घोडो पर कस लो तुरत जीन ।
बढ चढ दिल्ली गढ को तोडो,
भर तन मन मे साहस नवीन ॥

जो ले प्रतिशोध पिताजी का,
प्रण पडा अधूरा करे पूर्ण ।
हो सिहासन आसीन वही,
जो दिल्ली दल, दल करे चूर्ण ॥

क्षत्रिय नही जनमते है,
वैभव विलास सुख भोगों को ।
क्षत्रिय तो सदा जन्म लेते,
पीडा दुःख के उद्योगों को ॥

क्षत्रिय का जन्म नही होता,
फूलो की सेजों सोने को ।
क्षत्रिय तो जन्म सदा लेता,
कांटों के ऊपर सोने को ॥

धधा धरती धन धर्म धाम,
जन जन के वा क्षत्रिय रक्षक।
निज प्राण रचे रक्षण ही को,
बलिदान हो गये वह सब्यक॥

क्षत्रिय तन में हो प्रान शेष,
कर मे कृपान या भाला है।
साहस सामर्थ्य कहाँ किसमें,
को सन्मुख बटने वाला है॥

क्षत्रिय को कब पसन्द आते,
कोमल पलग सुख सेज महल,
क्षत्रिय को कब पसन्द आती,
रुचि नाच गान की चहल पहल॥

क्षत्रिय को तो पसन्द आते,
समरस्थल तरु तल भूमि शयन।
भालों ढालो हथियारो से,
ही बने शिविर है स्वर्ग अयन॥

—एकसो बाईस—

क्षत्रिय को मस्त नही करते,
तबला सितार सारगी स्वर ।
क्षत्रिय को मस्त नहीं करते,
कोकिलकंठी नारी के स्वर ॥

क्षत्रिय को मस्त किया करता,
मारू बाजे का वीर राग ।
खट खट खटका हथियारो का,
धडका तोपो का उगल आग ॥

रण दर्प भरी हुकार घोर,
ध्वनि मार मार बढ कर प्रहार ।
समरस्थल आहत आर्तनाद,
शस्त्राघातो क्षत चीत्कार ॥

उठ उछल शस्त्र कर मे सँभाल,
तज कर विलास अनुराग राग ।
क्षत्री समरस्थल चल देता,
जग के सब सुखमय भोग त्याग ॥

गुरुजन साधु ब्राह्मण को,
क्षत्रिय देता है सदा मान।
वह रहता नम्र बडों के प्रति,
करता न कभी अपना बखान ॥

सन्मुख हो कितनी प्रबल शक्ति,
करता न सहन अपमान कभी।
हो जाता क्षण मे क्रोध पूर्ण,
तन जाती है किरपान तभी ॥

क्षत्री न छोडते है बदला,
बीते चाहे कितने ही युग।
उसकी मिट्टी से प्रतिशोधक,
निश्चय आते है अंकुर उग ॥

प्रस्तुत कितने वैभव विलास,
उद्देश्य भूलता कभी नही।
निज लक्ष्य सिद्धि समुचित पथ पर,
चलता है हटता कभी नही ॥

हे जाटवीर ! क्षत्रिय कुमार !
उठो तजो श्रम क्लम विषाद।
निज क्षात्र धर्म के पालन को,
दिल्ली चल दो, तज कर प्रमाद॥

अपने भुज बल से दल मल दो,
हलचल पल पल दिल्ली दल को।
निज प्रबल पराक्रम से तोडो,
मुगलो के दृढतम सबल को॥

बदला लेकर नृप का आओ,
नव विजय माल पहिने गल मे।
फिर हो सहर्ष उत्कर्ष युक्त,
राज्याभिषेक पल मगल मे॥

ब्रजरानी मातु किशोरी के,
शब्दो का शीघ्र प्रभाव हुआ।
'बदला लेंगे, बदला लेंगे,
सहजोश घोष विस्तार हुआ॥

हो गया शान्त दरबार भवन,
थम गया घोष कुछ पल भर में।
कृषकों को सम्बोधित करके,
फिर बोली ओज भरे स्वर में ॥

हे देशप्राण! हे धैर्यवान!,
हे किसान! तुम हो महान्।
हंसते हंसते सहते रहते,
कहते न व्यथा, मुख नहीं म्लान ॥

जाडा गर्मी बरसात रात,
दिन संध्या दुपहर या प्रभात।
श्रमरत मन मगन प्रति क्षण हो,
दृढ़तम तव तन कंपता न गात ॥

श्रम स्वेद सींचते धरती को,
करते जीवन धन उत्पादन।
शासन सत्ता वैभव विशेष,
तुमसे हो सबका सम्पादन ॥

तुम जगते जग जाती जगती,
तुम उठते उठती महाशक्ति।
तुम श्रद्धाशील सौम्यता युत,
तुम मूर्तिमान हो त्याग भक्ति॥

हे देशभक्त तुम अप्रमत्त,
करते मन में अभिमान नही।
अनुरक्त कर्म मे रहते हो,
खुद करते निज गुण गान नही॥

जब देश धर्म पर विपदा के,
तूफान घुमड़ कर आते है।
जब शत्रु विदेशी आ करके,
भीषण उत्पात मचाते है॥

बन राजा जो शासन करते,
वे भोगों मे फँस जाते है।
हल छोड़ हाथ मे तब किसान,
अपने हथियार उठाते है॥

कृषिजीवी बनो श्रमजीवी,
निज छाती अगर अड़ाते हैं।
निज देश धर्म के त्राण को,
हँस हँस कर बलि बलि जाते हैं॥

फिर आज गगन में बादल दल,
घिर ब्रज मण्डल पर आये हैं।
निज प्रजा प्राण प्रिय महाराज,
अब काम युद्ध में आये हैं॥

मृगया करते थे एकाकी,
था छिपा मुगल दल जंगल में।
छल वार कर दिया पल भर में,
हो गया अमंगल मंगल में॥

दिविगत नरेश थे खुद किसान,
उनके पूर्वज भी थे किसान।
दिल के सिंहासन बिठा उन्हें,
सन्मान किया सबने प्रदान॥

करते हैं कृपक प्रेम पूर्वक,
राजा महाराजा सम्बोधन।
राजा के आसन बैठाया,
सब बन्धु स्वय उल्लासित मन॥

हो गया शकुन बस कहते तुम,
हल गहते जब वे हलधर बन।
"तुम रक्षा करो किसानो की,"
हम सभी करे हल सचालन॥

तुम उठो बढ़ो इस अवसर पर।
भूपति वध का प्रतिकार करो।
दुर्दम्य वेग से दिल्ली चढ़,
दुश्मन दल का सहार करो॥

तुमसे लोहा ले समरस्थल,
क्या बस की है दिल्ली दल की।
सगठित किसानो के बल से,
क्या चले चाल छल कौशल की॥

रानी बोली अब तो अवश्य,
नृप वध का होगा प्रतीकार।
संकल्प सत्य करले किसान,
तो मिले गले मैं विजयहार॥

आधार देश के तुम ही हो,
हो तुम्ही राज्य के मेरु दण्ड।
हो तुम्ही चिरन्तन शक्ति स्रोत,
तुम पर ही है हमको घमण्ड॥

फिर प्रेम पगी वानी रानी,
बोली निज पुत्र जवाहर से।
तुम विकट लड़ाके बाँके भी,
बन रहे स्यार क्यो नाहर से॥

आशा तुमसे माता को है,
निज जाट जाति जनता को है।
भारत मे हिन्दू हित रक्षक,
रण भू मे तव समता को है?

इक पिता तुम्हारे ने ही बस,
साहस करके दिखलाया था।
भर जोश विकट निज रण जौहर,
दिल्ली पर चढ बरसाया था॥

अवसर अत्यन्त शोक का है,
असमय उनका अवसान हुआ।
टूटा न हाय दिल्ली गढ, पर,
रणबका का बलिदान हुआ॥

क्षत्रिय गण को वाँच्छित है जो,
रण वही वीर गति पाई थी।
उनके स्वागत को स्वर्ग धाम,
मैं बजी सुखद शहनाई थी॥

दुख घोर हुआ हम सब अनाथ,
पर विवश यही प्रभु इच्छा थी।
पर शायद वीर जवाहर की,
होने को यहीं परीक्षा थी॥

है उचित बात मेरी बेटा,
सुन ध्यान लगा करले विचार।
है धर्म यही कर्तव्य यही,
कर स्मरण इसी को बार बार॥

तू नर पुंगव रण बांका है,
तू प्रलयकार मचाने वाला।
तू बली बात का धनी शूरा,
तू प्रण ऊपर अड़ने वाला॥

तू खेल मौत का खेल सके,
है कौन ? वार सब झेल सके।
करवाल व्याल चमका कराल
तू रिपु गण सिर पर ठेल सके॥

भट तेरा प्रबल पराक्रम है,
फैले आतंक शत्रु दल मे॥
तव क्रोध वहर की लहर बढ़े,
भर जहर प्रखर ममरस्थल मे॥

क्यो खून हुआ तेरा ठंडा,
क्यों उठा नही उसमे उबाल।
क्यों हुआ पुत्र कुण्ठित तेरा,
रिपु मद मर्दन खंजर कराल॥

तूने भी अपने भुज बल से,
जय किये अकेले कठिन समर।
हो विकल प्रबल दल दहलाता,
जब चमकै तेरा शौर्य प्रखर॥

लड विकट वेग से रिपु से लड,
झकझोड़ तोड दे दिल्ली गढ।
पितु वध बदला ले, बढकर अड,
ले सकल सैन्य को बलकर चढ॥

तू ज्येष्ठ राज्य का अधिकारी,
सब छोटे तव आज्ञाकारी।
कर सिद्ध स्वय को श्रेष्ठ पुत्र,
बन भूप भरतपुर गणधारी॥

बलिहार मातु के चरणो की,
दी आँख खोल, दे सद् विवेक।
श्रम शिथिल मूढ शोकाकुल था,
जग गए बतादी सुदृढ टेक॥

गिरिराज देव की कृपा दृष्टि,
माताजी के आशिष का बल।
सहयोग सभी सैनिक गण का,
सामन्त जनो का रण कौशल॥

घुल जहर समर मे मचे कहर,
फैलेगा कट रिपुदल पजर।
दिल्ली दल दहल उठेगा माँ,
खटकेगा जब खूनी खजर॥

मुगलो का मद कर चूर चूर,
दिल्ली गढ को कर धूर पूर।
माँ! दूध तुम्हारे का जौहर,
दिखला दूंगा जग दूर दूर॥

यदि मुझे भेट देना चाहे,
तो गढ चितौर के ला किवाड़ ।
ले गये मुगल जिनको हर कर,
बलकर हिन्दू गढ से उखाड ॥

हिन्दू पति का अपमान किया,
उसका बदला तू लेकर आ ।
अब कर न सके उत्पात घोर,
ऐसी शिक्षा देकर के आ ॥

अच्छा माँ, जैसी आज्ञा है,
मैं आज्ञा पालन को तत्पर ।
दिल्ली पर चढ, बढ चढकर लड,
कर विजय समर आऊँ सत्वर ॥

शासन सत्ता ले अपने कर,
तैयारी करने लगा वीर ।
सूचना भेज दी जगह जगह,
सब सजा सैन्य आओ सुधीर ॥

सज इसी दुर्ग से निकल पड़े,
दृढ़ जाट वीर भट मर्दाने।
नर देशभक्त नृपभक्त निडर,
प्रिय आजादी के दीवाने॥

कटि कसे समर तलवार तेज,
तन पहिने केसरिया बाने।
रिपु की छाती छेदन करने,
कर मे भीषण भाले ताने॥

ले सबल राष्ट्र निर्माण लक्ष्य,
सब तरह शूर तैयार चले।
प्रण कर प्राणो की लगा होड़,
कर लिये नग्न तलवार चले॥

ये स्वय राष्ट्र के रक्षक गण,
लेने सत्ता अधिकार चले।
बैरो का साहस तोड़ युद्ध,
मे माया मोह विसार चले॥

ले प्रबल ज्वालि अंगार आग,
करने विद्रुत की धार चले।
रण रथ गज में प्रतिशोध घोर,
करने दिल्ली शिकार चले॥

भरे जोश में सुभट भूप वर,
तन मन करके बलिहार चले।
चले कूच कर [illegible] शीश तान,
हर पद पर धुंआधार चले॥

चले लखन गढ़ चढ़ गिरधर से,
कर असंख्य कपिदल हनुमान।
शूरों का लखि कर वीर वेश,
थर थर कंप उठते रिपु महान्।

चढ़ हरी पिले मे युद्ध वीर,
करने भारत उद्धार चले।
लड मरने के मन भाव भरे,
दल पैदल अश्व सवार चले॥

तोपों के छकड़े चले विपुल-
बारूदों के भण्डार चले।
सैनिक सजकर भर जोश चले,
कर शोर घोर जयकार चले॥

जिनके दर्प भरे शब्दों से,
गूँजा था सागर धरा गगन।
चले समर को कमर बाँध कर,
निज अमर नाम हित चित्त मगन॥

चढ़ गया जवाहर जल्दी ही-
दिल्ली को जाकर लिया दाब।
पथ अड़ा न कोई लड़ा नहीं,
छा गया शत्रु दल पर दबाव॥

अब जाट जाति में फैल गई-
दिल्ली पर चढ़ने की अवाज।
सब नृपत मृत्यु के बदले को,
चढ़ आये सैनिक सजा साज॥

[illegible]

दिल्ली को घेरे पड़े वीर,
संख्या असंख्य बल मे अपार।
अति क्रुद्ध युद्ध को उत्साहित,
चमकाते थे तलवार धार ॥

ससैन्य सेंधिया आ पहुँचा,
समयानुसार करने सहाय।
पर सचमुच लडने को केवल,
थे जाट वीर मन वचनकाय ॥

अति सुदृढ मोर्चा जमा लिया,
दिल्ली का घेरा कठिन डाल।
दल बादल जमघट जाटो का,
मुगलो को छाती रहा साल ॥

दिल्ली दल के दिल मे हलचल,
जाटो का चढ आया रेला।
भू कम्प उठा हडकम्प चला,
इस तरह मचा घर घर हेला ॥

जीते पाओ खिलअत मंसब,
मरने पर पाओगे जन्नत ।
तकलीफ जरा सी अभी सिर्फ,
जीवन भर फिर ऐशो अशरत ॥

बढ चलो खुले मैदानों में,
भर दो बिजली किरपानो में ।
जाटों को तहस नहस करदो,
यह जोश भरा हो ज्वानों मे ॥

भर गई जोश में मुगल फौज,
बढ गई झपट मैदानों मे।
घन घमासान तलवार चली,
लग गई आग बलवानों में ॥

भर जोश जवाहर सँभल उठा,
भय आकुल रिपु दल सकल उठा ।
तूफान उठा भूचाल उठा,
कप कपा बादशा मुगल उठा ।

फनधर का फन सा फैल खड़ा,
जाटो का जौहर उफन पड़ा।
खड़खड़ा उठा खाँडा खन में,
मुगलों के माथे कफन पड़ा।

तड़तड़ा उठा तिरछा तेगा,
लपलपा उठा लंबा नेजा।
कट गया करेजा फट भेजा,
उड़ गया अंग रेजा रेजा॥

भालो की विकट लड़ाई को,
लड़ रहे जोश में घुड़ सवार।
चुभ जाती तन मे घनी अनी,
छन उठती लोहू की फुहार॥

पैदल पैदल भिड़ खर्ग खींच,
आपस में करने लगे वार।
ढालों पर होती खचाखच्च,
मच रहा शोर रन मार मार॥

जाटों की जबरी मार पड़ी,
मुगलों की जमी फौज उखड़ी।
लड़खडा गई लड़ सकी नहीं,
भयभीत हुई भगदडी पड़ी॥

रन उछल उछल तलवार चली,
कर विकल विपुल झंकार चली।
कट मुंड उड़े भू रुण्ड पड़े,
उठ उबल रक्त बौछार चली॥

मदमाते ने मुडकर मोडा,
घोड़ा पर पडा सडप कोडा।
झट झपट टाप से सर फोड़ा,
खजर छोडा रिपु बल तोड़ा॥

जाहर नाहर का जोश हुआ,
हट्टा कट्टा सा लट्ठा सा।
पट्ठा ने दिया झपट्टा जब,
मथ गया मुगल दल मट्ठा सा॥

और [illegible] उठा जवाहर था,
रण ओर उमंगा नाहर था।
जिमि चला [illegible] पर [illegible],
[illegible] दलकर पर था॥

मैदान जंग के पीछे पर,
था वीर जवाहर घूम रहा।
जिसका सेना चूमी मस्तक,
रिपु रक्त [illegible] को चूम रहा॥

सिर पर घोड़े की टाप पड़ी,
छाती बरछी की छाप पड़ी।
तलवार हो गई गले पार,
नभ में मुण्डों की उड़ी लड़ी॥

आक्रोश भरा रण रोष भरा,
जहरीला जोश जवाहर का।
दल मुगल जलाता इस प्रकार,
खुल नेत्र तीसरा जिमि हर का॥

[illegible] चौहान

जोशीला वीर जवाहर है,
भट मरदाना नर नाहर है।
सुन धाक धवल की धमकी की,
खलबला उठा रण सागर है॥

इमि दलबल सहित जवाहर का,
बढ़ रहा जोश रण वेशुमार।
कुल कूल कगारे काट काट,
जिमि बढा आ रहा उदधि ज्वार॥

जय जोश भरा सन्तोष भरा,
रिपु होश उडा कर घोष उठा।
तन तपा करेजा कपा कपा,
पंजर खंजर खपखपा उठा॥

दिल्ली गढ बुरजों से बरसी,
गोला बौछारे धुआँ धार।
हो छार छार उड गए छिटक,
पैदल सैनिक घोडा सवार॥

गोलो की बरसा हुई विकट.
तड़तडा उठे तट के पत्थर।
दरजे दरार दीवारो पर,
दहला दिल्ली पति अन्तस्तर ॥

ओलो की सी लग गई झडी,
गढ पर गोलों की लगातार।
खडखडा उठे लडखडा उठे,
पत्थर पत्थर दीवार द्वार ॥

दुर्गम दिल्ली दरवाजो पर,
बढ रहा दनादन रन दबाव।
गढ रक्षक कट कट ढेर हुए,
अगणित घायल खा प्रबल घाव ॥

हिल सके नही खुल सके नही,
जो जड़े द्वार पर दृढ किवाड।
वे कडे अड़े इस तरह खड़े,
जिमि धरती पर अडियल पहाड़ ॥

दृढ़ जमी नुकीली कील कड़ी,
हाथी भी हिम्मत रहे हार।
पर युक्ति न कोई सूझ पड़े,
कैसे किवाड को दे उखार॥

टूटे किवाड खुल जाय द्वार,
अकुश को हूल रहे इकटक।
हाथी पीडित हो जाते हट,
पर टूट नही पाता फाटक॥

कैसे पहुंचे दिल्ली भीतर,
सरदार सोच मे थे निमग्न।
मिल पाता नही सफलता पथ,
सैनिक थे सब उत्साह भग्न॥

बोले पाखरिया वीर तभी,
बलिदान मांगती है किवाड।
ये करना चाहे रक्त-पान,
ये चखना चाहे मांस हाड़॥

मैं दूंगा यह बलिदान इन्हें.
सौभाग्य करूँ मैं ही प्रदान।
मुझको हाथी शिर से बांधो.
मैं करूँ निछावर मित्र ! प्रान ॥

तब जाट वीर बोले अनेक,
क्यो आप, बहुत प्रस्तुत हैं हम।
बस मात्र प्रदर्शन पथ करिये,
लड़ने मरने को हम क्या कम ?

सरदार सदा आज्ञा देते,
सैनिक करते पालन तत्क्षन।
घोड़े पर बैठे रहे आप.
हम करे मृत्यु का आलिंगन ॥

'पाखरिया' बोले मन्द विहँसि,
सैनिक गन को कर सम्बोधन।
तुम धन्य वीर ! है ध्यान तुम्हें,
कर्तव्य समर विधि संचालन ॥

सरदार कौन ! सरदारी क्या,
हम सब सम हैं भाई भाई।
सरदार सदा सर देते है,
इससे सरदारी बन आई॥

जिसका सर ऊपर दार नही,
वह हुआ कभी सरदार नही।
सरदार नही रह सकता वह,
जो सर देने तैयार नही॥

सर देने से सरदारी है,
सर देने को सरदारी है।
जिसके सर पर सरदारी है,
उस सर की पहिली वारी है॥

यो कह पाखरिया कूद पड़े,
हाथी के सिर से गए लिपट।
बोले अब लाओ रस्सा दृढ,
दो बाँध मुझे सिर से झटपट॥

तुम आज्ञा पालन को तत्पर,
तो बाँधो मुझको तज संशय ।
टूटें किवाड़ खुल जाय द्वार,
भीतर पहुँचे हो निश्चय जय ॥

आज्ञा पालन करके तुरन्त,
हूला हाथी उमंग भर कर ।
छिद गई देह पाखरिया की,
हाथी का जोर लगा जमकर ॥

रँग गईं किवाड़ें रुधिर धार,
सन गई मांस में कुटिल कील ।
दहली दरवाजे रही देह,
आत्मा पहुँची अम्बर सुनील ॥

यह समाचार सुन कर नरेश,
जब तक आए दरवाजे तक ।
सेना दिल्ली भीतर पहुँची,
कर विजय हर्ष ऊँचा मस्तक ॥
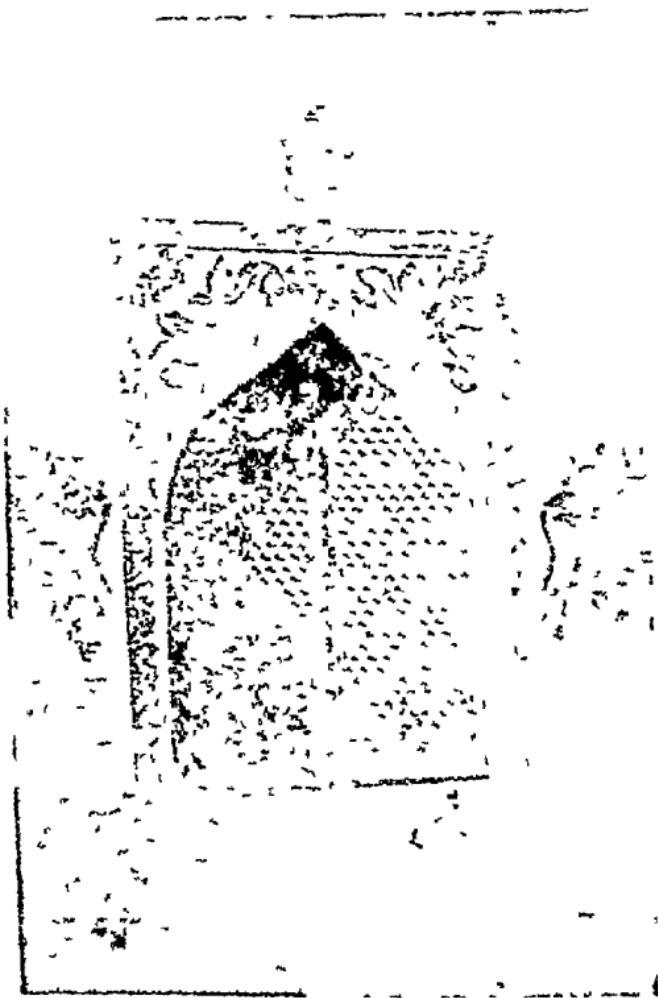
भरतपुर किले का दूसरा द्वार
वे किवाड़ें चढ़ी हैं जिन पर दिल्ली में पाखरिया
बलिदान हुए पृष्ठ संख्या १६१

तव नीचे उतर सवारी से,
महाराज किया सन्मान प्रकट।
करने को समुचित दाह क्रिया,
आज्ञा दी, करो व्यवस्था झट॥

बलिदान नही बेकार गया,
वह सबसे बाजी मार गया।
वह लाँघ दुर्ग का द्वार गया,
वह स्वर्ग लोक उस पार गया॥

पाखरिया के वल पौरुष की,
सच्चे शहीद के साहस की।
वन गई कथा कविता कामिनि,
नस नस मे भरी वीर रस की॥

चड़ चड़ा उठी चूलो की जड़,
भड़ भड़ा उठी गढ की किवाड़।
घुसपड़ी भीड सी जाट फौज,
दसदिसि फैली उनकी दहाड़॥

गलियों में हाहाकार मचा,
सडको पर कुछ संग्राम रचा।
जो अड़ा लड़ा सिर उड़ा तुरत,
आ सन्मुख कोई नहीं बचा ॥

भग गए मुगल दल के सैनिक,
सरदार छिपे तहखानो में।
घर घर सन्नाटा था छाया,
बाकी न जान अब ज्वानों में ॥

लडने वाला अब रहा नहीं,
ये शहर सकल सुनसान हुआ।
रण विजयी कपि ध्वज फहराया,
जाटो का जग में मान हुआ ॥

सैनिक स्वतन्त्र उन्मत्त हुए,
लूटने लगे सरदारो को।
बहुमूल्य वस्तुएँ आभूषण,
दूकानों को भडारो को ॥

होगया हताश शाह आलम,
दिल्लीपति शाहंशाह मुगल।
जाटो के भय से भीत विकल,
साहस न शेष अवशेष न बल ।।

सिंधिया सिफारिश करी अधिक,
विजयी रणधीर जवाहर से।
दो छोड़ बहुत दे चुके दण्ड,
दिल्लीपति दहल उठा डर से ।।

हिंदू संस्कृति की शान यही,
क्षत्रिय वीरो की नीति विदित ।।
रणजीत राज्य वापिस करदे,
जिससे कृतज्ञ बन रहे विजित ।।

ले विजय और धन माल बहुत,
अब वापिस चलिये भरत नगर।
बैठो जाकर के गद्दी पर,
सूनी है नृप मरणानन्तर ।।

सहयोग सैंधिया ने न दिया,
मिल दिल्लीपति से सदल गया।
कर क्षमा जवाहर दिया शाह,
मन शासन से तब बदल गया॥

कर विजय युद्ध चमका कटार,
ले पूज्य पिता वध प्रतीकार।
दिल्ली सत्ता पर कर प्रहार,
दिल्ली जय का गलधार हार॥

आगए भरतपुर नगर सुभट,
स्वागत को सजा शहर सारा।
जन जन मन मगन हुलास भरा,
उल्लास उमड़ता शतधारा॥

नव कलश मनोहर भरे सजे,
वहु विधि चित्रित निखरे निखरे।
अति मधुर विमल जल भरे भरे,
मङ्गल मय थल थल धरे धरे॥

सब स्वच्छ राज पथ झरे झरे,
शुभ चौक पुरे उभरे उभरे।
महँगे रँग रँगे सधे सम्हरे,
चम चम मोती उन पर बिखरे॥

पल्लव दल द्वारे हरे हरे,
तोरण पताक ध्वज नभ फहरे।
प्रिय मधुर मृदुल मंद ध्वनि से,
मुद मङ्गल वाद्य बजे गहरे॥

परकोटे भीतर घुसते ही,
कलकल आनंद लहर लहरी।
लाजा की सुरभित सुमनो की,
लग गई झरी सिर पर गहरी॥

जगमग जगमग करता जलूस,
रण-विजयी वीर जवाहर का।
चल चल कर प्रमुख राज पथ पर,
अभिवादन ले हर नागर का॥

आगया दुर्ग के भीतर फिर,
पहुँचा मा तट रनिवासो मे।
स्वागत में तत्पर राजमहल,
उत्साह उमड़ता श्वासो में ॥

मातायों को करके प्रणाम,
कर ग्रहण विविध विधि शुभाशीष।
छाती से लगा किशोरी मा,
मुख चूम अश्रु झर दिये शीष ॥

होगई सपूती मैं सचमुच,
कर दिया 'उजागर मेरा पय।
होगया जवाहर जग जाहर,
तू धन्य हुआ कर दिल्ली जय ॥

कुछ सुना बात दिल्ली रण को,
सौगात वहाँ से क्या लाया।
वेटा ! मेरे वचनो पर ही,
तूने अत्यन्त कष्ट पाया ॥

होगया जन्म सार्थक मेरा,
कर्तव्य बोध मा ! करा दिया।
वास्तव मे माता तूने ही,
निज मंत्रो से रिपु हरा दिया ॥

चर्चा क्या उन सौगातो की,
जो भरी बहुत तेरे ही घर।
दो वस्तु किन्तु लाया ऐसी,
जिनका उज्वल इतिहास प्रखर ॥

चित्तौड़ कोट के मा ! किवाड़,
लाया हूँ आज्ञा पालन कर।
है ये किवाड तेरे मनकी,
मेरे मन की है और अपर ॥

पाखरिया ने बलिदान दिया,
निज तन का अन्य किवाड़ो पर।
उसकी स्मृति स्वरूप लाया,
उनको भी बजा नगाडो पर ॥

सुन मा ने मगन चूम कर शिर,
दी वाह वाह खुश हो मन भर।
मनि मानक मुक्ता मूल्यवान,
कर दिये निछावर झोली भर ॥

सस्कार शास्त्र विधि कर नृप का,
कर शुभ दिन में राज्या भिषेक।
अब वीर जवाहर नृपति हुये,
रण जाट भटो की रही टेक ॥

हर्षित होकर झूमे डोले,
जन जन के भाव भरे बोले।
उल्लासित होकर मुख खोले,
गद् गद् स्वर मे ही सब बोले ॥

श्री गोवर्द्धन गिरिराज की जय,
जवाहर सिंह महाराज की जय।
जाटो के सबल समाज की जय,
रण अजय भरतपुर राज की जय ॥

नस नस रण रस भरने वाला,
मन मन साहस करने वाला।
झट मोह छोह भय भूत भगा,
समरस्थल ले चलने वाला॥

समयोचित भाषण भाव पूर्ण,
सुन क्रुद्ध युद्ध उन्माद भरा।
फडके भुज दण्ड सैनिको के,
कण कण मे रण का राग भरा॥

युवराज उठे रणधीर सिंह,
कर जोड नम्र हो शीष नाय।
है उचित न हम निजधर्म तजे,
चाहे अपना सर्वस्व जाय॥

अँगरेज लडे तो लड़ लेंगे,
हुलकर को आश्रय देना है।
पंजाब नृपति जो ले न सके,
वह सुयश हमी को लेना है॥

पुरखो का मान न खोवेंगे,
जाटो की शान न खोवेंगे ।
निज जान भले ही खो देंगे,
पर क्षत्रिय वान न खोवेंगे ॥

दरवार भवन मे गूंज उठी,
तव एक साथ ऐसी वाणी ।
लड़ने मरने मे नही हटे,
पर मिले यशश्री कल्याणी ॥

फिर वोले नृप रणजीत सिंह,
जव सवके ही मन यह निश्चय ।
तो दूत भेज वुलवा लीजे,
दो दुर्ग दीग मे ही आश्रय ॥

मेरे मनमे थी वात यही,
पर सव के मन की लेनी थी ।
हम हरा चुके मुगलो को तो,
गोरो को टक्कर देनी थी ॥

एत्नी नत्तर

अँगरेजों से अड लडने का,
साहस न हुआ रजपूतों में।
दिखला देना है हमको ही,
है बल इन भुज मजबूतो में ॥

पत्रोत्तर देकर विदा किया,
हुलकर नृप का वह राजदूत।
दे आज्ञा उचित व्यवस्था की,
आचरण किया नृप परमपूत ॥

तब दुर्गम दुर्ग दीग में आ,
नृप हुलकर ने विश्राम किया।
पीछा करती अँगरेज फौज,
ये भेद शीघ्र ही जान लिया ॥

सेना नायक सर्वोच्च लेक,
ने भेज भरतपुर दिया पत्र।
उस शत्रु हमारे हुलकर को,
तुम पकड़ बाँध दो भेज अत्र ॥

हो मित्र कम्पनी के नृप तुम,
बस बँधे सन्धि मे तुम हम है।
है मित्र मित्र सम दोनो के,
औ शत्रु शत्रु भी तो सम है॥

हे चतुर नृपति! निश्चय ही तुम,
झगडे को नही बढाओगे।
जो भूल कर गए मंत्री गण,
उसको जल्दी सुलझाओगे॥

उत्तर भेजा, पा पत्र, नृपति,
यह सधि पत्र को बात नही।
सत्कार अतिथि का करना है,
यह मैत्रैयी मे घात नही॥

यह शत्रु आपका सही खरा,
इस समय किंतु शरणागत है।
शरणागत रक्षा धर्म परम,
यह नही विलायत, भारत है॥

दीग का किला
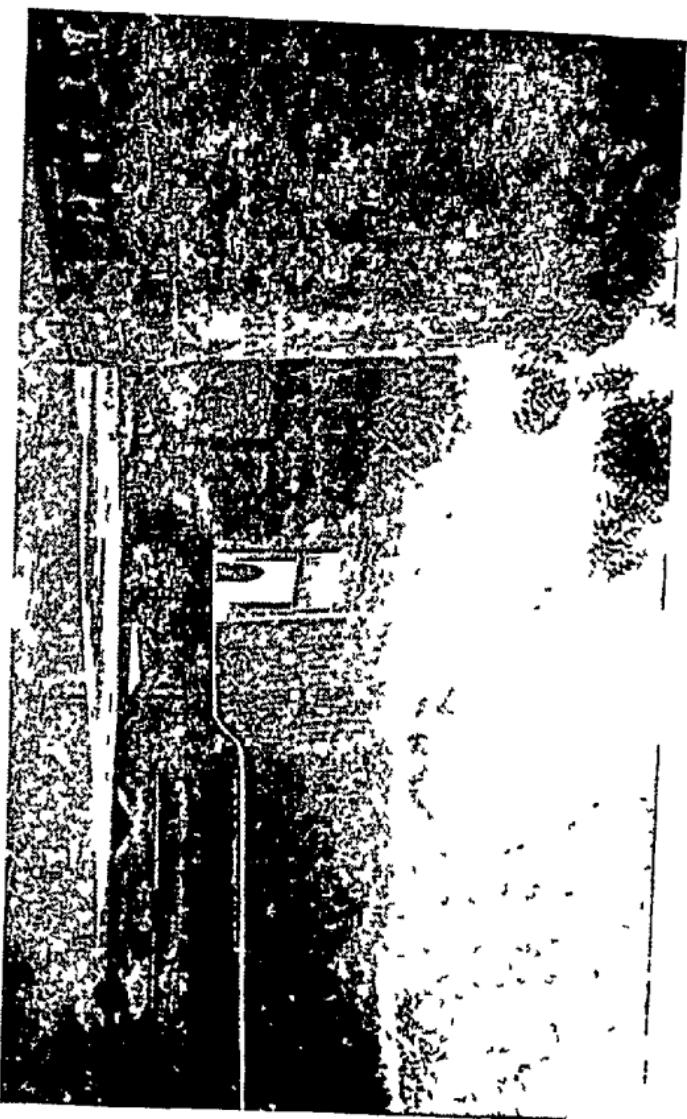
पृष्ठ संख्या १७२

जब चला यहाँ से जाए वह,
तब जी चाहे सो कर लेना।
लड़ अकड पकड गढ बाहर से,
लेना, चाहे जाने देना ॥

पत्रोत्तर नृप ने भेज दिया,
अंगरेज फौज के जनरल को।
होगा अवश्य ही युद्ध समझ,
लग गए सम्हलन सबल को ॥

तब लेकर लेक पत्र कर मे,
निज सेना को करता तयार।
वीरो मे लड़ने मरने का,
भर जोश वचन ऐसे उचार ॥

कमजोर देखकर मुगल नृपति,
दिल्ली की करके लूट पाट।
उद्दड घमडी हुए वहुत,
ये भरतपूर के भूप जाट ॥

ये ऐंठ अकड़ बेबात रहे,
शरणागत रक्षा धर्म आड़।
गर्वित उन्मत्त गँवारों का,
झकझोर झपट दो गर्व झाड़॥

वह नष्ट भ्रष्ट कर लूट राज,
जाटों को दो जड़ से उखाड़।
गर्वीले गढ़ पर चढ़ करके,
अँगरेजी झंडा देउ गाड़॥

वहु द्रव्य लूटकर दिल्ली का,
भर गया भरतपुर गढ़ विशाल।
अब घर घर नगर दुकान सभी,
हो रही माल धन से निहाल॥

कर विजय जाट गढ़ लूटो सब,
ले जाओ लद लद अपने घर।
देगी इनाम कम्पनी बहुत।
होगी पद वृद्धि और ऊपर॥

बातों मे भुला रहा नृप को ,
था तुला हुआ तलवारो पर ।
आक्रमण अचानक किया लेक ,
दुर दुर्ग दीग दीवारों पर ।

दिखलाते अँगरेजो का बल ,
तोपो से गोला उछल उछल ।
परकोटे पर पड उठी धून ,
ज्यों लावा उड़ता उबल उबल ॥

जाटो का बल या हुलकर दल ,
समर स्थल निकला सँभल सँभल ।
कर हल्ला विकट युद्ध हलचल ,
अँगरेज अनी हो उठी विकल ॥

मिल जाट मरहटे छटे छटे ,
रण अँगरेजो से रोप डटे ।
बोटी बोटी कर अग कटे ,
पग पीछे को पग नही हटे ॥

मर मिटे मरहटे हटे नहीं,
जुट गये जोर से गोरों से।
गोलों की धमक गजब की थी,
गिर गए उलट कर बोरों से ॥

आधुनिक यन्त्र अँगरेजों के,
चल करते थे संहार विकट।
कम होता जाता था प्रतिदिन,
हुलकर का विपुल कटक कटकट ॥

तव दीग दुर्ग के रक्षण को,
रहते थे गढ सैनिक थोड़े।
वन बड़े कड़े अड़ लड़े खूब,
छोड़े नहिं शस्त्र प्रान छोड़े ॥

हा ! नई कुमक मिल सकी नहीं,
होगया निबल यो हुलकर दल।
पा ताजी फौजें नई नई,
अँगरेज अनी होगई प्रबल ॥

PLAN
OF THE
MEMORABLE SIEGE
OF
BHURTPORE
1805
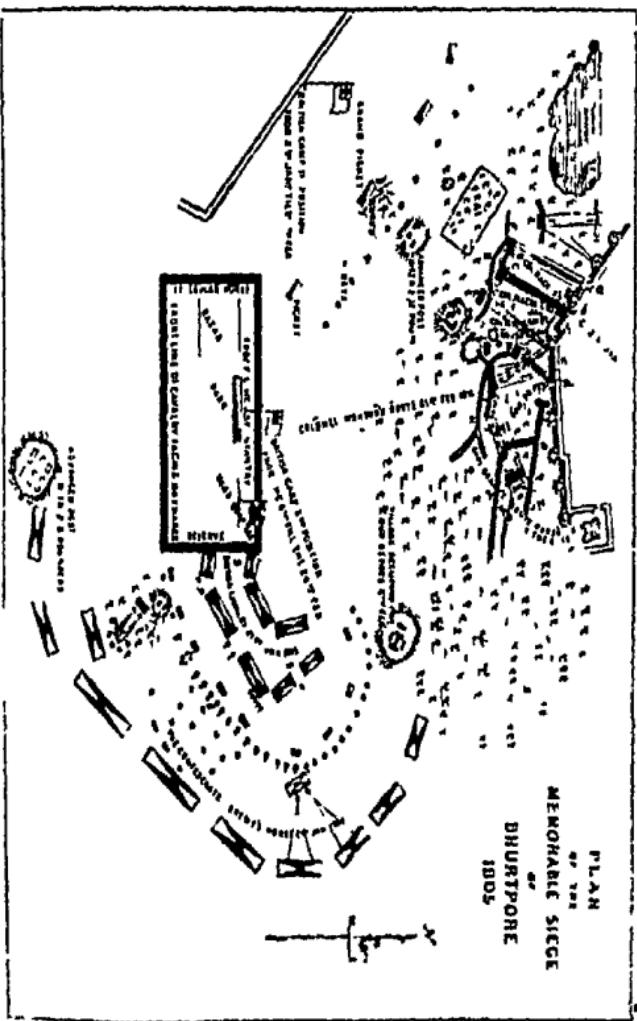
भरतपुर किले पर अँगरेजों की मोर्चा बन्दी

पृष्ठ संख्या १७९

डीग के किले पर अंगरेजों की मोर्चा बन्दी   पृष्ठ संख्या १९
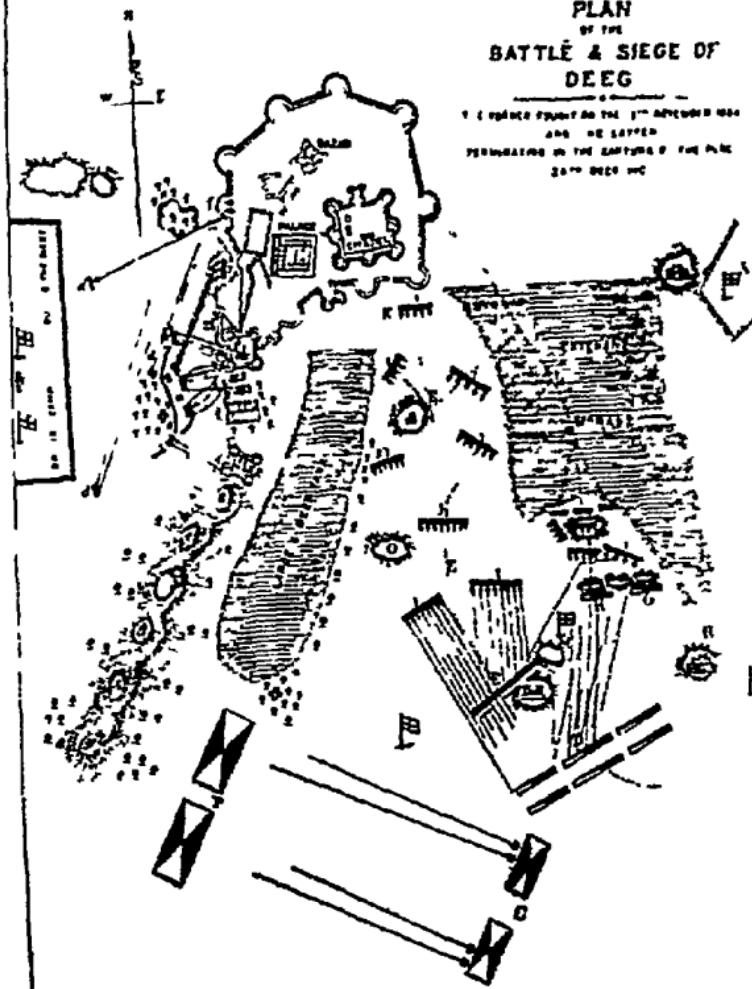
भरतपुर पर आक्रमण

जाटो ने जाने दिया नही,
जब तक धड़ ऊपर रहा माथ।
पर आखिर हुलकर चला गया,
अपने दल बल को लिए साथ ॥

लेकर दल जनरल लेक चला,
जब दीग दुर्ग कर लिया विजय।
तब निकट भरतपुर जमा लिया,
निज सुदृढ मोरचा बल सञ्चय ॥

खिलखिला खिल रहे जौं गेहूँ,
खेतों की क्यारी क्यारी में ।
स्वर्णिम सरसों थी फूल रही,
धरती की सुन्दर थारी में ॥

अलसाती अलसी अलबेली,
मृदु मटर मटक मुसकाती थी ।
रँगीन बिछावन बिछी हुई,
ब्रज की भू पर दिखलाती थी ॥

फूलों पत्तों के आँचल में,
शबनम के मोती बिखर रहे ।
हिमकर कर पवन झकोरों से,
हिय में हँस हँस कर निखर रहे ॥

हड्डियाँ हिला देने वाली,
थी मचल रही सन सन बयार ।
चिल्ला चिल्ला चिल्ला कहता,
जाटों से रहना होशियार ॥

चल कुचल कुचल इस अंचल को,
वह जनरल लेक सदल आया।
जी भर करने को समर कहर,
वह जहर भरा बादल आया॥

ऊषा का बिखर न पाया था,
प्राची के आँगन मे गुलाल।
भुक भुका अँधेरा छाया था,
नभ हो न सका था लाल लाल॥

नव वर्ष प्रथम दिन अँगरेजी,
मन दीग विजय की नव उमग।
हित छांट छावनी छा करके,
छुप जमा लिए थे जग दृग॥

दिन आज नया अभियान नया,
मन गोरो के अभिमान नया।
जय अजय भरतपुर करने का,
भर रहा तात्र अरमान नया।

एक्सो उन्चासी

अँगरेज सैन्य संख्या विशाल,
गोरे गुरुण्ड मुख लाल लाल।
दल तीन भाग में बाँट दिया,
अध्यक्ष बनाये भट कराल ।।

सब सेना नायक छटे छटे,
बहु रण विजयी अनुभवी वीर।
छल बल कौशल में कुशल अधिक,
अति विकट सुभट औ समर धीर।।

आक्रमण किया रण प्रबल वेग,
विध्वंस भरतपुर का कर प्रण।
पर कण कण रक्षण सावधान,
थे जमे हुए जाटों के गण ।।

झोले के झोले भर गोले,
तोपों ने अपने मुँह खोले।
बरसे ऐसे जैसे ओले,
शिर शेष नाग डगमग डोले ।।

घन धुआँधार अँधियारों में,
प्रगटी ज्वाला तन लाल लाल।
तब नगर भरतपुर पर लपकी,
ज्यों महाकाल रसना कराल।,

जनपद का जन जन जाग गया,
तन तन प्रमाद को त्याग चुका।
यह अवसर नही चूकने का,
ऋण मातृ भूमि का आज चुका ॥

प्रत्येक नागरिक सैनिक था,
था शिविर बन गया सकल नगर।
निज काया कवच सुरक्षित कर,
कस कमर समर मे पड़े उतर ॥

था जाट जवानों का निश्चय,
दिखला दो अपना जोश जबर।
कर गर्द मर्द दो गोरो को,
खुँद खाई मे खुद जाय कबर ॥

रण भेरी भैरव बजी घोर,
मारू बाजे बज उठे जबर।
जय जोश भरा रन घोष भरा,
धौंसा विहँसा कर घमर घमर ॥

सैनिक गण कण्ठों से निकलीं,
देवाधिदेव गिरिश्वर की जय।
रणजीत सिंह नृपवर की जय,
रणधीर राजकुँवर की जय ॥

अति पावन इस व्रज भू की जय,
लोहा गढ दुर्ग भरतपुर जय।
व्रज सूरज सूरजमल की जय,
नर नाहर वीर जवाहर जय ॥

जय भारत भाग्य विधाता जय,
जय जय भारत माता की जय।
जय जन्म भूमि रज कण की,
गोरे मद मर्दन प्रण की जय ॥

एकत्री त्रिपाठी

परकोटा पर सब बुरजों पर,
प्रत्येक नगर दरवाजे पर।
तोपे धर जम, जी जान लगा,
हथियार प्रखर कर मे लेकर ॥

रण स्वागत दुर्ग भरतपुर ने,
कर दिया शुरू निज विधि प्रकार।
गजबीले गोले लड्डू भर,
अँगरेज अनी के धर अगार ॥

अरि मद भंजन सेना गजन,
तोपे बाँकी बाँकी विशाल।
कर महा भयकर प्रलयकर,
गर्जन मुख खोले लाल लाल ॥

गढ अजित भरतपुर से छूटीं,
चढ चढ कर तोपों की बाढ़े।
गोरो के मन में भय भरती,
जैसे निकली जम की डाढ़ें ॥

था पौष मास झरता तुषार,
सरदी ने अब भरदी हरदी।
कर धुआँधार घन अन्धकार,
चल गोलों ने गरमी भरदी ॥

चिनगारी उठती चमक चमक,
घन अन्धकार को चीर चीर।
धरती में नभ मे उड़ जाते,
हो छार छार सैनिक शरीर ॥

अँगरेजी तोपों से निकली,
गजबीली गोला बौछारें।
पड उड़ जाती ले गर्द साथ,
डगमग हिलती गड दीवारें ॥

उछरी भट्टी भट्टी सी बन.
दीवार द्वार कर आर पार।
अड़ वक्ष जमा कर जाट वीर,
झट रात रात भर दी दरार ॥

जोशीले जाट जवानों का,
था बड़ा कड़ा तन हाड़ हाड ।
दीवार-दरारों द्वारों पर,
जड छातिन के दृढ तम किवाड ॥

असफल प्रयत्न अँगरेजो के,
घुसने को ना कर पाये पथ ।
जाटों के शस्त्राघातों से,
लोथे बिछती लोहू लथपथ ॥

कर जोर चढे पर बढ़ न सके,
अड़ खड़े बड़े अडियल पहाड ।
जहरीले जाट जवानों ने,
झट पकड़ दिए फड पर पछाड़ ॥

था जमा हुआ दरवाजों पर,
जोशीले जाटो का जुगाड़ ।
रन भून चबेना से डाले,
तोपों का मुँह था बना भाड ।

गढ फतह बुर्ज से गरज गरज,
गोला उछले अतिशय कराल।
अँगरेज बनी अनमनी बनी,
जिमि छिनी मनी का फनी व्याल।

सेना नायक सब सावधान,
परकोटे तट रण संचालक।
रण सफल नही होते गोरे,
प्रतिक्रिया भरतपुर थी व्यापक॥

कर जोड़ तोड़ सिर तोड़ भिड़े,
सरदार फोड़ने को गढ़ के।
धन धरती के बहु लाभ लोभ,
बेकार गए सब बढ चढ के॥

इस असफलता से लार्ड लेक,
हो गया विकल अपने मन में॥
आक्रमण दूसरा किया त्वरित,
उत्साह ओज भर कर तन मे॥

सेना नायक रणधीर धीर,
ले सुभट शूरमा जाट वीर।
बढ कर बल कर दल चीर चीर,
अँगरेज अनी करने अधीर ॥

रण मे उतरे तन ओज भरे,
वीरो के मन उत्साह भरे।
तलवार नचाते थे नभ में,
रिपु संहारन की चाह भरे ॥

दुश्मन दिल के हित आह भरे,
घायल की कसक कराह भरे।
दहलाता दारण दाह भरे,
यमपुर की सीधी राह धरे ॥

ले वीर वाहिंनी जाट अनी,
गढ से निकला रणधीर वीर।
समरस्थल बांके साखे को,
लेकर लेक रदन भंज पीर ॥

बढ चले वीर जयकारो में,
था जोश उमगता नारो मे।
प्रलयकर तेज प्रहारों मे,
उन जहर बुझी तलवारो मे।

पा रणबाजो की चाल चपल,
उत्ताल चाल से टूट पड़े।
वैरी दल दलने को अधीर,
मनु विशिख व्योम से फूट पड़े॥

रणधीर सिह रण रुद्र रूप,
क्या महाकाल मतवाला था।
प्रति पल रिपुदल जल जल जाता,
प्रज्वलित प्रलयंकर ज्वाला था॥

लहराता लहर लहर योद्धा,
विषधर भुजग ज्यो काला था।
हो जाते हलचल हीन शत्रु,
घनघोर हलाहल हाला था॥

फतहबुर्ज भरतपुर

पृष्ठ संख्या १८०
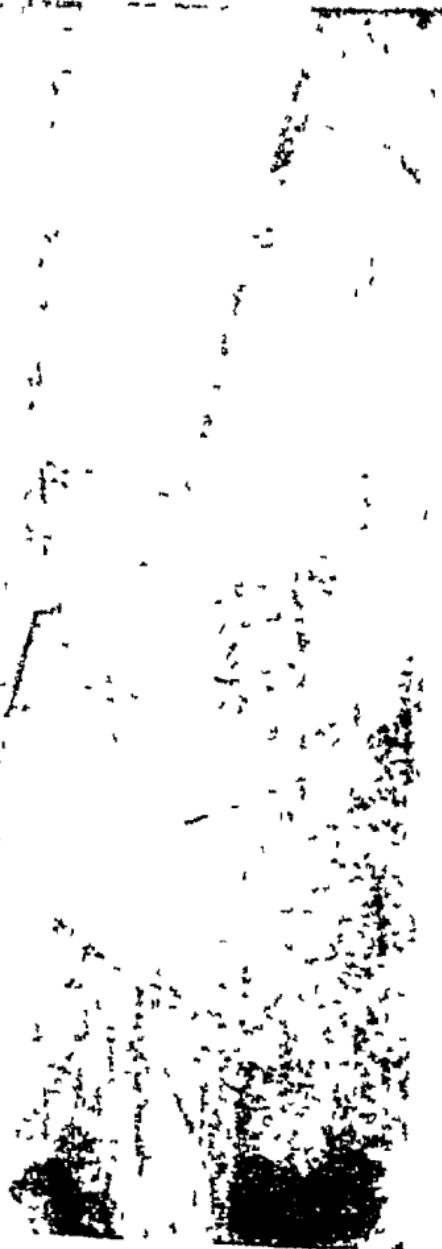
जाटों का व्यूह विशाल उठा,
प्रलयकर काल कराल उठा।
करवाल ज्वाल विकराल उठा,
तूफ़ान उठा भूचाल उठा ॥

अडवंग फिरंगी जुरे जंग,
जगी जाटो के जबर ज्वान।
रण रग देख कर दग हुए,
इस तरह चली नगी कृपान ॥

घात वचा आघात गजव,
रण वज्रपात सा पडा टूट।
अँगरेज मोरचा जमा कडा,
मृत्तिका पात्र सा गया फूट ॥

भालो को भाले रक्त रँगी,
चुभ उडा रही लोहू फुहार।
फट आँते निकल पड़ी बाहर,
घोड़े से गिर पड़ता सवार।

दब जाता समर लेक का दल,
हो जाते थे जब जाट प्रबल ।
तब विजय इधर को दीख पड़ी,
फहराती अपना रक्तांचल ।।

कर जोड़ बढ़ी अँगरेज अनी,
दब गया जाट दल अजय अभय ।
तब विजय उधर को दीख पड़ी,
है कहाँ पराजय ? कहाँ विजय ?

रण विजय वरण किसको करती,
है कठिन कथन करना निश्चय ।
है विस्मय युत संघर्ष घोर,
अब इधर विजय अब उधर विजय ।।

जाटों का जबर पड़ा धक्का,
अँगरेज अनी हक्का बक्का ।
फौजी जनरल मर गए बहुत,
रह गया लेक रण भौचक्का ।।

जो दिक्कट लड़ाके बाँके भट,
अँगरेज अनी के खास खास।
खा चोट हो गए लोट पोट,
आ सके कोट के नही पास ॥

ताजो ताजो तन मे तेजो,
बाजो बाजो पलटन के भट।
बाजे बजते बाजो पर चढ,
प्रानो की बाजी लगा झपट ॥

जीते जो जगी जग बहुत,
भारत को कर डाला गारत।
फिर गये फिरगी भय खाकर,
जाटो मे हो आहत आरत ॥

अब विजय दूर बढती जाती,
आ रही पराजय बढी निकट।
होता जाता सेना का क्षय,
सामंतो को यह घडी विकट ॥

तब लार्ड लेक यह दशा देख,
तन मन व्याकुल हो काँप उठा ।
बरबस दृढता युत धैर्य धार,
जाटो का साहस माप उठा ॥

अपना रण छल कौशल जन बल,
अब व्यर्थ हो रहा, शत्रु प्रबल ।
आवश्यक विजय प्राप्ति को है,
अधिकाधिक शिक्षित दीक्षित दल ॥

पजाब बंग गुजरात आदि,
को भेज भेज कर दूत खास ।
बुलवाई सेना विपुल विपुल,
जो करे भरतपुर का विनास ॥

असफलता अपनी देख देख,
था सोच मग्न गोरा जनरल ।
जाटों के ठाटो पर विस्मित,
चल पाता नही किन्तु छल बल ॥

भरतपुर प्राचीर का उत्तर पूर्वी भाग

पृष्ठ संख्या १६२
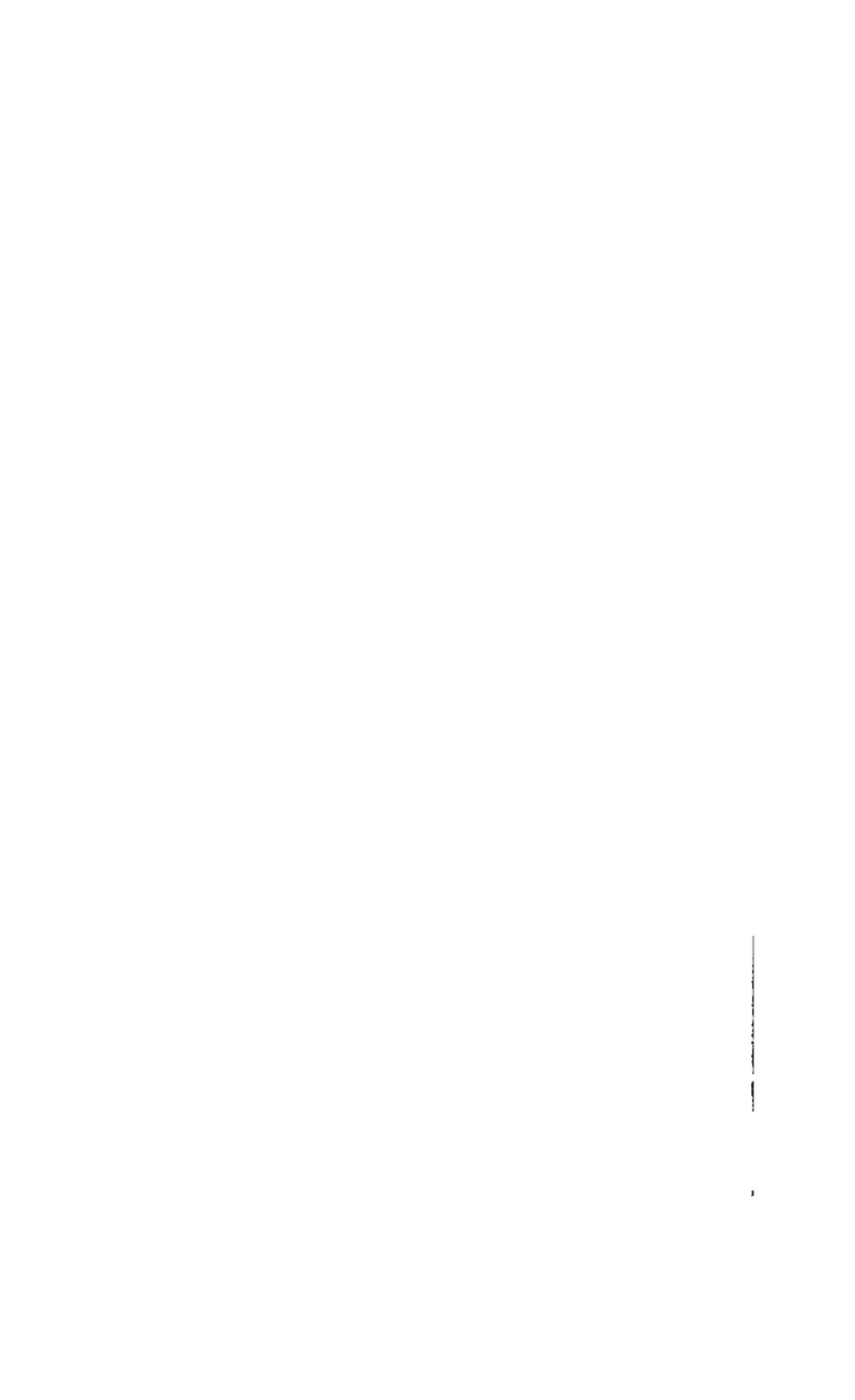
पादरी प्रार्थना करा चुका,
जब बीत गया आदित्य वार।
फिर नई फौज लेकर ताजो,
कर दिया जोर से दृढ प्रहार॥

झुँझला कर क्रोधित लार्ड लेक,
खुद कमर कसी समरस्थल को।
कर रात रात मोर्चा तयार,
हथियार बांध तोला बल को॥

कप्तान लिंडसे नायक कर,
धावा कर दिया दूसरा झट।
वहु समर जयी सेना नायक,
सबका लोहागढ पर जमघट॥

हौसले बढा बढ गया कटक,
दृढ सुभट जाट अड़ गया झटक।
जो बढा लड़ा वह उड़ा दिया,
गोरो का दल बल गया अटक॥

बढ़ सटा सटा भट डटा दिये.
खाई पर सेतु संगीनें का।
जाटों ने जब हथियार चला,
संहार कर दिया वीरों का ।।

परवाह न की अंगरेज़ों ने,
कितना कटकट कर कटक मरा।
दे जगह एक की पर अनेक,
क्रम भंग न होने दिया ज़रा ।।

अति कुशल नए सेनापति थे,
सँग सैनिक सज्जा नई नई।
करते धावा जाटों पर वह,
छल कौशल की विधि नई नई ।।

अँगरेजों ने दी कुर्बानी,
रण फौज झोंक दी मनमानी।
खाई को करके हवन कुण्ड,
आहुति नर मुण्डों की ठानी ।।

अति प्रबल युद्ध अँगरेजो का,
बढ रहा भरतपुर पर दबाव।
पर हिम्मत करके जाट वीर,
देते रहते अडकर जवाब॥

फलता पुरुषार्थ नही देखा,
बस असफलता ही रही हाथ।
था चिन्तित लेक, बहुत योद्धा,
स्वर्ग गए रण छोड़ साथ।

नाके बन्दी कर चहुँ दिशि से,
गढ पर छाया दल बादल की।
अति सुदृढ मोर्चा जमा दिया,
दी अडा शक्ति सब नव दल की॥

सेनाये अगणित कर इकत्र,
रण बका वीर लड़ाको की।
झट झड़ी लगा दी गढ ऊपर,
गोलों की धूम धड़ाको की।

हो चले युद्ध को चार मास,
पा सके न बाहर मे भोजन।
निज पेट नही भर पाते थे,
भूखे करते रण आयोजन॥

छा गया राज्य मे गोरा दल,
चप्पे चप्पे पर किया दखल।
रह गया भरतपुर नगर मात्र,
अब जाट नृपत को राज्य विरल॥

नागरिक भरतपुर का वयस्क,
प्रत्येक समर रत सैनिक था।
गोरे गुण्डो के झुण्डो मे,
अड युद्ध कार्य क्रम दैनिक था॥

गोरो के तोप प्रहारो से,
गोलो की घन बौछारो से।
मिट्टी के उडते भारो से,
टूटी फूटी दीवारो से॥

भिड़ जाते थे भट झटपट कुछ,
कर देते थे निर्माण नया।
उनकी त्वरिता क्षमता गति लखि,
विस्मय विमुग्ध हो लेक गया॥

नारी नर औ बालक समर्थ,
सब ही देते थे योगदान।
इन नौनिहाल लालों के बल,
बन रहा भरतपुर भाग्यवान॥

कट कट कम होता नित्य कटक,
भूखे भ्रमते अधिकांश भटक।
दुर्दशा भयावह देख देख,
अब रहे कण्ठ मे प्राण अटक॥

भूपति हो रहे विचार मग्न,
सामंत समर सज्जा में रत।
थी प्रजा प्राणपण से तत्क्षण,
गढ रक्षण प्रण कर रण उद्यत॥

भीषण होता महान समर,
होता जाता गढ़ का बल क्षय ।
गोला गोली बारूद नाज,
आदिक बीते हो करके व्यय ॥

था सर्वनाश प्रस्तुत सन्मुख,
अब मान जाय या जाँय प्रान ।
मंत्रणा भवन भूपति बैठे,
सुन रहे परिस्थिति का बखान ॥

सुनकर सबकी फिर महाराज,
प्रोहित जी से निज व्यथा कही ।
क्या करें ! बताओ देख रहे,
अब सन्मुख स्थिति विकट रही ॥

प्रोहित जी ! आप जानते हैं,
अपने कुल की कुल रीति नीति ।
बस केवल इष्टदेव के बल,
है नष्ट हमारी सभी भीति ॥

ब्रज रखवारे गिरिराज देव,
जाटो के वही उपास्य देव।
बस तीर्थ हमारा पावन प्रिय,
गोवर्धन ही है एकमेव ॥

जब जब हम पर संकट समूह,
अति घोर घेर घिर आये है।
तब तब जाकर परिकम्मा दे,
आदर से दूध चढाये है ॥

पूजा कर भक्ति भावना से,
तब मन वांच्छित फल पाये है।
तुम शरण गही जब जब जाकर,
तब तब सब विघ्न नशाये है ॥

हो गये पराजित बैरी दल,
प्रभु विजय माल पहिराई है।
अब , घेरा गोरे गुण्डो ने,
सर्वाधिक विपदा आई है ॥

गढ़ से बाहर जा सकूँ न मैं,
पग पग पर रिपु का पहरा है।
बिन शरण गये उद्धार कहाँ,
यह सोच चित्त में गहरा है॥

बोले प्रोहित जी हे राजन!
किंचित भी आप निराश न हों।
क्या ऐसा भी हो सकता है,
रवि शशि के कभी प्रकाश न हो॥

सर्वत्र व्याप्त गिरिराज देव,
वे तो प्रतिमा गिरधर की है।
भक्ति भाव से करें विनय,
, गिरधर तो नृपत! इधर भी है॥

प्रोहित जी से पा परामर्श,
पूजा-गृह में जा महाराज।
नत मस्तक करने लगे विनय,
प्रभु! सुनो देव गिरिराज आज॥

असहाय हुए निरुपाय हुए,
जा रहा हाय ! सब नाम धाम ।
कर रहे प्रार्थना साश्रु नयन,
शिर टेंक भूमि पर कर प्रणाम ।।

हे अशरण शरण तरण तारण,
करुणा वरुणालय अरुण चरण ।
फलदायक नायक, निखिल लोक,
देवाधिदेव गिरिराज धरण ।

मंजुल मंगल मय सृष्टि सकल,
किस कौशल से रचते प्रतिपल ।
जगमगे रत्न तृण तरु वेली,
चंचल जल थल वन वीथि अचल ।।

वैचित्र्य भरे सब पृथक पृथक,
जो जीव जंतु जल-थल-नभ चर ।
रस गन्ध रूप में भिन्न भिन्न,
उद्भिज्ज वनस्पति वीरुध वर ।।

खर व्याल जाल अति विपति काल,
करवाल कुलिश उत्ताल चाल ।
गिरि गह्वर शिखर निविड भूतल,
जगल मय कण्टक डाल डाल ॥

जल थल नभ दुर्घटना खलबल,
दलदल दुस्तर हलचल विहीन ।
आमर्ष भरे दुर्द्धर्ष घोर,
हिसक पशु खग जल जन्तु पीन ॥

तूफान बाढ सागर अपार,
भय भरी प्रज्वलित तीव्र ज्वाल ।
अति प्रबल गरल या रोग पाश,
दश दिशि घेरे रिपु दल विशाल ॥

बरसे उल्का दामिन प्रहार,
घन उपल वृष्टि या अशुघात ।
लावा उडती ज्वाला गिरि से,
भू डोल कर रहा भूमि सात ॥

हित चिन्तक रक्षक रहित हाय,
भ्राता सुत पितु तिय मित्र हीन ।
आश्रय तेरा ही एक मात्र,
मैं हूँ अशक्त असहाय दीन ।।

रक्षक मेरे ही आप स्वयं,
ऐसे भीषण कठिनस्थल मे ।
कर सके नही कोई सहाय,
प्रभु ! सिवा आपके भूतल में ।।

उद्भ्रान्त चित्त अति दोष युक्त,
मन मलिन महा पूरित विकार ।
फिर भी मेरा आधार तुही,
मै सब प्रकार हूँ निराधार ।।

हम अड़े लड़े तेरे ही बल,
शरणागत रक्षण धर्मपाल ।
आ बचा दुष्ट गोरे दल से,
गोवर्द्धन धर गोपाल लाल ।।

जब ग्रसा ग्राह ने गज को था,
बस शुण्ड शेष बल गया हार।
तब चला चक्र शिर नक्र काट,
तत्काल सुनी आरत पुकार॥

गज की सी दशा हमारी है,
गोरे ग्राहो ने ग्रसा आय।
हम हर प्रकार निरुपाय हाय,
असहाय हुए प्रभु कर सहाय॥

बलकर लड़कर थक गए नाथ,
पुरुषार्थ रहा कुछ नही शेष।
अपने गढ की रखवाली कर,
परतन्त्र हो चला अब स्वदेश॥

जाटो का तुही उपास्य देव,
ब्रज भू का तू ही रखवाला।
तू ही न सुने यदि विनय नाथ,
तो जलै पराजय की ज्वाला॥

थे नयन मूँद निश्चल नरेश,
गद्गद् मन से कर रहे ध्यान।
झट तेज पुञ्ज चमका प्रकाश,
सन्मुख थे प्रभुवर भासमान॥

दर्शन प्रसन्न मुद्रा का कर,
पा गए सहज नृप आश्वासन।
एकत्रित कर सैनिक गन से,
कहते आशा से भरे वचन॥

यह सकट विकट नवीन नही,
ऐसे अवसर आते रहते।
तब जाट जाति के जन जन तो,
साहस करके सब कुछ सहते॥

आक्रामक क्रूर विदेशी खल,
जब जब चढ भारत पर आये।
तब तब ही जाट सुभट अड़कर,
जम लड़े न बिल्कुल घबराये॥

. इस जाट जाति के सुत सपूत,
वलिदान हो गये रण थल मे।
पर हटे न पीछे अड़े रहे,
हो सिद्ध श्रेष्ठ निज भुज वल मे।।

छिप छिप करते उत्पात घोर,
जव अरब सिंधु मे घुस आये।
तव कमर वांध कर समर भूमि,
मे जाट वीर आगे आये।।

गोरी गजनी के धावो के,
सन्मुख जाटो के झुण्ड लड़े।
मिट सके न कठिन प्रहारो से,
ये सिद्ध हुए थे वड़े कड़े।।

उन क्रूर विदेशी हमलो से,
और निर्मम अत्याचारो स।
भग गए वहुत से क्षत्रिय गण,
भयभीत हुए भवभारों से।।

यह सजल सफल पृथ्वी छोडी,
उपजाऊ खेतो को छोड़ा।
जा बसे मरुस्थल क्योंकि वहाँ,
एकान्त शान्त जीवन थोड़ा ॥

भूखी प्यासी अवलबहीन भी,
जाट जाति ही जमी रही।
लड़ती लडती कटती मरती,
बस यही जाति कुछ बची रही ॥

झुकना न कभी कट मर जाना,
है जाटो का पक्का स्वभाव।
अनुकूल परिस्थिति कर लेना,
सहना न दुश्मनो का दबाव ॥

चाहे हो अपनो से विरोध,
हो भरा हुआ कटु कठिन क्रोध।
पर अन्य शत्रु के सन्मुख तो,
सब एक त्याग प्रतिशोध बोध ॥

इस गुण के कारण दिल्ली के,
है चारो ओर निवास जाट।
हैं इनके बाँके युद्ध ठाट,
बस इसीलिए है राजपाट ॥

हे वीरो ! तुम भी वही जाट,
तुमने भी जा दिल्ली घेरी।
रण विजय प्राप्त करके विशेष,
रिपु मुगल शवो की कर ढेरी ॥

मुगल सैन्य का तुमने भी तो,
रण बहुत वार मदहरण किया।
दिल्ली जय का प्रिय सुयश श्रेष्ठ,
तुमने ही केवल वरण किया ॥

गोरो की सेना उखड़ चली,
अड़ जमे रहो साहस कर सब।
रखवारी पीताम्बर धारी,
है निश्चय विजय पास ही अब ॥

जब राजपूत मजबूतों का,
चल सका न उनके ऊपर बस।
मुगलो का दल दल मल बल से,
कर डाला रण मे तहस नहस ॥

यह नही पुरानी बात बहुत,
उन बड़े वीर मरदानो की।
ध्यान करो उन पुरखो का,
तेजी उनकी किरपानो की ॥

यश श्री मिलने बाजी ही है,
बलिदान कर चुके बहुत वीर।
बैरी भगने वाला ही है,
बस जमे रहो मत हो अधीर ॥

कर चुके भरतपुर के भूपति,
यह भाव भरा लघु अभिभाषण।
फिर प्रोहित जी ने किया कथन,
जिससे भट जाट जीत ले रण ॥

भारत के शूर साहसी भट,
हो एक मात्र तुम जाट वीर।
मुख ओर निरखती है माता,
हर लो सपूत अब मातु पीर ॥

हे जाट वीर रणधीर श्रेष्ठ,
हे तेज पुञ्ज ! हे तपोपूत !
साहसी शूरमा शस्त्र धनी,
हे भारत माता के सपूत !

तुम जीते मुगल पठानो से,
अब अँगरेजो को कर लो जय।
तुम आशावान रहो वीरो,
निश्चय ही तुमको मिले विजय ॥

तुम मृत्युञ्जय विकराल बनो,
तुम प्रलयंकर भूचाल बनो।
तुम रिपु डसने को व्याल बनो,
तुम अँगरेजो के काल बनो ॥

तुम उठो उठ पड़े यम के गण,
तुम बढो बढ चले मृत्यु चरण।
तुम चढो डगमगा उठे धरण,
तुम लडो पटं गोरो से रण ।।

रिपु तन पर जब तलवार चले,
तब प्रलयकर झकार उठे।
कट कट घट जाये विकट कटक,
रण चण्डी की हुँकार उठे ।।

तुम आज बांध लो सुदृढ कमर,
ताण्डव हो डमरू बजे डमर।
जम करो भयकर घोर समर,
आ लगे देखने जिसे अमर ।।

बैरी कठो को काट काट,
अपनी पैनी करवालो से।
रण थल भू तल दो पाट पाट,
खप्पर के लिए कपालो से ।।

सुन जाट जवानों के तन में.
अलमस्त जवानी भभक उठी।
मदमाते मल्लों के मन मे,
अब स्वयं भवानी चमक उठी।

उन भूखे रुखे सूखे से,
हो रहे क्षीण ककालो मे।
लहराया जीवन का जौहर,
खिल गई गुलाबी गालों मे॥

वीरो की नस नस रग रग मे,
यह जोश भरा तूफान उठा।
बलिदान जन्म भू पर होना,
अब जाग आत्म अभिमान उठा॥

कूदा कृतान्त सा क्रुद्ध युद्ध,
मे वेग भरा भट सेनानी।
कर कतर कतर वैरी कतार,
बढ़ रहा वेग से तूफानी॥

दोनों बारह

थी प्रखर चपल तलवार धार,
गोले भी चलते धुआंधार।
कट कर गिरते थे रुण्ड मुण्ड,
हो जाते थे तन छार छार॥

शस्त्राघातों से रक्त बहा,
रिपु दल में हाहाकार मचा।
जा अड़ा लाज सिर उठा तुरत
सम्मुख आ जीता नहीं बचा॥

जब मरण वरण की रण बेला,
तलवार धार नट ने खेला।
रण राग देश का खूब करते,
मस्ताना झूम निखर खेला॥

करवाल रुधिर प्यासी कराल,
भर झुण्ड झुण्ड रिपु मुण्ड घाल।
गोरों की गोरी मुण्ड माल,
भल पहिन हँस उठे महाकाल॥

जाँबाज जाट दल के जवान,
रण मे बाजों से टूट पडे।
गोरे गुण्डो के मुण्ड उड़े,
जिमि लवा झुण्ड से फूट पड़े॥

तलवार तेज कर रक्तस्राव,
भर रही युद्ध भू में तलाव।
गोलो से होता अग्निकाड,
भट्ठो मे लग जाते अलाव॥

हर जाट बन गया महाकाल,
करने गोरो की मुण्ड माल।
सौ सौ मुण्डों को काट काट,
रण चला खड्ग उत्ताल चाल॥

नित नव भरता था लार्ड लेक,
गोरो के मन में जय उमग।
जम जग जुङ्गमय जाटों का,
कर देता था उत्साह भंग॥

होने को रण मे जाट अजय,
गिरिराज देव की बोले जय।
सशय न तनक थे पूर्ण अभय,
निश्चय जाटों की होय विजय॥

तब लार्ड लेक यह दशा देख,
सामंत बुलाये नये नये।
गजबीले गोलंदाज कुशल,
जिनके गोला गढ समा गये॥

गोरा सेना का रण साहस,
बढ गया सफल नायक पाकर।
कर डाला गढ को अस्त व्यस्त,
ओला से गोला बरसा कर॥

गोलदाज भरतपुर के भी,
बड़े निशाने बाज वीर।
सब समझ परिस्थिति सावधान,
अपनी तोपे साधी सुधीर ॥

दुरबीनो से रण क्षेत्र देख,
छोडे गोले बाधे निशान।
अँगरेजों के अफसर अनेक,
उड गये किया यमपुर पयान ॥

जिनको बल कौशल का घमण्ड,
थे वड़े वड़े करनल जनरल।
खा गोले गढ की तोपो के,
तन छार छार हो उड़े विरल ॥

तोपो से गोला चले निकल,
गोरो को काल रूप ही बन।
अंटा गुडगुड आदिक अनेक ॥
उड गए शेष भी रहा न तन।

यह हुई पराजय एक ओर,
हट गया लेक खा चोट नई।
है बड़े निशाने बाज जाट,
यह बात हृदय मे समा गई॥

युक्ति विफल यह देख 'डेन' तब,
साहस कर आगे आया।
कहा लेक से सौप मुझे दो,
भार भाव मन मे भाया॥

तोड़ूगा दुर्ग भरतपुर मै,
है मेरा यह सकल्प सबल।
करदूं जाटो का सर्वनाश,
इनमे कितना कौशल छल बल॥

मोरचा जमाया अनुमति पा,
'माढोनी' के तट निकट सुभट।
रात रात मे गुप्त रूप से,
की विकट खुदाई झपट झपट॥

परकोटा भीत उडाने को,
गढ भीतर मार्ग बनाने को।
खोदी सुरग बारूद भरी,
विधि निश्चित की जय पाने को ।।

पर प्रजा प्राणपण से सचेष्ट,
गढ रक्षण अपना धर्म मान।
सूचना भरतपुर पति को दी,
यह गोरो का रण भेद जान ।।

पा उचित समय यह समाचार,
हो गये जाट भट सावधान।
प्रतिरोध किया ऐसी विधि से,
भरतपुरी सैन्य के नौजवान ।।

उड़ गए सुभट गोरे दल के,
जो दुर्ग उडाने मे तत्पर।
यों आग लगाई जाटो ने,
जो निकली उलटी गढ बाहर ।।

यह हार नई नयनो निहार,
रण गया लेक का हृदय हार।
'मौरीसन' आया भर उमग,
अब मैं पहिनूंगा विजय हार॥

थी साथ सुभट के सैन्य नई,
झट युक्ति बनाई और नई।
धरती मे लोटे सैनिक गण,
बढ सरक सरक दीवार लई॥

छल कुशल प्रबल गोरों का दल,
चढ आया गढ पर धकापेल।
दृढ अड़े खड़े थे जाट वीर,
बल कर पीछे दीना धकेल॥

गोरों का साहस गया टूट,
नस नस मे आलस पडा फूट।
ऐसा विषाद सा उफन पडा,
मानो बरसा हो काल कूट॥

जाटो की जवरी परी मार,
कट हटा लेक दग तव 'पिछार'।
गल रहा ग्लानि स नेक हार,
आ गई कुमक ताजी तयार।'

फिर इससे कुछ उत्साह वढा,
सव जुटे शिविर करने विचार।
अव सुदृढ शक्ति से गढ पर वड,
आक्रमण कीजिये धुआंधार॥

भर दिया जोश रण ज्वानो मे,
दे प्रवल प्रलोभन सव प्रकार।
आज अचानक रात वीच,
चढ करो वेग से वढ प्रहार॥

छाये थे नभ काले वादल,
थी निविड अँधेरी रात प्रवल।
सो गए थकित हो दोनो दल,
रक्षक परकोटे रहे विरल॥

भरतपुर के दुर्ग की प्राचीर जिरुमे ोकर आक्रमण हुआ — पृष्ठ सख्या ७७०

चुपके चुपके छिपते छिपते,
चढ आए खल दीवारो पर।
आहट पा बढकर जाटो ने,
ले लिया लपक तलवारो पर॥

कटते ही अँगरेजी सैनिक,
चढ कर आ जाते और नए।
हो पाते थे कम नही तनिक,
मनु रक्तबीज हो नए नए॥

झपट जाट भिड गए तुरत,
धधकी रण ज्वाला सुलग सुलग।
खटका खजर घमसान हुआ,
सिर हाथ पैर कट गिरे अलग॥

था क्षीण प्रकाश मशालो का,
हर पाता था नहि अन्धकार।
आ गई किधर से पता नही,
कर कण्ठ पार तलवार धार।

चमकी तलवारे उछल उछल,
रुधिर बह उठा उबल उबल।
लड़ते योद्धा रण मचल मचल,
झट काट पैंतरा सँभल सँभल ॥

रण आठ तिलगे नौ गोरे,
जम लड़े जाट के दो छोरे।
दे धक्का नीचे झकझोरे,
खाई के पानी के बोरे ॥

खुद भी तो बढ़ बलिदान हुए,
भर जेट कूद कर खाई में।
तब चार चार गोरे सैनिक,
थे एक एक की घाई में ॥

कर जोड़ तोड़ जी तोड़ लड़े,
पर सके न कुछ इनका बिगाड़।
था बड़ा कड़ा बन अड़ा हुआ,
रण मे जाटो का हाड़ हाड़ ॥

विकट कटी अँगरेज अनी,
थक गई हौसले पस्त हुए।
रण मे भीपण सहार हुआ,
अँगरेज सितारे अस्त हुए।।

हट गई हार अँगरेज अनी,
पर खडे जाट लेकर हथ्यार।
शूरो का शौर्य समाप्त हुआ,
सेनापति हिम्मत गया हार।।

चढ गया गगन मे सूर्य बहुत,
पर हुक्म न सेना हो तयार।
था परेशान बेजान थका,
कर रहा लेक मन मे विचार।।

आ गए अनेको आस पास,
सेना के बड़े बड़े अफसर।
कारे गोरे दोनों रँग के,
रण कुशल साहसी बढ चढ कर।

तब बोला लेक अफ़सरों से,
अवसाद विषाद भरे स्वर में।
मिल पाती नहीं सफलता हा!
इस रण मे जाटो के घर में॥

भारत मे काले गोरों से,
हमने सदैव की विजय वरण।
पाई न पराजय कभी नहीं,
लड चुके अनेको भीषण रण॥

जिन सेनापति सामंतों ने,
भारत मे कीर्ति कमाई थी।
साहस पौरुष रण कौशल की,
यूरुप मे हुई बडाई थी॥

उन सबका संचित धवल सुयश,
हो गया कलंकित मेरे कर।
अँगरेज शौर्य रण साहस की,
बन चली भरतपुर बीच कबर॥

काला कलक का टीका यह,
माथे पर चिपका जाता है।
इस घोर पराजय लज्जा से,
मेरा शिर झुकता जाता है॥

रजपूत राज तो लडे नही,
वन कड़े कही पर अड़े नही।
देकर खिराज कर लई सधि,
तब हम भी उन पर चढ़े नही॥

पर यह छोटा सा जाट राज,
जहरीला बड़े गजब का है।
है कठिन विजय हमको मिलना,
लड़ना इनका इस ढब का है॥

इस जाट, जाति के नौजवान,
करते रहते थे लूटपाट।
पर शका हमे न किचित थी,
है इतने इनके समर ठाट॥

हौसले पस्त हो गये हाय !
सैनिक सब हो गोरे कारे।
अगणित अफसर आ गये काम,
हम इसी मोरचे पर हारे॥

"अब मिलना विजय असम्भव है",
बोले झुककर कारे अफसर।
"ले चक्र सुदर्शन कृष्ण चन्द्र,
मौजूद स्वय गढ़ बुर्जो पर"॥

क्या कहा ? कौनसे कृष्णचन्द्र ?
क्यो हुई असम्भव प्राप्त विजय।
कारे सैनिक गन के मन मे,
भर गया अधिक क्या इससे भय॥

फिर लेक कथन के उत्तर मे,
बोले काले सरदार सुदृढ़।
प्रभु से जीता है कौन कभी,
हो गया अजय अब लोहागढ॥

देखा दुरबीन लगा कर गढ,
पड गया लेक असमजस मे।
मन मान गया पर कह न सका,
है नही विजय अपने बस मे॥

मै नही मानता यह बातें,
सन्देह व्यर्थ मे पडते तुम।
क्या इसी भ्रान्ति के वश मे हो,
जा ढीले ढीले लडते तुम॥

हा ! इधर गवर्नर जनरल के,
आ रहे पत्र पर पत्र कठिन।
"कर सधि किसी भी विधि से लो,
हो रही नित्य ही हानि गहन॥

तब बडे लाट की आज्ञा से,
सब नायक गण का परामर्श।
जनरल लेक पत्र भेजा,
गम्भीर भाव कर मन विमर्श॥

दोनों ही पक्षो ने झेली,
हा हन्त ! हानि रण मे अपार ।
खोये सामन्त शूरमा भट,
सेना नायक भी वेशुमार ॥

हम तो है मित्र हिन्दुओ के,
केवल विरोध दिल्ली दल से ।
जो शत्रु हमारे दोनो के,
दलना है उनको छल बल से ॥

है वीर जाट अँगरेज वीर,
वीरो वीरों का मेल सहज ।
है युगल जातियाँ सच्चरित्र,
इनका लडना है खेल महज ॥

बीती को भूले दोनो ही,
आगे के लिए विचार करे ।
अब धरे परस्पर सुहृद भाव,
मिल रहे प्रेम व्यवहार करे ॥

था मन भावन मधु मास मधुर,
मलियानिल मथर घूम रहा।
बौरो से लदे आम्र तरु को,
कौकिल मस्ताना चूम रहा॥

शामियाना सुन्दर शानदार,
सब विधि था सुन्दर सजा हुआ।
अँगरेजी झण्डे के समीप,
लहराता कपि ध्वज खडा हुआ॥

बज रहा बीन मीठी धुन मे.
जन जन का मन हो रहा मगन।
सामंत सूर सरदार सजे,
बैठे थे छटे सिपाही गन॥

अब युद्ध समीक्षा पर सुनिये,
सब शस्त्र शास्त्र विज्ञो के मत।
इस भारत नगर की रण चर्चा,
पहुँचो इङ्गलैंड छोड भारत॥

ऐंठ अकड़ चढ आए थे,
उन सबका साहस तोड दिया।
जोशीले जाट लडाको ने,
गोरों का गद झकझोड दिया॥

हो गए क्षीण सचित साधन,
उत्साह विजय का अखय रहा।
लड़ मरे कटे भट छटे छटे,
यह युद्ध हुआ या प्रलय रहा॥

यह देश पीतपट वारे का,
ले शरण उसी की अभय रहा।
पच हारे गोरे घुस न सके,
गढ अजय भरतपुर अजय रहा॥

हो गया मान मर्दन रन मे,
रन वका लार्ड लेक का भी।
बढ चढे अनेको सेनानी,
वस चला न किन्तु एक का भी॥

शोफा पर थे रणजीत सिंह,
था पास लेक फौजी जनरल।
दोनो दल के सरदार बहुत,
बैठे थे डट कर अगल बगल॥

सत्कार भरतपुर वालो ने,
दावत देकर के किया प्रगट।
गोरे भी मन में मान गए,
है उदार मन के जाट सुभट॥

दे रहे बधाई आपस में,
गौरव अनुभव कर निज मन में।
सविजय गर्व की हर्ष लहर,
थी हुलस रही जन जन मन मे॥

बलिदान प्रान कर दिये समर,
वे हुए अमर तज तन नश्वर।
माँ बाप धन्य उन वीरो के,
है धन्य धर्म पत्नी सुन्दर॥

उसके कर का वह दिव्य शस्त्र,
चम चम चपला सा चमक रहा।
अति ओज भरा उसका आनन,
दैदीप्यमान था दमक रहा॥

उत्साहित अनुशासित सैनिक,
दूने बल से कर रहे युद्ध।
घबरा कर हिम्मत हार गये,
मेरे सैनिक लखि उसे क्रुद्ध॥

क्या स्वय आपने देखा है?
बोले नृप, साहिब! विस्मय है।
हाँ हाँ देशी सरदारो ने,
फिर मैंने भी क्या सशय है॥

सुन वचन लेक का मौन नृपति,
प्रेमाजलि झलकी दृग अचल।
आभार विनत अनुकम्पा से,
आनदित मन तन था निश्चल॥

व्रज भूप रूप ऐसा अनूप,
चख चकित हो गया देख लेक।
हो चुका समय व्यय यों ही कुछ,
तब जगा नृपति का भी विवेक ॥

अटपटे प्रेम लिपटे प्रगटे,
नृप के मुख से इस तरह वचन।
कितना श्रम किया प्रभो आकर,
अपने ही इस जन के कारन ॥

थे साहिब ! वे व्रजराज स्वयं,
मैं उनका सेवक साधारण।
उनका ही राज्य जाट उनके,
उनके ही बल रोपा था रन ॥

झाँकी की झलक मात्र को ही,
आकुल भक्तों का कुल जीवन।
बस सहज भाव करके विरोध,
है धन्य आप करके दर्शन ॥

गजा बोले उठ कर प्रणाम,
प्रभु धन्य धन्य लोकाभिराम।
आ खड़े त्याग गौ लोक धाम,
करुणा वरुणालय पूर्ण काम ।।

इस घार समर में हुई विजय,
यह कृपा आपकी का परिचय।
फिर इस जय मे कैसा विस्मय,
है नाथ आपकी ही यह जय ।।

तन कटे मर मिटे हटे नही,
रन डटे रहे वीरों की जय।
बलिदान आन को किए प्रान,
उन शूर शहीदों की ही जय ।।

गढ सुदृढ भरतपुर रन बका,
के पावन तम रज कण की जय।
निर्भय विश्वासी गढ वासी,
अविचल निश्चय जन-जन की जय।।

जय जय भारत माता की जय,
जय भारतीय जनता की जय।
जय प्रेम भाव समता की जय,
जय देश भक्त ममता की जय॥

गिरिवर की जय, गिरधर की जय,
उनके सहचर अनुचर की जय।
ब्रज भू के नाहर नर की जय,
रण जाटो के जौहर की जय॥

संशोधन-पत्र

प्राक्कथन

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	कार्य स्थैर्य	कार्यः स्थैर्य
७	कोऽन्यं	कोऽन्यः
२१	पूजाह्यश्लाघ्य स एव	श्लाघ्य स एव
१७	पराज्य	पराजय
१	नसंख्या	संख्या
८	क्रमों	पराक्रमों
3	Jats	Jaats
२०	इसकी	उनकी
7	l rovince	Proper
9	Muhammd	Muhammadan
26	Flotills	Flotilla
10	Depostou	Deposition
7	ocality	Locality
16	Favour	In favour
17	Malwa	The Malwa
21	They	and
23	Inhabitting	Inhabiting
26	Neighbour	Neighbours
27	Leaders	Leader
१	भारतवप	भारतवर्ष

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	१२	सभी	सत्ता
१७	६	मसीरे	मसीरे से नई लाइन में है
१७	२२	वेंडव	वेंडल
17	22	Warnal	Wandal
22	19	ardy	ery
२४	१५	वेश	वंश
२४	१८	हिंदू और जाट	हिंदू जाट
३२	२	अँगेज	अंग्रेज

काव्य

१८	१०	जिवन	जीवन
२५	८	में सर	सर में
२६	४	डबल	चवल
२८	३	रहतो	रहती
४२	३	थार	तैयार
४५	१०	भाले की अनी	गोली की कनी
९७	११	खंदन	खूंदता
१००	१	गालों	गोलों
१०३	७	ट्डक	तड़कें
१०३	८	लहु	लहू
१०५	४	रणस्थल	रणांगल
१०६	१५	भोंट	रोंट
१०८	१९	गिरनी	गिरतीं
१११	६	अंय	अथ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१११	११	वमासान	समाम
११५	५	को	को
११६	७	अँसृवन	अँसुवन
१२५	१	हं	है
१२८	६	एकाको	एकाकी
१३४	११	सरल वे	वे सरल
१५७	१५	चाहे	चाहे
१५७	१६	चाहे	चाहे
१६६	१३	को	की
१७२	१०	को	की
१८८	१	वोर	वीर
१८८	१२	प्रलयंकर	भयकर
१६४	१२	को	की
२०२	१४	जगन	जंगल
२०६	१४	स	से
२०६	६	वाजी	वाली
२१५	१३	गोरा	गोरी
२१७	१	ओर	और
२२२	८	पानो के	प नी में
२२४	७	नहीं	कहीं
२२४	८	जा	जो
२२७	१३	का	का
२२६	१४	करे	करें
२३०	१	सीखे	सीख

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३०	६	वोर	वीर
२३१	६	शामियाना	शामियाना
२३१	१५	भारत	भरत
२३३	४	गद	मद
२३५	११	सविजय	रण विजय
२३५	१५	वोरो	वीरों
२३६	६	धृप	नृप
२३६	५	घार	घोर

—

॥ समाप्त ॥